

[ २ ]

१८—श्रीगंगा दत्त मुन्दावनदास ✓	३८०	३६
१९—श्रीनगवनरसिक <del>✗</del>	३८६	४२
२०—श्रीदूती	४२६	४४
२१—श्रीमहेश्वरिशरण	४४४	४४
२२—श्रीगुणमंजरी दाम ✓	४४६	४६
२३—श्रीभारावण स्वामी	४६८	४८
२४—श्रीललितकिशोरा <del>✗</del>	४८३	४९
२५—श्रीललितमाधुरी	४९२	४९
<del>२६—श्रीहरिचन्द्र</del> ✓	४९६	४९
२७—श्रीसत्यनाथरावण ✓	४९४	५०

# वक्तव्य

- ७६ -

यह युग विज्ञान का है। निम्न नये नये आविष्कार और विज्ञान और अनुसन्धान क्षेत्रों में आते हैं। लोगों का ध्यान लक्षित नहीं है, यहाँ पर लक्षित चला जा रहा है। जहाँ चौधिया नहीं है, मस्तिष्क घूमने लगा है, और हृदय घटने लगा है। प्रत्येक वस्तु का फायदा-पता सा हो गया है। आदर्श बनते जा रहे हैं, पर उनमें कोई पुनर्जापन नहीं आता। मस्तिष्क बराबर मशीन की तरह काम करता जा रहा है, पर उसमें फर्क कोई ठीक ठीक से दिखार-नाम-उत्तर प्रतीत नहीं होता। हृदय की धमनियाँ दीड़नी तो सदा रहती हैं, पर उनमें उस द्रव्य की लहरों का नाद नहीं सुन पड़ता जो मानव जीवन का अन्तिम तद्वय रहा जा सकता है। यह क्यों? इसलिये कि मनुष्य धीरे धीरे, निर्जीव अनुकरण की ओर अग्रसर होता हुआ, अपनी 'आत्मोद्यता' को भूलता जा रहा है। मनुष्य का जन्म आनन्द में हुआ है, उसकी हानि-प्रगति आनन्द में है, और उसका लक्ष्य भी आनन्द में ही है। उसे 'सर्वं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म' का अनुभव—प्रत्यक्ष अनुभूति—करना है। उसे अपने को भुलाना नहीं है, मोजना है। यह जोड़ और जगत् में होनी संभव है, चाहा में नहीं। उसे अपने अनुकूल चलना है, प्रतिकूल नहीं। जिस दिन वह अपनी हस्तियों का 'अन्तर्नाद' सुन लेगा, उस दिन उसे सारे आविष्कार और अनुसन्धान साधारण और तुच्छ प्रतीत होने

जन्मेंगे । उम दिन उमे उम 'साधना' बीज का गता का  
 जायगा, जहाँ से कि साहस्यो आविष्कार और समझार मा  
 प्रगुत होने रहते हैं । उस सासाज बीज को वेदाग्नियों के  
 अनियंत्रणीय कहा है । वेदाग्नियों के दृष्टिकोण में भले ही  
 वह अनियंत्रणीय हो, किन्तु कुछ न्ययव्यापिनी दृष्टि पावे  
 मरुत लोगों की मरुत में यह कहने सुनने की बात है, भेदे दे  
 की बीज है । उम मरुतों से हमारा तात्पर्य कवियों और  
 साहित्य-रसिकों से है । विज्ञान और इतिहास जिन वेदाग्नियों  
 और मरुतों का बड़ी कठिनाई से अनुसंधान करता है,  
 कविग्य और साहित्य, यात्र की यात्र में, उमका निर्माण और  
 ईतर्पाण कर डालता है । विज्ञान का केवल मल्लिक से संबंध  
 है, किन्तु साहित्य का कृपाया मल्लिक और हृदय दोनों से  
 जुड़ा है । विज्ञान रस है, जो साहित्य रस है । विज्ञान का  
 लक्ष्य भौतिक साहित्य को केवल कृती में निधाम होता है  
 वही कुछ मा गुणा नहीं है, सब गया ही गया है । गया या  
 मानी चलन है । इसी ममोमन्दिर में अमल का दृष्टि  
 मिलता है, अमल से मिलन होता है । चय है उम म  
 मागों का जो प्रतिष्ठण साहित्य की साधना लता पर मपु  
 बन कर साधने, मरुतों और मरुतों का साधन करने हैं ।

सादि कवि यत्कीर्ति ने सब से प्रथम करणा के भ  
 लक्ष्य का साधन में होकर सादेवी का गुमान दर्शन कि  
 रूप और सा । महर्षि व्यासदेव ने मरुतों का लक्ष्य  
 साहित्य साधन की धीमा की मरुतों में मरुती  
 सादेव गुना था । वह कामें कुछ गुमानी रही हो गई हैं । अ  
 कल काज परमं मरुत और गुमानी में जो दृष्टि मरुत गुम  
 सा, वह हमारे कल दृष्टों में मरुतों का मरुत मरुत है, उम

स्पष्ट चित्र सहृदयों के हृदय पटल पर आज भी बसा ही  
 कबित है। कुछ लोगों का मन्थन है कि सुर और तुलसी  
 का साहित्यिक चित्र इस धूमिल और फीका पड़ गया है,  
 तब से अद्यतक न जाने किनने परिवर्तन हो गये और होते  
 जा रहे हैं। उनका कहना है कि आज हमें राम और कृष्ण  
 सम्बन्धी कविताओं से कोई स्थायी लाभ नहीं है। हम  
 वैज्ञानिक युग में पैदा हुए हैं, हमें कुछ और ही नवीन आदर्शों  
 की आवश्यकता है। पर क्या ये सज्जन हमें यह धनलायने कि  
 उनका साहित्य-भवन किस नींव पर खड़ा होगा ? क्या वे  
 रसों और भावों का यहिष्कार कर देंगे ? क्या वे हृदयको हटा  
 कर, उनमें न्याय पर नजराने मस्तिष्क को रखना चाहते हैं ?  
 ये जाने, उनका काम जाने। हमें तो उनकी विचार-भृंजला  
 कुछ जैचती नहीं। और फिर करें तो क्या ? मज़बूरी है। हमें  
 वाण और धूम्र के वायु मण्डल में भी आज सज्जन धनशायी  
 की अस्पष्ट मूर्ति दिखाई देती है। संभव है, यह नेत्रों का दोष  
 हो। हमें कर्कश चैंगड बाजे और भक् भक् बोलने वाली विमनी  
 की प्रतिध्वनि में सुदूरवर्ती मोहिनी दंशों की तरल तान आज भी  
 सुनाई देती है। संभव है, यह हमारे कानों की भ्रान्ति हो।  
 हम अब भी भीतर रखाइयों के बीच में मंदमंद मुसकराते  
 देखा करते हैं। कदाचित् यह भी हमारा  
 हो। इस दौड़धूप और जीवन-संग्राम के युग में भी  
 उसी माधवी-कुंड, उसी कालिन्दी-कुल, उसी  
 की ओर खिंचा जा रहा है।  
 निर्विषय हो। किन्तु हमें तो  
 यह आता है, प्रेम और  
 ना है। अस्तु।



पूर्ण प्रेमावतार महाप्रभु श्रीचैतन्यदेव और श्रीवल्लभाचार्यजी ने प्रथमतः ब्रजसाहित्य-मूर्त्य का उदयकालीन दर्शन किया। मूरदास, नन्ददास, हितहरिवंश, गदाधर भट्ट, व्यास, रसजानि शास्त्रि कमल गिरि उठे। भक्ति-भागौरथी की घबल धारा बहने लगी। गजरोन-धुआर रूपी उलूक भाग फर दिए गये। दूनों दिशाओं में सुखद सौरभ भर गया। मोहन की मधुर मधुर चांचुरी बजने लगी। महत्वापरितप्त जीव सुशीतल माधवी-कुंज की सदन छाया में विधाम और शान्ति लेने लगे। सैकड़ों प्रेमान्त भक्त आपे को भूल कर नाच उठे। बड़ा ही शान्त मनव था, बड़ा ही सुंदर स्वर था। अहा !

सवन कुंज छाया सुखद, सोनल मन्द समीर ।

नन है जान शरीं यह, या जनुना के नोर ॥

एन महान्माश्री ने भक्ति रस का जो अदुपम नोन बहाया, वह रंगदर घात्र तक बहना ही जा रहा है। कल हो की वान है, रतिस्वर हरिधन्व और सन्धनारायण ने इस रस का पान क नाहित्य मूर्त्य का दर्शन किया था।

आश्चर्य, आप को, यदि आप रात दिन के अष्ट परिधनसे प्रेमाभुग- भक्त गये हों तो, इस प्रेमाभुग-कुंज को कुल सैर फुलें बरा दें। अहा ! क्या ही माधवी निरुंज है ! प्रेम, भाक्ति और शान्ति की विविध समोर बहे रही है। महान्माश्री के मुगपंकजों से निरगत सौरभ सर्वत्र भर रहा है। श्याम तमाल और चंपक्यलरी का प्रगाढ़ातिगत देखकर चंचल विल इस सता-जात में उत्तल जाने की दौड़ रहा है। श्री चैतन्यदेव, श्रीवल्लभाचार्य, गदाधर भट्ट और अष्ट आप का मधुप-मुंज इस रस-जाड़ में गुंजार करता हुआ अलीकिक नाद

का अरुण दिमागा है। सुनिये, छार पर दिख्यबखु मूर वषा  
ही मधुर राग असाव रहे हैं—

मैया कबहि बड़ेगी छोटी ।

बिनी बाग मोहि दूध दिवत भई, यह अजहूँ है छोटी ॥  
नू तु कबनि बल की बेंतो उग्यो, है है लीची मोटी ।  
काहुन गुरन नहायन छोड़न, लागिन मी उग्ये लोटी ॥  
काओ दूध विवायन पति पति, रैन न मायन रोटी ।  
मृग्याम विरहीयो दोऊ, हरि हलधर की ओटी ॥

कहा ! काओ पायसल रम है ! दृष्टान् वह आता है कि  
इस मय का प्रतिपादक मूरदास के समान समार में को  
कवि न 'भूतों न भविष्यति' । उधर सुनिये, गोपियों की  
कहण का मवाद विनवा अतिमधुर और हृदयप्राही है  
वेस में अदृष्टान के मसी कवि बड़े बड़े हैं, पर मूर मूर  
है मामाही कह रहे हैं—

मूर कविन मूर्म कैन कवि, ओ मति मिर बाजन कटे ।

इसका मंद ही मूरदास 'गाम वनापनाओ' में विद  
वदम छुड़न कीला में मंत्रात का रहे हैं । अदृष्टान में इस  
अमर दुखन है । वदनेयी, मान कीव, मान गोमीये, ओ  
अमल और मय विचरण वरने में इसका दग मूर निरागा  
है । निरागमन वामन मूरकेवली का दगैव करते हु  
मूर्मये वद कल कह रहे हैं—

दुना मूर मय केन केन गाउन रसमारे ।

दुल्ल मयमय गाव कलम बाहु धूमधुमारे ॥

अनक दुल्ल मय मयम मंद मंदन उल्ल दामे ।

देवालय मंदन मय मय मय मय मय मय मय ॥

उरघर पर शक्ति कान्ति भीर कलु बरनि न आई ।  
जिहि भीतर जगमगत निरन्तर कुंवर कन्हारै ॥

नन्ददास के सम्बन्ध में यह लोकोक्ति सोलह आने सत्र  
जैचतो है कि—

“शौर कवि गढ़िया, नन्ददास जड़िया ।”

इस निकुंज के जुरा और मध्यभाग में तो बलिये । देखिये,  
यहां धीहित हरिवंशजी हिन-मार्ग का परम पुनीत उपदेश  
देते हुए कह रहे हैं—

चन्द्र घटै, सूरज घटै, घटै त्रिगुन विस्तार ।  
पै दृढ़ हित हरिवंश को, घटै न नित्य विहार ॥

तभी तो नाभाजी आपके सम्बन्ध में कहते हैं कि—

‘हरिवंश गुलाई’ भजन की रीति सदातः कोई जानि हैं ।”

धीहितजी का अनन्य मार्ग ततवार की धार है । यहाँ न  
उदय है, न अस्त । न प्रवृत्ति है, न कात । सदा एकरस  
अखण्ड नित्य विहार है । सुनिये, इस कुंज को एक कोकिल धी  
हितजी का पद किस कतरब के साथ अलाप रहो है—

✕रहो कोऊ बाहू मनहि दिये ।

मेरे प्राननाथ धीश्यामा, सपथ करो तुन दिये ॥

जो अवतार कदन्य भजत हैं, धरि दृढ़ मत जु दिये ।

नेऊ उमणि तजत मर्जाइ, दन विहार रस पिये ॥

खोये रतन फिरत जे घर घर, कौन काज इनि जिये ।

हितहरिवंश अननु सखु नाहीं, दिन यास्तहि लिये ॥

पै ! यह कौन है ! अहा ! अनन्य रसिक कविधेष्ट व्यास  
जी ( ओरछा वाले ) अपनी निराहो धुन में अलग ही मस्त



हो रहे हैं । इनकी बातों बड़ी ही टकसाली और रंगीली है । वह विधि निषेध के मार्ग को पार कर चुके हैं । हमें वे आनन्द आनन्द और चहल पहल सन्तुष्ट है । इनकी मधुरता तीन लोकों में बराबर है । सुनिषे, आनन्द 'प्राज्ञान' पद की काह ही अनोखी जानना वह यह है—

• अधिक शुद्धता हमारी जानि ।

कुल देवी माया । वरमानो संग, सत यामिन गो पति ।  
 मान गुण'न । चरु साक्षा, धिमा निरुद्धि, हरि मंदिर मान  
 ह'र गुन नाम नर । नृन मुनिपुन । सव पयाय स, कुल वरनाम  
 साक्षा वरुना । साक्षा चरु नम, प्रसाद मान धन मान  
 नया वि'र । निरु उ उरु मंदिर, नृनि मान मुन्यापन याग  
 गुम'न । साक्षा । ह'र नाम म'या । म'न मानवी जाग  
 ह'र । नृनि उरु उरु न न न, उदास । न । न । नृनि मान साक्षा

[illegible]

१.२४ सुप्रांत का मुखौदा है कर्मायन आमा आमा की ।  
२.२५ सुप्रांत का मुखौदा है कर्मायन आमा आमा की ।

100

॥ १ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

महो मन, सय रत्न को रत्नसार ।

लोह, चंद कुन धारम, नक्षिरे, नक्षिरे निर्य दिशार, ॥  
 ग्रह धामिनि संवन धनन्यासी, सुमिरौ न्याम उदार  
 कहि हरिदास रीति संतन की, गाढ़ी को अधिहार ॥

यहां पग पग पर गतिक प्रेमियों से समागम हो रहा है ।  
 वेस्तमे मिले और मिलने न मिले ! देखिये, यह प्रेमप्याले  
 बढ़ाये हुए धूमते भूतने से सनिक रसज्वालिता रहे है । इन्होंने  
 स्या नदीना प्रज को रज पग निहार कर दिया है । जग,  
 उनके मनोराज्य में तो विशाल कीर्तिष । कदा !

मानुष हो तो यही रसज्वालि,

सनी प्रज मोहक सौंद के सारन ।

हो पदु ही तो यहा पदु मेरो,

करी निज नन्द ही धेनु मैभारन ।

पाएन ही तो यही निरि हो,

हो रिपों निज ही दुखद भारन ।

हो सन ही तो धेरो दरो,

निज न पतिनि हन नरो को सारन ।

बाबू हरिदास ने गान हो करा है—

“यह सुन मनमोह हरि सनम है, मोहिन रिपु वारिये ।”

मनोमन ! यही सारसार सनहरी से जो सनन  
 हो गये । सनने से सन ही यह सनन ही सनन से सनन  
 पद सन निज नि—

“मोहक सुनन मनमोह सनन, सन सनन मन मोह सनन  
 सन सनन सुनन सनन से सनन से सनन से सनन  
 सनन से सनन से सनन से सनन से सनन से—

श्रीमान् कश्चिद्देवी इति मेधा ।

भयमाज की सुरंग खुनगी, मोहन की उर्वरता ।

कैसी संजो, कैसी दशा । ज्योमा ज्योम को भीगता  
देखकर फिर माने लगे—

क्यामा क्याम कंजमर श्राद्धे, जमन कियो कहु मै ना।

श्रीमद उमाहि पंटा सर्वुद्विमि नै, शिव भारि तल मैमा ।

यह-यह तो सबसूच ही फिर आयी है । हम-माधुरी  
सगवाने सग माधुरी के प्रेमाधुर, मिमिमि मिमिमिम  
आते हैं । यक्षिणे, स्वामने के जना मगदुर में यड़ी मर  
विभ्राम ले में । हम मगदुर का डाड बड़ा ही विविध  
अज्ञात अज्ञेय है । यहाँ, विहारी और देव स्वमा-माधुरी  
सगवान है । इसकी प्रकृति विगेष कर आहारी समगवान को  
आता है । विहारी ने तो सगरी कमा में लोगों को दंग ही  
दिखा है । किसी किसी का तो यही नक बहमा है कि—

अन्यथा के होना, उसी भाविक के माग ।

दम्पत्य के छोटे बच्चे, ध्यातु करें संजीव ।

इस प्रकार कि वे नगरों का समूह गंगा  
२. : जीव विभाग, अनुमान-विभाग, भौतिकशास्त्र म  
कनुषा में बड़े हैं। साथ ही साथ के मत में कदाचित्त  
केला दिया है, नहीं तो साथ यह फलें बहुत दि

ਕੇਸਾਂ ਤੇ ਹਾਂ ਆਖਿਆ ਕਿ ਭੈਣੇ ਨੂੰ ਬਿਨੈ ਦੇ ਸਾਂ,

एवं मन्त्र देवे, दायु नरिन् मेरु च । तौ ।

प्र. दु. सं. १०५ का आदेश की मांगी सुनि.

निंदनीय विपत्ति शक्ति सदन निर्माणता



यत् तन्महाद नयमा मर्का विरह अपारः  
 राय राय आठ दार्ष्टा यदि कहि कित सुखेया  
 हय हय दार्ष्टि ह, कहि कहि म्याम सुमान  
 फिरत निगम वन मयल म याही सुष्टि है शान

• १५७२ ई० १५७३ ई०—

११. प्रश्न ५०. नारायण व नागान्दिदास मुमेर  
प्रश्न ५१. नारायण व नागान्दिदास मुमेर

[illegible][illegible]

1. *Journal of the American Medical Association*, 2000; 284: 1039-1044.

4579

**◆ ◆ ◆**

## 11.4 Fat

110

नि करत मकरन्द रूप रस, भूत नहीं फिर इत उत हेरे ।  
गवतरन्विक भये मतशारे, घूमत रहत छुके मद तेरे ॥

यहां जिनने प्रेमी देखे, सय मतवाले और छुके हुए हो  
गये । यह देखिये, सहचरिश्चरणात्री प्रिया-प्रीतम पर कैसे  
हृदो रहे हैं ! सरस मंजायली का गान करते हुए आप  
कैसे मन्मी में भ्रम रहे हैं ! इनकी मंज ना सत्य ही कलेजे  
के टुकड़े टुकड़े किये डालती हैं । याह ! क्या हो गग है !

ठहरि, दरस देता नहिं कयहूँ गुन गँभीर गग्योले ।  
ठगि ठगि लेत ठगन मन मेलत मृग सावक दृग्योले ॥  
अलक बाल मृदु मस्त धँधे गज आशिक घर अर्योले ।  
सहचरिश्चरण रसिक रसिया के कल छलद्वंद्व छयोले ॥

यह संन्यासी महाराज कौन हैं ! यहाँ रुसेमूखे लोगों  
का क्या काम ! हो न हो, यह रसिकाप्रणय नारायण  
स्वामी हैं । यह श्रीधर स्वामी, मधुसूदन सरस्वती, प्रबोधानंद  
आदि के अनुयायी हैं । इन्होंने नट नागर का मुसकयान पर  
सारा ध्यान ध्यान निछावर कर दिया है । इनकी लगन तो  
देखिये—

नयनों रे, चितचोर यताचो ।

तुम ही रहत भवन रखवारे, बाँके धीर कहावो ॥

तुम्हरे बाँच नयो मन मेरो, चाहे सौँह स्वायो ।

अब क्यों रोयत हो दूबारे, कहुँ तो थाह लगायो ॥

घर के भेदी बैठि द्वार पै, दिन नै घर लुटवायो ।

नारायण मोहि वस्तु न चदिष, लेनेहार दिखायो ॥

अब हम देखते देखते "ललित-निकुंज" में आ पहुँचे हैं । ललित-  
किशोरी और ललितमाधुरी दोनों भक्त ज्ञाताओं की जोड़ी

का दर्शन कर मेरा डटे कर लीजिये । यह यादशाही धैर्य  
निरास की तरह छोड़ कर वृद्धाश्रम प्राप्त करने हुए दुर्मेन  
मज्झिमा-सुत्त का पान कर रहे हैं । इसकी समस्त सराहना  
है । ऐसे प्रेमाश्रित मेरे पद का और कहीं सुनने का भ्रम  
हमें ना आता नहीं । जानते हैं ? इसीसे साधु पदों की रचना  
की है । एक पद सुनिये ना—

कोई निमग्न की हार बना दे दे ।

मोक्षन कर बुद्धि का सुदृढ़ कर कामन बना सुना दे दे ।

मज्झिमा-सुत्त की मेरी याद, यिनकी गाँठ मिला दे दे ।

आगे हम रीति सब तम मन, नाकी भूलक दिया दे दे ।

कहिये आगे बहिये । क्या आपने पहिचाना ? यह मात्र  
हीन हीन वैश्वर्य दिशाप्रमाण है ? यही भाग्यशुद्धि  
है । बलिहारी !

कवि मुनिव आ आचमन, मोक्षन आका नाम ।

यह हम साधु-सन्निधि के अतिम आचार्य हैं । इन  
सुख महान, हीन हीन, अनाम-विराट् बुद्ध निरासी ही हैं । इन  
बड़े आचार्य का कहना सुनिये—

मज्झिमा सुत्त मज्झिमा सुत्त, मज्झिमा सुत्त मज्झिमा सुत्त ।

मज्झिमा सुत्त मज्झिमा सुत्त, मज्झिमा सुत्त मज्झिमा सुत्त ।

मज्झिमा सुत्त का आगे मज्झिमा सुत्त है । मज्झिमा सुत्त की  
कोई मज्झिमा सुत्त मज्झिमा सुत्त मज्झिमा सुत्त मज्झिमा सुत्त  
है । आचार्य है मज्झिमा सुत्त मज्झिमा सुत्त मज्झिमा सुत्त  
है । इनका कहना पद ना सुनने बलिये । अना ।

मज्झिमा सुत्त मज्झिमा सुत्त मज्झिमा सुत्त ।

मज्झिमा सुत्त मज्झिमा सुत्त मज्झिमा सुत्त, मज्झिमा सुत्त मज्झिमा सुत्त ।





बन सकती है। सत्यनारायण की सरल शान्त प्रकृति शायद मन को लीचे लिये जानो है। इस रस के लिये कदाचित् समय अनुकूल न होने के कारण सत्यनारायण कुछ उदास है। आप ग्रज की दुर्दशा पर उद्बोध के द्वारा श्रीकृष्ण के पास सौदेसा भेजते हुए विलम्ब विलम्ब कह रहे हैं—

पहिले को माँ अधन निहागे यह वृन्दावन।  
 पाके चारो ओर भये बहु विधि परिवर्तन।  
 यने खेत खोरस नये, काटि छने बन पुंज।  
 दलन को बस रहि गय, निधिवन सेवाकुंज।  
 कहाँ खरिहँ गऊँ !

यह स्थिति देख कर सत्यनारायण ने 'रस-मोषन' कह लिया। कहने हैं—

“या ही माँ अधनिधी रही यह प्रेमकली है”

प्रेमकली का अधनिला रहना ही अच्छा है। इस गोप ही में तो उम्मादकारी रस भरा है। ग्रज-माधुरी-कुंज का। केवल दिग्दर्शन मात्र हुआ है। इनने गोप्रेममय में हम देख क्या सकते थे ? किन्तु इस माधुरी रसि ने हमने ग्रज माधुरी का यन्त्रिधन्म सार अवश्य ले लिया है। और प्रसन्न

### ग्रज-माधुरी-सार

नामक, समस्त ग्रन्थ का भी यही तो सूत्रपात होता। वन मन्त्रि ग्रज माधुरी कुंज में गोड़ी ली मौर करने की समय मुझे विन्यास है, आपके मन में ग्रज साहित्य मैत्रि परीक्षण करने को सहज उरकण्डा उठी है। कुछ दिनों में ग्रज-साहित्य की ओर से लोगों का ध्यान कुछ बढ़ना सा चाहता है। एक तो इसका पठन पाठन शि



पठन-पाठन के शैथिल्य का कारण कुछ तो दुर्घोषता पर बनभाष और निर्भर करता है और कुछ खड़ी बोली की लड़ी बोली कविता की बरसाती बाढ़ पर। खड़ी बोली के शृष्टपोषक प्रायः यह कहा करते हैं कि अब ग्रजभाषा के दिन गये, उसमें हम अपने राष्ट्रीय विचार प्रकट नहीं कर सकते, अतः अब यह मृतप्राय है। मेरी समझ में उनकी यह दलील बड़ी आती। इनका क्या कारण है कि एक ज्ञानीय भाषा—ग्रजभाषा में उत्तमोत्तम कवितार्थ रची गई और खड़ी बोली में, जिन कि कुछ सज्जन चौदहवीं शताब्दी के भी पहले से राष्ट्रीय कविता की भाषा मानते हैं, क्यों अधिक कविताएँ नहीं लिखी गईं। खड़ी बोली का प्रचुर प्रचार, बोलचाल की भाषा होने पर भी, न हो सका! जिस भाषा में भा० हरिश्चन्द्र, भीष्म वादक और सत्यनागयण ने उत्तमोत्तम राष्ट्रीय कवितार्थ रचाया, क्या वह भाषा राष्ट्रीय विचारों को प्रकट करने अयोग्य है? विद्याग के प्रकट करने की शक्ति होनी चाहिए यदि वह शक्ति या प्रणिमा प्रस्तुत नहीं है, तो खड़ी बोली में भी राष्ट्रीय या वैज्ञानिक कविता का होना सम्भव नहीं और ऐसा प्रयत्न भी तो बहि आता है। कितनी कवितें समाचार पत्रों में निम्न प्रति निहला करती हैं। दाँव बा। छोड़ कर क्या उसमें आप कोई ऐसी भी कविता पाते जो हृदय की देवी कभी को विकसित और प्रकुलित कर जो आप को स्वर्गीय विमान पर बिठला कर दिव्यलोक गह्रा भर के लिये भेज दे? कदापि नहीं। यह शक्ति, जि “चाप-तन्मयता” के कैम प्रान हो सकती है! आधुनिक खड़ी बोली की कविताओं में और बाने न सही प्रजम—सः स्वाभाविक मिटान भी तो नहीं है। आजकल प्रजम

147

147

लिये गये हैं ! हित हरिवंशजी के माता-पिता भी कोई और ही ध्यात लिख दिये गये हैं। भेणी-विभाग के सम्बन्ध में मौन रहना ही अच्छा है। यह माना कि भूल हो ही जाती है, पर भूल की भी कोई नियमित मर्यादा हुआ करती है, और सीधे यह सुधर भी सकती है। किन्तु सुधारने की चेष्टा की जाय तब न ? बेचारे परवर्ती इतिहासकार भी पूर्ववर्ती इतिहास-लेखकों के भ्रामक मार्ग का अनुसरण करते हुए लोगों को और भी भ्रम के गड्ढे में डाल देते हैं। उचिन्त तो यह है कि पर-वर्तियों को ओख बन्द कर काम न लेना चाहिये। उन्हें स्वतः स्वाभ्युपेक्षण पर इतिहास-पथकों परिष्कृत बना देना चाहिये।

समग्र-ग्रन्थोंमें कविताके सुनाय के सम्बन्ध में भी हमें कुछ कठिना का कहना है। जो पद्य उद्धृत किये जाते हैं वे प्रायः संकलन साधारण और अशुद्ध हुआ करते हैं। भलीभाँति ग्रन्थों का अनुशीलन किये बिना ही, उदाहरण के लिये, चाहे जहाँ से लेखक पद्य रख दिये जाते हैं, चाहे वे शिथिल ही पौन हों। इससे यह होना है कि जिन्हें पुरे ग्रन्थों के पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ, वे इन शिथिल उद्धरणों को पढ़ कर इनके रचयिता कवि के तीमरे दरजे का कवि मान बैठते हैं। पाठक क्या, संपादक महोदय स्वयं भी इसी विना पर भेणी विभाग करने बैठ जाते हैं। एक नाम के दो तीन कवियों की कविता गड़बड़ में पड़ जाती है। यदि किसी कविता में 'हरिदास' नाम आया है तो वह 'स्वामी हरिदास' का रचा मान लिया जाता है ! ऐसे अक्सर पर संपादक महोदय यह देखने के बट नहीं उठाते कि कविता वाले हरिदास और स्वामी हरिदास में किना बड़ा अंतर है। छंदों के उद्धरण का काम यथा सावधानी और जिम्मेदारी से होना चाहिये।



सूच्य ही क्या हो जाना ? इसी प्रकार 'सूरदास मारी कवि था' 'चन्द बादायी पृथ्वीराज के साथ रहना था' आदि हीन बातें किसी किसी ग्रन्थ में दृष्टि आने हैं। प्राचीन कविता, उसके रचयिता, उसके विषय आदि के सम्बन्ध में हम जो कुछ भी लिखें, यह धडा और आदर के साथ लिखा जाना चाहिये, अंगरेजी शैली पर नहीं। हमें इस सम्बन्ध में संजीवन भाव्य के प्रयोगों पर विद्वत् पद्मनिहजों का अनुकरण करना चाहिये। उन्होंने विहारी और प्रजभाषा के साथ जिस उदारता और धडा भक्ति से काम लिया है, यह मनुष्य है।

मैंने इस ग्रंथ में आये हुए महात्माओं और कवियों की जीवनीयों में बहुत कुछ हेर फेर किया है। सम्पूर्ण बातों के अग्रहण करने की मैंने जो शृष्टि की है, आशा है, पूर्णतः साहित्यिक इतिहासलेखक उसके लिये मुझे समा प्रदान करेंगे।

अब मैं इस पुस्तक में संशुद्ध कविताओं के विषय। **ग्रज-माधुरी का सम्बन्ध** में कुछ कहूँगा। यह नाम मैं पहले ही लिख चुका हूँ कि **ग्रज-माधुरी** मन्त्र और भृगुार का प्रमाण है। धीमाचार्य के दिव्य सौन्दर्य और सद्यः प्रेम का आदर्श सामने रखता ही **ग्रज-माधुरी** का एकमात्र कर्मण्य है। हम निःसंकोच कह सकते हैं कि ऐसा परिचय आदर्श मन में दृप्त नहीं है। गोपियों की विरह व्याधा और प्रेमप्रभाव। प्रेमा मुदर विष वहाँ छिपि जाया गया है यह अनुदा क अभिरंशभाव है। **ग्रज-माधुरी** के विषय पर अधिक लिखने आवश्यकता नहीं है। हमका साहित्य अमर है, सांस्कृतिक है, माधुर्य निम्न है। इस दिव्य विषय को प्रज भाषिकों ने ही नहीं, अत्युन्नत अत्यान्त प्रान्त वाले कवियों ने









नहीं है। 'भगवत रमिक रमिक की बातें रमिक बिना कीं  
समुक्ति मरें ना।' फिर भी टिप्पणियाँ लगाकर मैंने जो पुरस्  
की है, वह, छाया है, जल्य होगी।

यदि इस संग्रह संग्रह में रमिक साहित्य प्रेमियों को किंचि  
स्मात् भी आनन्द लाभ हुआ तो मैं अपने पश्चिम की सदा  
स्मरणार्थ, यद्यपि मुझे इसका भी कहने का अधिकार नहीं है  
मैं तो सब प्रकार का हूँ। और अगर भी है। हाँ, मुझे इस  
अभिमान अवश्य है कि मैं इस अनमोल पद रत्नों की सदा  
गुणवत्ता और महानुभावों की सेवा में उपस्थित होने का  
हीमात्म्य प्राप्त कर सका।

मैंने सुहृदवत् साहित्य-रमिक श्रीपुरुषोत्तमदासजी जी  
में इस संग्रह की मुद्रित होने सम्बन्ध सब सब अवलोकन।  
मुझे जो आशा है कि जल्द ही मैं उन्हें हार्दिक  
आभार देना हूँ।

कलमें, यद्यपि किन्तु कुछ आशावरणपूर्ण गोपनीयता  
कोटिजः अवकाश देना हुआ मैं अपना मुख्य धन्य सा  
करता हूँ।

श्रीउपनिषद्  
पुस्तकालय, मा.म. मन्त्र  
१९६०

}

श्रीहरिदासानुदास  
शिवगोपी जी

# ब्रज-माधुरी-सार

श्रीसूरदास

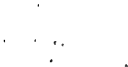
छप्पय

उक्ति, चोज, अनुप्रास, चरन, अस्थिति अति भारी ।  
 बचन, प्रीति-निर्वाह, अर्थ अद्भुत नुकधारी ॥  
 प्रतिबिम्बित दिवि दृष्टि हृदय हरि-सीता भासी ।  
 जन्म कर्म गुन रूप सबै रसना जु प्रकासी ॥  
 दिनत बुद्धि गुन और की, जो यह गुन सबननि धरै ।  
 श्रीसूर-कवित मुनि कौन कवि, जो नहि सिर चालन करै ॥

—नामा जी



वि-कुल-गुरु भक्तप्रणय श्रीसूरदास जी का  
 जन्म लगभग संवत् १५४० में हुआ था ।  
 इनको जन्म-भूमि आगरा-मधुरा की सड़क  
 पर रुकता (रेलुका शेष) गाँव है । किता  
 किता ने दिल्ली के पास साँही को इनका  
 जन्म स्थान माना है, पर इसका कोई पुष्ट  
 प्रमाण नहीं है । सूरदास जो गङ्गाट पर  
 रहते थे, और यह गङ्गाट आगरा के ही पास है । इनके  
 पिता का नाम रामदास था । यह सारस्वत ब्राह्मण थे । सर-



मन समुद्र भो सूर को, सोप भये चख लाल । नन  
हरि मुक्ताहल परत ही, मृदि गये ततकाल ॥

सूरदास जो ब्रज-साहित्य के जन्मदाता, परिपोषक एवम्  
प्रसारक कहें जायें, तो कोई अत्युक्ति नहीं । इसमें सन्देह  
नहीं कि यह हिन्दी के घालमोकि या व्यास हैं । भक्ति पक्ष में  
तो यह उद्भव के अवतार माने जाते हैं । सूरसागर के पढ़ने  
से महाकाव्य के सयो गुण प्रत्यक्ष हो जाते हैं । घात्सल्य रस  
लिखने में तो आपने कलम हो तोड़ दी है । इसी प्रकार  
गोवियों का चिट्ठ और उद्भव-संवाद अपूर्व और चमत्कार-  
पूर्ण हैं । हमारा तो यह कहना है कि जिन्हें साहित्य में कुछ  
रसास्वादन लेना है, उन्हें अवश्य ही सूरदास जी के मधुर  
भाषपूर्ण पदों का पाठ करना चाहिए । सूरसागर के गान से  
लोक और परलोक दोनों ही आनन्द-दायक हो सकते हैं, इस  
में सन्देह नहीं । कवि-सम्राट् सूर के सन्बन्ध में कई भावुक  
रसिक जनों ने अपनी अपनी अनुमतियां प्रकाशित की हैं ।  
कतिपय प्रचलित सम्मतियां ये हैं—

“तन्व तन्व मुरा कही, तुलसी कही अनूठि ।  
बची खुची कविरा कही, और कही सब जूठि ॥”

“उत्तम पद कवि गंग को, कविता को दलधोर ।  
फेर्य सूर्य गंगोर को, मूर तीन गुन धोर ॥”

“किधौ मूर को सर सग्यों, किधौ मूर को पोर ।  
किधौ मूर को पद लग्यो, तन मन घुनन मरोर ॥”

“सूरदास दिन पद रचना ऊप पौन कविहि करि आर ॥”

“हर-शक्ति मुनि पौन कवि जो नहि सिर चालन कर ॥”



कंचन मनि खोलि डारि कांच गर यँधाऊँ ।  
 कुंडुम को तिलक मेटि काजर मुख लाऊँ ॥  
 पाटंदर अंबर तजि गूदर पहिराऊँ ।  
 अंघा फल छाँड़ि कहा सेवर को धाऊँ ॥  
 सागर की लहर छाँड़ि खार कत अन्हाऊँ ।  
 सूर कूर सांधरो मैं द्वार पखो गाऊँ ॥ २ ॥

### सारंग

मेरो मन सतत कहाँ सुख पावै ।  
 जैसे उड़ि जहाज को पंढी, फिरि जहाज पर आवै ॥  
 कमल नैन को छाँड़ि महानम, और देव को धावै ।  
 परम गह को छाँड़ि पिपासो, दुर्मनि कूर खनावै ॥  
 जिन मधुकर अंबुजरस चाख्यो, क्यों करील फल खावै ।  
 सूरदास प्रभु कामधेनु तजि, हेरी कौन दुहावै ॥ ३ ॥

### सारंग

आज जो हरिहि न सख गहाऊँ ।  
 नौ ताजों गंगा जननी को, सांतनु सुत न कहाऊँ ॥  
 स्पंदन खंडि महारथ खंडों, कपिध्वज सहित डुलाऊँ ।  
 इती न करौ सपथ मुहि हरि को, छत्रिय गतिहि न पाऊँ ॥

२—मनि=मन्त्र । खोलि=खोल । कंच=कंचरी । गर=गर । गूदर=  
 छिपड़ा । सेवर=लहरीजि हथ पा फल, जिसने लिखा हरि के कुम को सार  
 नहीं होता । खार=खारा ।

३—१ "सुभ" श्री का. है । सतत नैन=सीहन्त । खनावै=खोदे ।  
 करील=करीदार हथ । हेरी=नकरी ।



गाँडय हल मन्मुख है धाऊँ, भरिता रधिर बहाऊँ ।  
सूरदास रनभूमि विजय विन, जियन न पीठ दिखाऊँ ॥ ४ ॥

### आमाचरी

हम भक्तन के भक्त हमारे ।

तुल अर्जन परतिग्या मेरी, यह ग्रन टरन न टारे ॥  
भक्त काज लाज हिय धरिकै, पार पयादे धाऊँ ॥  
जहँ जहँ भीर पर भक्तन पै, नहँ सहँ जार छुड़ाऊँ ॥  
ओ मम भक्त माँ पैर करन है, माँ निज धीरी मेरो ॥  
देखि विचारि भक्त हिन कागन, हाँकन है रथ तेरो ॥  
जीते जीत भक्त अपने की, हारे हानि विचारै ॥  
सूरदास सुनि भक्त शिरोधी, चक्र सुदर्शन आरी ॥ ५ ॥

### मारँग

✕ या पट पौन की फहरान ।

कर धरि चक्र चरम की धायनि, नहि विस्मरति यह धान ॥  
रथ न उतारि अयनि आतुर है, कथ रज की सपटान ॥  
मानों मिह मेल न निहम्बो, महाभक्त गज जान ॥  
जिन गुणाल सेगें ग्रन राग्यो, मेदि चेष्ट की कान ॥  
मोई गूर महाय हमारे, निकट भए हैं आन ॥ ६ ॥

१—गङ्गावृद्धि भव, वृद्धिजी वह प्रभावी शक्त, निरुद्धिने गङ्गाजी  
लव व्याप दिखे या । कथ कह्यो धीय सुगोहे पुन थे । गङ्गावृद्धि  
कतिरज—कतिरज व रथ की फहरान, निगम रनुवाजती का धिय ध

२—नर-नेर । योनि=रथ । चक्र सुदर्शन=विष्णु भगवान  
कागन वर ।

३—यन्त्रि=रथ । कथ=कथ । कथ=नेर । धान=धानि, मग  
कान=कान ।

## सोरठ

मना रे, माधव सां कर प्रीति ।

काम कोध मद तोन माहू नू, छाँडि सयै विपरीति ॥

भौरा भोगो घन भ्रम, भोद न मानै ताप ।

सय कुसुमन मिलि रस करै, कमल वैधायि आण ॥

सुनि परमिनि पिय प्रेम को, जानक चिनयन पारि ।

घन आसा सर दुख सहै, अन्त न जाँचै चारि ॥

देखा करनी कमल को, फीनो जल सौं हेन ।

प्राण तज्यो प्रेम न तज्यो, सुख्यो सरहि समेत ॥

मान पियांग न सहि सकै, नोर न पूँछै यात ।

देखि जु नू नाथी गतिहि, रति न थटै तन जात ॥

प्रीति परेया की गनी, ग्राह चढ़त आकास ।

तहै चढ़ि तोय जु देखिण, पगन छाँडि उर त्याग ॥

सुमार संगेह फुरंग को, स्वयननि राख्यो राग ।

घरि न सकन पग पद्मनो, सर सनमुख उर लाग ॥

देखि जंरनि जड़ नारि की, जरत प्रेम के संग ।

बितान बित फोका भयो, रखा जु पिय के रंग ॥

सोक येद दरजत सयै, नयन न देखत आस ।

घोर न जिय चोरी तजै, मरयस सहै विनास ॥

सय रस को रस प्रेम है, विषयो गेते सार ।

तन मन घन जावन छिसे, तऊ न मानै हार ॥

नै जु रल पायो भलो, जान्यो साधु समाज ।

प्रेम कथा अनुदिन सुनो, तऊ न उपजो नाज ॥

सदा सँघाती आपनो, जिय को जावन प्राण ।

सो नू दिसग्यो सहज ही, हरि ईस्वर भगवान ॥

पेद पुरान स्मृति सबै, सुर नर सेवन जाहि ।  
 महा मूढ़ अग्यान मति, क्यों न सँभारत ताहि ॥  
 अग मृग मीन पतंग लीं, मैं सोधे सब ठौर ।  
 जल थल जीय अिते तिते, कहीं कहीं लगी और ॥  
 प्रभु पूरन पावन सखा, मानन हूँ को नाथ ।  
 परम दयालु कृपालु प्रभु, जीवन आपके हाथ ॥  
 गर्मपास अनि श्रास में, जहाँ न एकौ अंग ।  
 सुनि सठ, तेरो प्रान पनि, तहाँ न छुँइयो संग ॥  
 दिना राति पोषत रहै, ज्यों नम्र्याली पान ।  
 पा दुख में तोहि काढ़िकै, लीं दीनां पयगाम ॥  
 जिन अड़ से चैनन कियां, रचि गुन तत्त्व विधान ।  
 धरमचिकुर कर मज्र दिये, नैन नासिका कान ॥  
 असन बसन बहु विधि दिये, औसर औसर आनि ।  
 मान गिना भैया मिले, नई रचिहि पहिचानि ॥  
 आन पान परिधान रस, जीवन गयो विनीत ।  
 ज्यों विदू परि परनीय बस, भोर भये भयभीत ॥  
 जैसे सुखही मन बढ्यो, तैसे बढ्यो अमंग ।  
 धूम धड्यो सोचन लस्यो, सखा न सूझ्यो संग ॥  
 जम आन्यों सथ अग सुन्यो, बाढ्यो अजस अपार ।  
 मीच न काढू तब कियां, दूतनि फाढ्यो बार ॥  
 कह जानो कहवाँ मुझां, ऐसे कुमति कुमीच ।  
 हरि साँ हेतु विसारिकै, सुख चाहत ही नीच ॥

४—मना=वन । अंत=अनत, अग्नय । वक्ष्यनो=प्राप्ते । सिसे=वज्र  
 नागा है । इन=नेत्र । तापयो=नीदित दृष्टा । सँभारती=तापी । सँभारत=से-  
 वरता है । सोके=है । अग=अहाय । गुण=सत्त्व, रज और तमोगुण

जो पै जिय लज्जा नहीं, कहा कहौ सो पार ।  
पषट्ठ अंक न हरि भजे, रे सठ सुर गैपार ॥ ७ ॥

भैरवी

कहाँ तौ यग्नौ सुन्दरनाइ ।

सैतत कुंवर कनक आंगन में, नैन निरखि छवि छार ॥  
कुलदिससति सिर स्याम लुभग अति, यदुविधि सुरंग बनाइ ।  
मानौ नयन ऊपर गजन, मधवा धनुष चढ़ाइ ॥  
अति सुंदर नृपु हरत चिहुर मन, मोहन मुख बगराइ ।  
मानौ प्रगट कंज पर मंजुल, अलि अयली फिरि आइ ॥  
नील स्येन, पर पीत लाल, मनि, लटकनि भाल रगुनाइ ।  
मनि गुरु अमुरदेव गुननिनि मनु, भौम सहित समुदाइ ॥  
दूध दंत दुति कटि न जाति अति, अद्भुत एक उपमाइ ।  
कितकत हँसत दुरत प्रगटत मनु, यनमें विधु छपाइ ॥  
खंडित वचन देन पूरन सुख, अल्प अल्प जलपाइ ।  
घुटुरन चलत रेनु नन मंडित, सूरदास यलि जाइ ॥ ८ ॥

सख स्थान=पंचनख वी रचना । चिहुर=वाल । परिपान=पत्र ।  
विट्=विचारी । तस्यो=नृत मदा । बीच=रहा । पहेंरा=सही । मुनो=  
मरा । बुनोच=पुरी मौन । अंर=अकार ।

करते हैं, कि यह पद सूरदासजी ने बाइसाठ अक्षर को सुनाया था ।  
किन्तु सूरदास जी अक्षर के दरबार में कभी गये थे या नहीं, यह विवाद,  
स्पष्ट है । सूरदास मदनमोहन, विशदेव, अक्षर के पास जाता करते थे ।

८—कनक=गोना । कुंजी=शेरी । मधवा=शुद्ध । सुंदर=पुंदर ।  
बगराइ=दौरे हुए । रगुना=रगुनाई । अमुरगुरु=शुद्ध । देवगुरु=देवस्यति ।  
मौन=मंगल । विट्=विदुष, विजिती । खंडित वचन=भीतले वचन । घुटुरन=  
घुट्टों के बल ।

### षष्ठाई

५. आहु गई हों नन्द भवन में कहा कहीं गृह धेनु री ।  
 बहु अंग चतुरंग ग्वाल घाल नहँ, कोटिक दुदियनु धेनु री ।  
 घूमि रहे जित तित दधि मयना, सुनन मेघ धुनि लाजैरी ।  
 बरनहुँ फहरा सहन को सोभा, बंकुटहुँ ते राजैरी ।  
 बोलि लई नयधू जानिकै, खेलन जहाँ कन्दाईरी ।  
 मुख देखन मोहिनि सी लागति, रूप न बरग्या जाईरी ।  
 लटकनि लटक रहे मू ऊपर, चँवरंग मनि पोहैरी ।  
 मानहुँ गुरु सनि सुक एक होइ, नाल भाल पर सोहैरी ।  
 जो चम को निलक निजट ही, काजर विधु क लाग्योरी ।  
 मनहुँ कमल गुनपीयमागरस, निसि अलि सुन सोइ जाग्योरी ।  
 पिधु आनन पर दीग्य सांचन, नासा लटकन मोनौ री ।  
 मानौ सोम सम करि लीनों, जानि आपनो गौनी री ।  
 सीपज माल स्याम उर सोई, बिच बघना छवि पाई री ।  
 मनहुँ दैव ससि नयन सहि नह, उपमा कहनि न आयै री ।  
 बरनौ कहा अंग अंग सोभा, भाव धरी जल रासी री ।  
 बाल लाल गोपालहि बरनन, कधि नुल करिहै हांसी री ।  
 सोभा मिधु अगाध बोध बुध, उपमा नाहिन और री ।  
 रूप दंनि तनु पविन रही ही, भेद भरे को बोर री ।  
 ओ भेरी अँवियाँ रसना होनी, कहनो रूप बनाव री ।  
 चिरजोयो अमुना को नन्दन, मूरदास बलि जाइ री ॥

६—गोगोवन=गाय के मन्दार से निराना हुआ मृगन्धिन ।

सीपज=सं.सी । बरना=बाध का नश । धेनु=मेद ।

ध्रुवपद

छोटी छोटी गुड़ियां हंगुरियां छोटी,  
 लपेटो नख जेहि मोती नानो बज दसनपर ॥  
 लखिन हांगन नैतें दुनक दुनक डौतें,  
 सुनक सुनक दावैं रुझां खुद मुखर ॥  
द्विजिनी बलिन दानि हादक रनन जटित,  
 खुद कर कनन पुरुषियां मखेर वर ॥  
 पिपरी पिहौनो मानी शौर उपना भांती,  
 दासक दानिनि नानो जोड़े दासो धारिधर ॥  
 उर दसनका बठे करुना भूले दास,  
 देती सदावति नलि दिनु सुनिमोहर ॥  
 अंजन रंजिन नैना नितदति बित बौरै,  
 मुख सोना पर वारो जनिन कसन तर ॥  
 खुदकी सदावति ननादनि नन्द-वरनि दास,  
 कैलि गावति महावति प्रेम मुखर ॥  
 किलकि किमकि हँसैं हँ हँ दैतुगियां तनै ।  
 सुखदास मन दसैं तोनरे ददन वर ॥१०६॥

जानावरी

नैया, मोहि दाऊ बहुत मिलयो ।  
 मोलौ कहत मोत को सोलौ, तू उलुननि कद जायो ॥

१०—पुत्रिनीयै । मुख मुख=कानन के दोरे धौरे दसन ।  
 सुनक सुनक=हानो के बजने का शब्द बितेन । रुझा=रुझने काज । पिपरी  
 =पीली । मानी=लगायी, मुखर । वारो=बारों का कह । नलि दिनु=  
 रिलीला । कसनकर=कनक । दानि=पान । महावति=मिलती है ।

कहा कहों यहि रिस के मारे, खेलन हों नहि जातु ।  
 पुनि पुनि कहन कौन है माता, को है तुमरो तातु ॥  
 गोरे नन्द असोदा गोरी, तुम कन स्याम सरीर ।  
 चुटुकी है है हंसत ग्वाल सब, मिरी देत धलघोर ॥  
 नू मोही को मारन सौप्यो, दाउहि कयहुँ न सीमै ।  
 सोहन को मुख रिस समेत लखि, जसुमति सुनि सुनि रोमै ॥  
 सुनहु काहू बलमड ख्यारै, जनमन ही को धून ।  
 मूरस्पाम मो गोधन को नौं, हीं माता नू पून ॥१॥

### अवहैया

मो देखन जसुमति, तेरो टांटा, सबही मादी खारै ।  
 इहि सुनि के रिस करि उठि धारै, बाँह पकरि से खारै ॥  
 एक कर नौं भुज गहि गाढ़े करि, एक कर लीने लौटी ।  
 मारनि हीं मोहि अघहि कहैया, बेग न उगली धाटी ॥  
 ब्रज लरिका सब तेरे आगे, भूटी कहत बतारै ।  
 मेरे कहें नही नू माननि, दिखरायो मुग खारै ॥  
 अगिन ब्रजगड लंड की महिमा, दिखराई मुख मोही ॥  
 मिथु सुमेर नही बन पवन, कहन भई मन माही ॥  
 करनै साँटि गिगन नहि जानी, भुजा छाँड़ि अकुलानी ।  
 मूर करै जसुमति मुख मूँदहु, बलि गर सारँग पानी ॥१॥

११—टांटा=दादा। बरगाम। भिखारो=नग किया। नू=तुम्हें।  
 जसुमति=व्यसोदा। ख्यारै=कहा। पून=पूनें। ली=लीन।

१२—लौटी=भुज। गाढ़े करि=क्रूर से। लौटी=दबड़ी। बाँह=  
 बा, देहा कर। नगैयानी=दास में पशुन करने वाले, दिख  
 को=क्या।

## गौरी

देखि सखी, बन ते जु बने, मज आयत है नंदनंदन ।  
 सीस सिखंडा मुख मुरली तिमि, यन्यो तिलक उर चंदन ॥  
 कुटिल अलक मुख चंचल लोचन, निरखत अति आनंदन ।  
 कमल मध्य मानों द्वै खंजन, बंधे आइ उड़ि फंदन ॥  
 अरुन अधर दृधि दसन विराजत, जय गायत कलमंदन ।  
 मुक्ता मनो लालमनि में पुट, धरे मुरकि धर बंदन ॥  
 गांव येप गोकुल गो चारन, हँ प्रभु असुर निफंदन ।  
 सुरदास प्रभु मुजस यखानत, नेति नेति अति छंदन ॥१३॥

## भैरवी

मैया, मैं न चरैहीं गाइ ।  
 सिंगरे ग्याल घिरायत मोलों, मेरे पाईं पिराइ ॥  
 जो न पत्याहि पूछ बलदाउहि, अपनी सौहँ दियाइ ।  
 यह सुनि सुनि अमुमति ग्यालनि को, गारी देत रिस्ताइ ॥  
 मैं पठवति अपने लरिका को, आवैं मन बहराइ ।  
 सुर त्याम मेरो अति बालक, मारत ताहि रिंगाइ ॥१४॥

## सारंग

X मेरे साँवरे जय मुरली अधर धरी ।  
 सुनि सुनि सिद्ध समाधि टरी ॥

१३—बने=बनार गये हुए । सिखंडा=भोर पंख । फंदन=जाज ।  
 कल मंदन=धीरे धीरे सुंदर ध्वनि से । पुट धरे=बंद करके रख दिये । नेति  
 नेति="ऐसा नहीं है" "ऐसा नहीं है" ।

१४—घिरावत=इकट्ठा कराने हैं । पत्याहि=विश्वास  
 सौह=सौमंद । बहराइ=बढ़ता कर । गानि=झोश सा । रिंगाइ



मुनि थके, देव विमान ।  
 सुरबधू निष समान ॥  
 गृह नखत नञ्जत न रास ।  
 याही बंधे धुनि पास ॥  
 मुनि धानैद उमंगि भरे ।  
 जल चल के अचल टरे ॥  
 घराचर गानि विपरैति ।  
 मुनि वेनु कहिपत गानि ॥  
 भरना भरत पावान ।  
 गंधर्व मोहे गान ॥  
 मुनि खग मृग मान धरे ।  
 फल दल तन मुधि बिसरे ॥  
 मुनि धेनु अति थकिन रहे ।  
 तन दगदु नहीं गहे ॥  
 बछिया न पीये छीर ।  
 पंछी न मन में धीरे ॥  
 हुम बेसी खपल भये ।  
 मुनि पक्षय प्रगटि भये ॥  
 जे बिटप बंचल पाल ।  
 ते निकट बों अकुलात ॥  
 अकुलित जे पुलकिन गान ।  
 अनुपम नैन सुवान ॥  
 मुनि बंचल पवन थके ।  
 सरिता जलचलि न सके ॥  
 मुनि धुनि धलो ब्रजनारि ।  
 मुन देद गेह बिसारि ॥

नुनि धकिन भयो सनीर ।  
 यहँ उलटाँ जमुना नीर ॥  
 मन मोहन मदन गोपाल ।  
 तन स्याम नयन विस्तार ॥  
 नय नील तनु घनस्याम ।  
 नय पीत पद अभिराम ॥  
 नय मुकुट नय घन दान ।  
 साधन्य फोटिक काम ॥  
 मन मोहन रूप धर्यो ।  
 नय काम को गर्व हर्यो ॥  
 मेरे मदन गोपाल ताल ।  
 सँग नागरी प्रजयाल ॥  
 नवकुंज जमुना, कुल ।  
 देखत सुरदास जन फूत ॥ १५ ॥

### विलायल

माई री, मुरली अति गर्व काहू यदति नाहीं आनु ।  
 हरि को मुख कमल देखि, पायो सुखराज ॥  
 देखत कर पीठ ढोढ, अधर दृष्टिहो ।  
 चमर चिकुर राजत तहँ, सुन्दर सभा माहो ॥  
 जमुना के जलहि नाहि, जलधि जान देति ।  
 सुर पुर ते सुर दिनान, भुवि बुलाइ सेति ॥

१२—तनपि=इ दशा, जिसमें रानी अपने मन का आत्मनिक  
 तप कर लेता है । सत=सारी; यहाँ के १२ स्थान । पान=पान; आउ ।  
 केनु=करी । सुखान=इ दशा है । दान=दान । कदर=कदर । लार=  
 पारा । कूर=किरात । पूर=पूर होना है ।

गार चर जंगम अहं, करति जीति भजीति ।  
वेद की विधि भेटि चलति, आपने ही रीति ॥  
बंसी बस सकल सुर, सुर नर मुनि नाम ।  
भीषति ॥ भी बिसारी, पही अनुपाग ॥

### देश

✕ भागरि गागरि लिये पनिषट ते घरहि आवै ।  
प्रीया डोलत सोचन सोलत, हरि के चितहि चुपवै ॥  
ठडकनि बलै मदकि मुंह मोरै, बंकट भीह चलावै ।  
मनहुं काम सैना अंग सोभा, अंचल अज कहरावै ॥  
गति गयंद कुछ कुंभ किकिनी, मनहुं घंट भडनावै ।  
मोतिन हार जलाजल मानों, सुभी दंत मलकावै ॥  
मातहुं चन्द मदायत मुख पर, अंकुस बेसरि लावै ।  
रोमाइली-हूँडि तिरनो लैं, नाभि सरोवर आवै ॥  
पग जेहारि जंजीरनि जकको, यह उपमा कहु पावै ।  
घट घट मलकि कपोलनि किनुका, मानों मरहि चुपावै ॥  
बेनी डोलनि दुहुं नितम्ब पर, मानहुं पूछ हलावै ।  
गज सिरदार सुर को स्वामी, देखि देखि मुख पावै ॥१७

१६—मारुं=पद शब्द 'तबी' के लिये भी आता है । बदनि=बैठ  
है । पीट=आगन । चपर बिदुर=मलकावनी रुपी धँसर । जमुना  
देनि=पुनः ही मनोहर दानि मुनकर जमुना का मन दिपर हो जा  
है । स्थावर=गढ़ । चर=चैत्य । भी=नभमी ।

१७—गागरि=पड़ा । डोलत=चंचलता से चारों ओर देखने  
मोरै=मंझनी है । बंकट=देहा । कुंभ=दायी का मग्नर, तिलकी ३०  
भतनी से दी गयी है । भडनावै=बन रही है । जनामन=कराभन । सु

## जैभित्री

अजहिँ दमे आपुहिँ बिसरायो ।

प्रकृति पुरुष एकै करि जानहुँ, यातनि भेद करायो ॥  
जत धल जहाँ रहो तुन बिनु नहिँ, बंद उपनिषद गायो ।  
है तनु जोच एक हम तुम दोउ, मुख कारन उपजायो ॥  
सूरस्थाम मुख देखि अक्षय हैसि, आनंद पुंज बढ़ायो ॥१॥

## देश

करि मन नंदनंदन ध्यान ।

सो घरनसरोज साँतल, तजि बिपै रस धान ॥  
जानु अंध दिनंग सुंदर, कलित कुंजन, बंद ॥  
कोहनी फटि पति पटु दुति, कनल केसर खंड ॥  
मनु मयाल मयाल दौना, किकनी कल राउ ।  
नानि हृदय रोनायलाँ अति, चले सैन सुमाउ ॥  
कंठ मुक्तानात मलयज, उर बनो बनमात ।  
सुरसरी के तीर नानी, लता स्याम लमात ॥  
बाहु पानि सरोज पल्लव, गहे मुख मृदु बेनु ।  
अति दिराजति यदन विधु पर, सुरनि रंजित रेनु ॥  
अरुन अघर कपोत नासा, परन सुन्दर नैन ।  
चलित कुंडल गंड मंडल, मनहुँ निर्वत नैन ॥

साँतल का काँदी सेने का पोसा जो हाथी के दाँत पर बढ़ाया गया है ।  
तिरनी=तीरी, कीड़ी । जेहर=जायदेव । विनुश=बूढ़ ।

१॥—आहुति=अपने स्वरूप को । प्रकृति=आत्मा । पुरुष=परमात्मा ।  
हम कारण=आनंद अद्वय करने के लिये । अक्षय=अनंत ।  
इस पद में मुद्राद्वैतवाद का निरूपण किया गया है ।

कुटिल कच मू तिलक रेखा, सोस सिखि भीखंड ।  
 मनु मदन धनु सर संधाने, देखि घन कोदंड ॥  
 सुर भीमोपाल की छवि, दृष्टि भरि भरि लेन ।  
 प्रानपति की निरखि सोमा, पलक परन न देत ॥१६॥

### सारंग

१६—अद्भुत एक अनूपम याग ।  
 जुगल कमल पर गज कोडत है, तापर सिंह करत अनुयाग  
 हरि पर सरवर सर पर गिरिवर, फूलें कंज पराव  
 दक्षिण कपोल घसे ता ऊपर, ता ऊपर अमृत-फल लाग  
 फल पर पुहुप पुहुप पर पल्लव, तापर सुक पिक मृगमद का  
 खंजन धनुष चंद्रमा ऊपर, ता ऊपर एक मनिधर नाग  
 संग संग प्रति और और छवि, उपमा ताको करत न था  
 सुरदास प्रभु विषय सुधारस, मार्ग अधरनि के यह भाग ॥

### विहंग

१७—लौघन भूत भय री मेरे ।  
 लोक लाज बन घन वेली मजि, आतुर है जु गड़े दे

१६—रिपय रस=भोग निवास । कल राव=मुन्दर राव । री  
 बचन, दिने हुए । शिली=वीर । कोदंड=धनुष ।

१७—जुगल कमल=राधिका जी के दोनों चरण । गज=हाथी ।  
 हाथी के पैरों से भावों की उपमा दी गयी है । हरि=सिंह । सरवर=ज  
 नाभि । गिरिवर=वर्षा; क्षीरी । कंज=कमल, मूल । कपोल=ज  
 कल । अमृत-फल=मूल । पुहुप=पुष्प, चिकुड़ । पल्लव=पत्र; अवर ।  
 होत, नाद । मृगमद=हमूरी । मनिधर नाग=मणिधरों से गुँधी हुं  
 बाग के बहाने, इस पद में भीराधिकारी का नवतिल  
 वर्णन दिया गया है । यह पद दृष्टिकृत है ।

स्याम रूप रसुधारिज लोचन, तहां जाइ लुप्ते रे ।  
 लपटे लटकै परान विलोचनि, संपुट लोन परे रे ॥  
 हंसनि प्रकास विनास देखि कै, निकसत पुनि तहँ बैठत ।  
 मुरस्याम अयुज कर चरननि, जहँ तहँ अमित्रनि पैठत ॥२१॥

### विहाग

नैन भये घोहित के बाग ।

उड़ि उड़ि जात पार नहि पायै, फिरि आवन तिहि लाग ॥  
 ऐसी दशा भई री इनकी, अथ लागे पड़ितान ।  
 मो परजत परजत उठि धाय, नहि पायो अनुमान ॥  
 यह समुद्र छोड़े शासन ये, धरै कहां मुग़रासि ।  
 मुनहुँ सूर ये चतुर करावन, यह छुदि महा प्रकासि ॥२२॥

### भँभोटी

रास रस रीति नहि दरनि कायै ।  
 कहां पैसी पुष्टि कहां यह मन रहौ,  
 कहां रह वित्त द्विष अन भुलायै ॥  
 जो कहीं रीति माने नियम दगन जो,  
 एका दिन नहीं या स्मरि पायै ॥  
 भाव सौ भई दिन भाव नै दे नहीं,  
 भाव हो नहि भाव यह दसायै ॥  
 यह निज नंद यह शान यह स्थान है,  
 दरस दंपति नजन मार जाइ ॥

२१—रूप=रूप । रसुधारिज=रसदायक ।

२२—मुनहुँ=मुनि । सूर=सूर्य । चतुर=चतुर । कर=कर । नैन=नैन ।



## विहारा .

यसोदा बार बार यों भापै ।

है प्रज में फोड हित् हमारो, चतत गोपालहिं राखै ॥

कहा काज मेरो दृगनमगन को, नृप मधुपुरी बुलायो ।

सुफलक सुन मेरे प्रानहन को, कात रूप है आयो ॥

बर ये गोधन हरौ कंस सय, मोहि धंदि लै मेलो ।

इतने ही सुज कमल नयन मेरो, अँखियन आगे खेलो ॥

यासर बदन विलोकत जाँचो, निसि निज अंकुश लाजै ।

तेहि पिछुरत जो जीयो कर्मयत्त, तौ हैसि काहि योलाजै ॥

कमल नैन गुन देखत देखत, अघर यदन कुन्हितानी ।

सुर कहाँ लागि प्रगट अनाजै, दुखित नन्द को रानी ॥२३॥

## विहाग

मेरे कुँहर कान्ह दिन सय कहु वैसेहि घरयो रहै ।

को उठि प्रात होत लै माखन, को कर नेत्र गहै ॥ २४ ॥

सने भवन असोदा सुत के, गुन गुनि सुत सहै ।

दिन उठि घेरत ही घर ग्यारिनि, उरहन फोड न कहै ॥

जो प्रज में आनंद हो तो तो, मुनि मनसहु न गहै ।

सूरदास स्यानी विनु गोकुल, कौड़ी ह न सहै ॥२५॥

२४—दृगनमगन=वचन में धोड़का का प्यार का नाम । मधु-  
री=मधुर । नृप=कंस से तात्पर्य है । सुफलक सुत=सुखद । बर=बाद ।

२५—वैसेहि=व्यों का व्यों । रो=नंदनी । गुनि=गुण काके ।  
नन=अनात्म ।





रदन दुराह बैठि मंदिर में, यहुरि निसापति उदय करैगो ।  
 सुर सखी अपने इन नैननि, चन्द्र चितै जिनि, चन्द्र जरैगो ॥२६॥

### चिलावल

नाथ, अनाथन की मुधि लीजै ।  
 गोपी ग्वाल गाइ गोनुत सब, दीन मलीन दिनहि दिन छीजै ॥  
 नैन सजल धारा यादो अति, बूझत ब्रज किन कर गहि लीजै ।  
 रतनो विनती सुनहु हमारो, चारक हू पतिप्राँ लिखि दीजै ॥  
 वरन कमल दरसन नव नौका, करुनासिंधु जगत जस लीजै ।  
 चरदास प्रभु आस मिलन की, एक बार आयन ब्रज कीजै ॥३०॥

### मलार

सखी, इन नैनन तें घन हारे ।  
 विनही रितु वरपत निसिवासर, सदा मलिन दोउ तारे ॥  
 ऊरध स्वास समोर तेज अति, मुख अनेक हुम डारे ।  
 दिसिन्ह सदन करि बसे धवन खग, दुख पायस के मारे ॥  
 दुरि दुरि यूँ परत कंचुकि पर, मिलि काजर सौँ फारे ।  
 मानौ परम कुटो सिव कीन्ही, विवि सुरति धरि न्यारे ॥  
 सुमिरि सुमिरि गरजत जल छाँड़त, अंसु सलिल के धारे ।  
 बूझत ब्रजहिँ सुर को राखै, विन गिरिवरधर प्यारे ॥३१॥

३०—दीजै=दुबले होते जाते हैं । किन=क्यों नहीं । चारक=एक बार ।  
 पतिप्राँ=पति ।

३१—तारे=आँखों की पुतलियाँ । ऊरध स्वास=आह । हारे=हारे ।  
 सिव=शिव मूर्ति से स्तनों की उपमा दी गयी है । विवि=विविध ।  
 राखै=रक्षित की भी अति हो गयी है !





पंकज-परम-पंक में विहरत, विधि कियौ नीर निराले ।  
राजिव रवि को दोष न मानत, ससि सौं सहज उदास ॥  
प्रगट प्रीति दसरथ प्रतिपाली, प्रियतम को बनशम ।  
सूर स्याम सौं पतिप्रसन्न कीन्हो, छाँड़ि जगत उपदास ॥ ३६ ॥

### चिलावल

✧ सख जग तजे प्रेम के नाते ।  
घातक स्वाति खुंद नहिँ छाँड़त, प्रगट पुकारत ताते ॥  
समुझ भौन नीर की घातें, तन्नत मान इठि हारत ।  
जानि कुरंग प्रेम नहिँ त्यागत, जदवि व्याध सर मारत ॥  
निमिय चकोर नैन नहिँ लायत, ससि जोयन जुग धीते ।  
ज्योति पतंग देखि पपु जारत, भये न प्रेम घट रीते ॥  
कहि अलि, कयों बिसरति ये पानें, सँग जां करि प्रजरात्रै ।  
कैसे सुरस्याम हमें छाँड़ै, एक देह के काजें ॥ ३७ ॥

### चिलावल

✧ ऊषो, मन माने की बात ।  
दाख दोहात छाँड़ि अमृत फल, विषकीरा विष जात ।  
जो चकोर कां देर कपूर कोर, तजि अगार अघात ।  
मधुन करत घर कोरे छाट में, बंधत कमल के पात ।

३६—पट=परीर । दशम=निरवैध, वैवाहिक । प्रगट, .... प्रकट ।  
राज के मन माने पर दशम ने प्रणम त्याग दिये ।

३७—जनि=जानि नाम का लक्ष्य । व्याध=वैधिया । मार  
करता है । नीर=पानी ।

ज्यों पतंग हित जानि आपनो, शीपक सौं लपटात ।  
सूरदास आओ मन आसों, सोई ताहि नुहात ॥ ३२ ॥

### भैरवी

✱ कहाँ तौ कहिए भ्रज को रात ।  
सुनहु स्थान तुम दिन उन लोगनि, जैसे दिवस दिहात ॥  
गोपी ग्वात गार गोमुत वै, नलिन ददन हस्त गात ।  
परम दोन उनु तिलिर हिमोहत, झंडुज गन दिन पात ॥  
जो कहूँ आवत देखि दूर तैं, सेव पहुँचात कुसलात ।  
चलन न देत प्रेम आतुर डर, कर चरनन लपटात ॥  
रिक्त चातक दन दसन न पायहि, दादस्त दलितहि न खात ।  
सूरस्थान सँदेसन के डर, पथिक न डहि नग जात ॥ ३३ ॥

### देश

✱ चित दै सुनौ स्थान प्रीति ।  
हरि तुम्हारे विरह राधा, नैं जु देखी छैन ॥  
तन्यो तेल तनोत भूपन, झंग दसन मर्तन ।  
कंकटा कर दान राख्यो, गाढ़ भुज गहि लीन ॥  
उद सँदेसो कहन सुंदरि, सुवन मोहन छैन ।  
जति सुदायति चरन इदानी, गिरि घरनि दत्त हीन ॥  
कंठ दवन न दोल आवै, हृदय आसुनि भौन ।  
नैन जन नहि सोई दोनो, अस्तित आपनू दान ॥

३२—ज्यों पतंग हित जानि, आपनो शीपक सौं लपटात है ।  
लपटना ।

३३—गिरि-प्रीति-हीन हैं । हिमो-हृत-प्रातः से राधा भुजा । रिक्त-  
चातक सब पक्षी भ्रज में नहीं जाते हैं और न दान कुछ खाते ही हैं,  
अधिके यहां के लोग इतने डर के सदा स्थित करने ही रहते हैं ।

पंकज-परम पंक में 'विहरत, 'विधि कियो नीर निरास  
राजिय रवि को दोष न मानत, 'ससि सौ' सहज उदास  
प्रगट प्रीति दसरथ प्रतिपाली, प्रियतम को बनवास  
सुर स्थाम सौ पतिप्रत कीन्हो, छाँड़ि जगत उपहास ॥ ३१

### पिलायल

✧ सप अग तजे प्रेम के माने ।  
घातक स्यानि पंद नहि छाँड़न, प्रगट पुकारन ताते ।  
समुझन मीन नीर की बार्ते, तजत प्रान हठि हात  
आनि कुरग प्रेम नहि त्यागत, जदपि ध्याय सर मात  
निमेष चकोर नैन नहि लायत, ससि ओघन जुग पीते  
ज्योति पतंग देखि धनु जारन, भये न प्रेम घट रीते  
कहि झलि, क्यों विसरति ये वाने, सँग जो करि प्रजराज  
कैने सुरस्थाम हमें छाँड़े, एक वेद के काज ॥ ३२

### पिलायल

✧ ऊषो, मन माने की बात ।  
दाख छोहारा छाँड़ि कसूत फल, विषकीरा विष जात  
ओ चकोर काँ देर कपूर कोर, तजि अगार मधान  
मधुन करत घर कोरे काट में, बँधत कमल के पात

३१—पर=शीर । स्थाम=निरपेक्ष, बेपरवाह । प्रगट, . . . इन  
शब्द के बन जाने पर दसरथ ने ब्राह्म स्थान दिये ।

३२—ज्यानि=जानि वाय का बचन । ध्याय=भड़किया । लाय  
करना है । पीते=पीती ।

नहीं रंगे हिन लालि काननो, रंगक ली लखन ।  
 नरक लखे नर लखी, नरी नरी सुख लख ॥

भैरवी

५ नरी नरी हरि मर को बर ।

सुख सख तुम दिन नर कोने, जैसे दिवस दिवस ॥  
 मोरी मर नर मोरी है, मरि नर नर नर ॥  
 नर नर नर नर नर नर नर नर नर नर नर ॥  
 नरी नरी नर नर नरी नरी नरी नरी नरी नरी ॥  
 नर नर नरी नरी नर नर नर नर नर नर नर ॥  
 नर नर नर नर नर नर नर नर नर नर नर ॥  
 नर नर नर नर नर नर नर नर नर नर नर ॥  
 नर नर नरी नरी नरी नरी नरी नरी नरी नरी ॥

नर

५ नरी नरी नर नर नरी ॥

नरी नरी नरी नरी नरी नरी नरी नरी नरी ॥  
 नरी नरी नरी नरी नरी नरी नरी नरी नरी ॥  
 नरी नरी नरी नरी नरी नरी नरी नरी नरी ॥  
 नरी नरी नरी नरी नरी नरी नरी नरी नरी ॥  
 नरी नरी नरी नरी नरी नरी नरी नरी नरी ॥  
 नरी नरी नरी नरी नरी नरी नरी नरी नरी ॥  
 नरी नरी नरी नरी नरी नरी नरी नरी नरी ॥  
 नरी नरी नरी नरी नरी नरी नरी नरी नरी ॥

१२—नर नरी नरी नरी नरी नरी नरी नरी नरी नरी ॥

१३—नर नरी नरी नरी नरी नरी नरी नरी नरी नरी ॥  
 नरी नरी नरी नरी नरी नरी नरी नरी नरी नरी ॥  
 नरी नरी नरी नरी नरी नरी नरी नरी नरी नरी ॥







मो जग को मिथ्या कहि जाय ।

अहं-तरे-तुमरे गुन गार ॥

प्रेम भक्ति विनु मुक्ति न होइ ।

नाथ कृपा करि शीघ्रि सार ॥

घोर सकल हम देख्यो जोर ।

तुम्हरी कृपा होर सो होर ॥

हर ननु है प्रभु जेने नाम ।

यामें गुप्तादिह विग्राम ॥

अधिष्ठाना तुम हो मगधान ।

प्राप्तो जगन न तुम अस्थान ॥

तुव ध्याना में पुद्गी नाथ ।

स्वायं क्य हम लब्धो न बाध ॥

बरा कहि तुम्हरी समुनि करे ।

बानी नमो नमो उच्यरे ॥

जगन गिरा तुमहीं होई हम ।

गाने हम विनयन जगदीश ॥

तुम नम उतिवा और न आदि ।

वदना देहि नाथ हम बादि ॥

गुरु जेने वेद-मुनि गां ।

जेने ही मैं कहि समुझार ॥

नर बहो धीमूढ उद्यान ।

कहे गुने गी नरे मगधार ॥६६॥

कह्यो जग-कह्यो कहि है कलह-का-ति कलह-कलह-कलह है । विनय-  
कलह-कलह है कलह-कलह-कलह-कलह है । कलह-कलह-कलह-कलह है ।





जम के फंद नाहिं परि दौरे, चरनन चित्त लगात ।  
बहत सुर विरथा यह द्वेदी, अनर-क्यों निरात ॥४६॥

### सारंग

कहाँ सुग द्रज को सौ संसार ।

कहाँ सुगद धंसी बट जमुना, यह मन सदा पिचार ॥  
कहाँ धनधान कहाँ राधा संग, कहाँ संग द्रज वाम ।  
कहाँ रस रास दोष धनर मुख, कहाँ नारि तनु नाम ॥  
कहाँ लता, तर तर प्रति भूदति, कुंज कुंज धनधान ।  
कहाँ बिरह मुख दिनु गोपिन संग, मूरस्थान मन वाम ॥४७॥

### भैरवी

सदा एक रस एक कलंदरि कालि कनादि कनूप ।  
फोटि कल्प रीतन नाहिं जानत, दिहरन दुगत म्वरुप ॥  
सकल तन प्रानाद डेह पुनि, जगया मय दिधि बाल ।  
महति कप धीरति नागापण, मय है दंस गोगाल ॥

१६—कलंदर=नर । कलंदर=विशेष रूप से कलंदर  
नारी । कलंदर=१ । कलंदर=नर । कलंदर=१ ।

२०—मौरी कलंदर कलंदर, विरहि गीतें गते हो बर कोहल  
ही बगल बगल हो । कल भी न कल बगल बगल हो । कल भी न कल  
। कलभी न कलभी । कलभी न कलभी । कलभी न कलभी । कलभी न कलभी  
॥४६॥ । कलभी न कलभी ही कलभी हो कलभी ॥

२१—कलभी न कलभी । कलभी न कलभी । कलभी न कलभी ।  
कलभी न कलभी । कलभी न कलभी । कलभी न कलभी । कलभी न कलभी  
कलभी । कलभी न कलभी । कलभी न कलभी । कलभी न कलभी ।

ब्रह्म योग पुनि ज्ञान उपासन, सबही सम भरमायो ।  
धीवन्तम शुद्ध तत्व सुनायो, लीला भेद बनायो ।  
नादिन में हरि लीला गाथी, एक लच्छु पद बढ़ा ।  
ताही सार 'मूर-सारायनि' गायत छति मान्य ॥

### विलायल

हरि हरि हरि हरि सुमित्त करी ।  
हरि चरनारविन्द उर धरी ॥  
हरि की कथा होई अथ अर्धा ।  
गंगादू धलि आर्य तर्धा ॥  
जमुना मिथु सरस्वति आर्य ।  
गोदावरी विलम्ब न लायै ॥  
गन्ध तीर्थ को बामा तर्धा ।  
गूर हरि कथा होई अर्धा ॥५३॥

मिहिरा का अतिशयन दिया है । मुराहम की इतक कह दिया है ।  
मुराहम का अतिशयन दिया है ।

इस कह में मुराहम की अतिशयन मिहिरा का दिया है । मु-  
र्राहम का अतिशयन दिया करने है । इस मिहिराहम की में इस  
( मुराहम की, मिहिरा की मुराहम 'मुराहम' करने है ) की मुराहम है ।  
की मुराहम की है । मुराहम मुराहम का अतिशयन मिहिरा का  
कहा है ।

॥ मुराहम-अतिशयन ॥

इस का अतिशयन मुराहम का मुराहम मुराहम का है —  
मुराहम मुराहम का है मुराहम, मुराहम की मिथु मुराहम  
मुराहम की मुराहम का है मुराहम, मुराहम मुराहम का है मुराहम

# श्रीनन्ददास



## छप्पय

लोला पद रस रंति ग्रन्थ रचना में नागर ।  
सरस उक्ति युत युक्ति भक्ति रस गान उजागर ॥  
प्रचुरय पथ लौं सुजसु रामपुर ग्राम निवासी ।  
सकल सुकल संवलित भक्त पद रेनु उपासी ॥  
चन्द्रहास-अग्रज सुहृद परम प्रेम पथ में पगे ।  
श्रीनन्ददास आनन्दनिधि रसिकसुप्रभु हित रंगमगे ॥

—नामाजी



पर्युक्त छप्पय से केवल यह प्रकट होता है कि नन्ददासजी रामपुर ग्राम के निवासी थे । और चन्द्रहासके जेठे भाई से इनकी घनिष्ठ मित्रता थी । अब प्रश्न यह है कि रामपुर ग्राम और चन्द्रहास से क्या तात्पर्य है । पर इसमें सन्देह नहीं कि छप्पय में उल्लिखित नन्ददास अष्ट छाप के ही नन्ददास हैं, अन्य नहीं । यह बात बहुत वलित है कि 'नन्ददासजी गुसाई' तुलसीदास के बड़े या जेठे भाई थे । इसका प्रमाण '२५२ वैष्णवों की वार्ता' नामक कहा जाता है । स्वर्गीय बा० राधाकृष्णदासजी ने निज दित 'रस पंचाध्यायी' में लिखा है कि "२५२ वैष्णवों की" में नन्ददास जी 'सनादिया' ब्राह्मण तुलसीदास के



छोटे भाई थे। ये दोनों भाई रामानन्दजी के शिष्य 'इत्यादि'। मिथबन्धु विनोद में लिखा है कि 'घाता' देश में प्रगट हुआ कि उसमें नन्ददास का 'केवत' (?) ग्राहण गोम्वामां तुलसीदास का भाई कहा गया है। इससे प्रकट कि, नन्ददास जी कान्यकुब्ज ग्राहण थे।" बड़े भ्रम की बात कि एक ही 'घाता' से एक महोदय सनौदिया ग्राहण रहे हैं, तो दूसरे केवत अर्थात् कान्यकुब्ज !

हमारे सामने वैष्णव ठाकुरदास सूरदास प्रकाशित मुंबई के जगदीश्वर प्रेस में मुद्रित '२५२ वैष्णव की प्रस्तुत है। यह संस्करण संवत् १९४७ का है। उसमें २५२ पर नन्ददासजी के संबंध में जो लिखा है उसे हम अविश्वस्य कर रहे हैं—

"तो ये नन्ददास जी तुलसीदास के छोटे भाई होते। यिनकूँ नाच तमासा देखवे को तथा गान सुनवे को बहुत हतां।" इत्यादि

नन्ददासजी की 'घाता' में न तो सनौदिया का ही न केवत ग्राहण का कोई उल्लेख मिला। न जाने केवत से विनोदकारों का क्या आशय है। 'घाता' में श्रीरामचन्द्र के अनन्य भक्त तुलसीदास का नाम अवश्य आया है,

\* समझ में नहीं आता कि हिन्दी नव रत्न में यह कैसा रिक्त कि "पूरा ज्ञाना चौदा और राजपुर के इंदे गिरे कान्यकुब्ज द्विगिरि बर्ना दे, न कि माधुरिया काश्रणा की" राजपुर राज म दा ता कान्यकुब्ज काश्रणों के आश्रम है। ये लोग भी पचास वर्ष से ही निवासी बड़े हैं। इंदे गिरे तो कोई कान्यकुब्ज-कुल है ही नहीं। माधुरी काश्रण ही पाए जाते हैं।



इन्होंने उस खजानी को रख्यो और उसके घर को बारिश  
 समझ लिया। लाचार हो घरवाले उस स्त्री को लेकर इनसे  
 पिण्ड छुड़ाने गोकुल को चले। आप भी उन लोगों के पीछे  
 पीछे चलने लगे। गोकुल गाँव में आकर गुसार् जी विठ्ठलनाथ  
 जी के सदुपदेश से इनका सारा मोह भंग हो गया और दुःख  
 दिनों बाद यह गुसार् जी के पट्ट शिष्यों में गिने जाने लगे।  
 श्रीनयनीत प्रियजी के आगे नन्ददासजी प्रायः कीर्तन श्रित  
 करते थे। इनकी भक्ति भाव भरी पदावली पर गुसार् विठ्ठल  
 नाथजी ऐसे मुग्ध हो गए कि उन्हें अष्ट छाप में उपजु  
 स्थान दे दिया। अष्ट छाप में यदि सूरदास सूर्य हैं, तो भक्त  
 दामोदर हैं। इन्होंने रास पंचाध्यायी, दशमस्कंध भागवत  
 रुक्मिणी मंगल, रूप मंजरी, रसमंजरी, विरहमंजरी, नव  
 चिंतामणि माला, अनेकार्थ माला, दानलीला, मानलीला  
 अनेकार्थ मंजरी, कान मंजरी, श्यामसगार और चमर गीत  
 रचना की। हिनोपदेश और गद्यात्मक नासिकेत पुराण  
 इनके बनाए कहे जाते हैं। अब तक रास पंचाध्यायी, चमरगीत  
 अनेकार्थ मंजरी और नाममाला प्रकाशित हुई हैं। रास पं  
 ध्यायी के तीन संस्करण हो चुके हैं। एक काशी नागरी प्र  
 रिणी समा का, दूसरा वा० बालमुकुंद शुभ संपादित 'भा  
 मित्र' का और तीसरा भी० प्रजमोहन सास विशारद  
 संपादित।

नन्ददाम जी की रचना इतनी रोचक और भावपूर्ण  
 उनकी टक्कर सेने वाले ग्रंथ हिन्दी में बिरले ही हैं।  
 रुक्मिणी का तो कहीं नाम भी नहीं। रास पंचाध्यायी  
 हिन्दी का गीत गोविन्द कही जाय तो अन्युक्ति न होगी।  
 चंद लिखने में नन्ददास जी जितने कृतकार्य हुए हैं,

बेरो काय बचि नहीं हुआ । सुंदरद बेरो लिखने वालों में भी  
यही सर्वप्रथम है । कनेबार्थ माला में एक शब्द के चार  
अर्थ दिए हैं । उदाहरण के लिए 'सारंग' शब्द नीचे दिया  
जाता है—

दिव जामर बल संत कुच, बर दादर ह होय ।  
 लज्जत संयत निगमन, वाम दिसत ह मोय ।  
 दिगी ललाट भुजंत सुनि, वों बह आनु मनात ।  
 लारी धीमलपान वी, भजिए हवा निधान ।  
 लारी संयत वी बहान, वाम दिसत बह भान ।  
 लाल लाली जल धन बहिरे, संयत दादरा वाम ।  
 ललि ललि होलक लालन हलि, वेली वेली वेली वेली ।  
 लालक दादर होय हल, वे बहिरे लाली व

ਸਾਡੀਆਂ ਸਾਰੀਆਂ ਸੇਵਾਵਾਂ ਲਈ ਧੰਨਵਾਦ ਹੈ। ਅਸੀਂ ਦੇ ਸਾਰੇ ਸਾਥੀ  
ਸਾਡੀਆਂ ਸੇਵਾਵਾਂ ਲਈ ਧੰਨਵਾਦ ਹੈ। ਅਸੀਂ ਦੇ ਸਾਰੇ ਸਾਥੀ

१. काल काल भुवनेषु वसन्ति भूत, भुवनेषु विद्यमाने भूतम् ।  
 २. तेषां विद्यमानेषु भूतेषु काले, काले काले भूतेषु काले ।  
 ३. काले काले काले काले काले, काले काले काले काले ।  
 ४. काले काले काले काले काले, काले काले काले काले ।

[illegible]

मन्ददाम के समकालीन धोधुयदामजी ने इसी भाषना और समझना को-बड़े ही सुन्दर ढंग से किया है—

मन्ददाम ओ बहुत कहों, राग रंग में पावि  
अच्छर मरम मनेह मय, सुनन होनि दिव उजि  
रमिक दमा अदभुत हुनी, काग कवित सुजा  
बाग प्रेम की सुनन ही, सुदत प्रेम उमपा  
रमिक बावरो मों किई, मोजन नेह की बा  
साधे रम के बचन सुनि बेगि विपस है जा

याम्बव में, मन्ददामजी परम भाग्येन, महान् भा  
उद्यमनिमाधान मन्त्रविधे । इसकी रचना इन्द्र देवि  
पतिनी, मरम और मज्जा है । बावरी भाष्य र  
बुद्ध छंद तथा बहु उद्बुधन किए जाने हैं ।

### रास पंचाध्यायी

बन्धन बर्गे कृपानिधान धीसुक सुम  
पुस म्पानिमय रूप गदा सुंदर अवि  
हरिनीला-रस मत्त सुदिन निन विचरन ज  
अहम गति कई नहीं अटक है निकने म  
नीलोत्पल-दल क्याम अंग नय जोषन  
बुटिल अलक मुख कमल मनो अलि-अवलि नि  
सुंदर भाव विमान दिपनि जनु निकर नि  
कृष्ण मणि प्रतिविम्ब निमिर को चंस्टि दि

१—नीलोत्पल-नीला कपल । निविन्द-देवा, का  
अल । बुद्ध-बुद्ध-बुद्ध, यत्न । अविन्द-बुद्ध, मनि

एषा-रंग-रस-अयन नयन राजत रत्ननारे ।  
 एषा-रसागृत-यान-चलित फलु मृमधुमारं ॥  
 अयन एषा-रस-भयन गण्ड-मण्डल भल दग्ध ।  
 प्रेमानन्द-यसिन्द मन्द मुसकानि मधु परसे ॥  
 उद्यत नागा दधर-विषय मुक्क की दृष्टि लीनी ।  
 तिन विष अकृत भाँति लयन फलु हक मनि भीनी ॥  
 फलु-भाँट की देख देखि हरि धर्म प्रकाशे ।  
 वाम-दोष-मद-लोभ-मोह जिहि निरखत नासे ॥  
 उदयर पर कानि दृष्टि की भीरा दग्धिन जाई ।  
 जेहि भीतर जगमगत निरन्तर फुंवर फट्हाई ॥  
 सुन्दर उदर उदार संसायलि राजनि भारी ।  
 दिव-सरपर सर भारी पाली मनु दमनि पतारी ॥  
 ता सर की कंठिवा मानि सोनित कस राहरी ।  
 निरन्तर जानै ललित भाँति जनु उपजन लहरी ॥  
 जेहि जेहि किन निह सोनित वपनन दाम ।

दामन मेम-मुधा-मस ॥

ॐ मदन-नज कानि सोलै ।

उदयर मे दोहै ॥

मधु-मद फलु ।

मेद ॥

जब दिनमनि ओकृष्ण द्रगन तें दूरि भये दुरि ।  
 पसरि पखो अंधियार सकल संसार घुमइ घुरि ॥  
 तिमिर प्रसित सब लोक ओक दुख देखि दयाकर ।  
 प्रगट कियो अद्भुत प्रमोय भागवत विभाकर ॥  
 जे संसार अंधियार अंगर में मगन भये घर ।  
 तिन हित अद्भुत दोष प्रगट कीनो जु कृपाकर ॥  
 श्रीभागवत सुनाम परम अभिराम परम मति ।  
 निगम-सार सुकुमार विना गुद कृपा अगम अति ॥  
 ताही में मणि अति रहस्य यह पञ्चाध्यायी ।  
 तन में जैसे पंचप्राण अस सुक मुनि गार्ड ॥  
 परम रसिक एक मित्र मांदि तिन आर्या दीनी ।  
 ताही ते यह कथा जयामति भाषा कीनी ॥ १

× × × × × ×

ताही छिन उड़राज उदित रस-रास-सहायक ।  
 कुमकुम मंदिन बदन प्रिया जनु नागरि-नायक ॥  
 कोमल किरन अरुन मानों बन व्याप रही र्यों ।  
 मनसिज भेदयो कागु घुमइ घुरि रहो गुनाल ज्यों ॥  
 फटिक छटा नी किरन कंज-बंधन जब आई ।  
 मानई बितन बितान सुदेस तनाय तनाई ॥

निरपेक्षोर सुन्दर । एक मित्र=मित्र का नाम स्पष्ट नहीं किया गया है ।  
 करने है, मन्दारामजी का मित्र से मंदा बाईजी से आशय है । मंदा बाई  
 भागुनाई निरुद्धनाथजी की शिष्या थीं । यह कविता में अपना नाम  
 "श्री निरुद्ध विरियारन" लिखा करती थीं ।

१—फटिक=फटिक, क्लोरफॉस्फर । रंग=रंग । बितन=चर्चन, कान  
 के । सुदेस=सुन्दर । रमा रमन=विष्णु । मोन बाम्पा=परा । प्रहृति, परी









पुनि पद-पिय के पाय बहुरि धरिहँ सुन्दर ग्रंथ ।  
 निधरक है यह अधरामृत येहँ फिरिहँ संग ।  
 सुनि गोपिन के बचन प्रेम आंच सों लगी त्रिय ।  
 विषलि चहयो नयनीत मोत सुन्दर मोहन हिय ॥३॥

### दोहा

कुंज कुंज दूदत फिरी, खोजत दीनदयाल  
 प्राणनाथ पाये नहीं, विकल भ्रं प्रञ्ज पाल

### रोला

विरहाकुल है गरं सवै पूछत बेली जन  
 को जइ को वैतम्य न कहु जानत विरही जन  
 हे मालति, हे जाति, अथके, सुनि हित दे विर  
 मान-हरन मन-हरन लाल गिरिधरन लखे इत  
 हे केतकि, इततैं किन्हँ चितये पिय कहे  
 के नैदनन्दन मन्द मुसुकि तुमरे मन मूसे ॥  
 हे मुक्ताफल, बेल धरे मुक्ताफल माला ।  
 देखे नैन विस्तार मोहना नैद के लाला ॥  
 हे मन्दार उदार धीर करधीर महामति ।  
 देखे कहु वनधीर धीर मन हरन धीर गति ॥  
 हे चन्दन, दुख <sup>देखे</sup> चन्दन-सख की अरन जुड़ावहु ।  
 नैदनन्दन जगचन्दन चन्दन हमहिं यतायहु ॥

४—रो.....विरही जन=यह पद मेघदूत के 'कामार्तादि व  
 वनगारकेनायेननेनु' का उल्था मान पड़ना है । जानी=मूढ़ो । अधि  
 पथिका, गुल्य निरोध । बने=बड़े, बुरा । मूसे=पुगड़े, हरे ।



हे नुलसी कल्याणि सदा मोहिद-पद-प्यारी ।  
 क्यों न कही तुम मन्द मुयन सों विधाँ हमारी ॥  
 जहँ आयत तम कुंज पुंज गहवर तरु धारै ।  
 अपने मुख चाँदने चलत सुंदर बन मारै ॥  
 इहि विधि बन बन ईडि वृक्षि उनमन को नारै ।  
 करन संगी मनहरन लाल-सीला मन भारै ॥  
 मोहनलाल रसाल को सीला इनही सोई ।  
 कोयल-तन्मय भई कसु न जानै हम कोई ॥ ४ ॥

पारिधिह तैं तुम जु कठिन सुन हो मोहन पिय ।  
 मितु पजाय बुझाय सुगो सी मोहि हनी तिय ॥  
 मान पिता पति वन्धु सबै तजि तुम डिंग आरै ।  
 जानि वृक्षि अधरान गहर बन महीं फिरि आई ॥  
 अजह नहि कसु विगसो रचक तुम पै आयौ ।  
 मुरली को जूडो अधरामृत आय पियायौ ॥  
 फनी फनन पर अरपे डरपे नहि नेक तय ।  
 छतिवन पर पग धरत डरत क्यों काभू कुंवर अर ॥  
 जानति ॥ हम, तुम जु डरत प्रजराज दुलारे ।  
 कोमल धरन सरोज डरोज कठोर हमारे ॥

मन्मथ । दूराय=झिपा कर । तमबु ज=तमबु जलवाणी से अधेरी कुत्र ।  
 मयम=दुर्गम; मयन । मोहना=मोहना का प्रकाश । उनमन=उन्मत्त, पागल ।  
 लाज नीला=प्यारे वृक्ष का चरित । तन्मय=तन्मय, कृष्ण रूप ।

५—पारिधि=पदेविषय । इनी=मार दाली । अधरान=साथी राज ।  
 गहर=पवन । रचक=जगत् मा मी । फनी=प्राप्ति नाग । अरपे=नीचे  
 रणे । डरपे=डरे । डरोज=जनन । इरे इरे=धीरे धीरे । फन=फैले । अरपे=

हैं हैं विय धरै हमहुं तो निषट् पियारे ।  
( किन अदयो में अदत, गड़त तुन कूर्य अन्यारे ॥

\* \* \* \* \*

जो अनेक जोगेश्वर हिय में ध्यान धरत हैं ।  
एकहिं घेर रूप इक सय को मुख बितरत हैं ॥  
जोगो जन बन जाय जतन करि कौटि जनम पवि ।  
अति निर्मल करि राखत हिय में आसन रचि रचि ॥  
कहु दिन तहँ नहिं जात नथल नागर सुंदर दुरि ।  
ब्रज जुवतिन के शैल्यरपर बैठ अति रचि करि ॥  
कौटि कौटि ब्रह्मांड जदपि एकहि ठकुरारै ।  
ब्रजदेविन को सभा साँधरे अति दूषि पारै ॥  
ज्यों नय मंडल मध्य कमल फलैका मुवाँजै ।  
त्यों सय सुन्दरि सन्मुख सुन्दर स्थान विराजै ॥ ६ ॥

\* \* \* \* \*

तय घोले ब्रजराज-कुँवर हों रिनो तुम्हारो ।  
अपने मनते दुरि करो किन दोष हमारो ॥  
कौटि कहर लागि तुम प्रति प्रति उपकार करो जौ ।  
हैं मनहरनी, तरनी, उरिनो नाहिं तयोँ तौ ॥  
सकल विश्व अपसन्न करि नो माया सोहति हैं ।  
प्रेमनयो तुनरो माया सो नोहि नोहति हैं ।

वन । अदत=दूधने हो । कूर्य=रह प्रहार की कैंहीरी पास । अन्यारे=अनिवार्य, नुशाने ।

६—पवि=पक कर । कहुदिन=पोंडा समय । शैल्यर=शैल्यर ।  
ब्रह्मांड=ब्रह्मलोक; राज्य । साँधरे=सज्जन ।

तुम झु करी सो कोउ न करै सुनि नवल-किमोरी  
लोक-वेद की सुद्ध सुन्यला तुन सम तोरी ॥ ७ ॥

सकल तियन के मध्य सौधरो पिय सौभिन अम  
रत्नायलि मधि नीलमनी अदभुत भलके उम  
नय मरकत मनि स्वाम फनक मनिगन ग्रन्थवाला  
पुन्दरावन को रीझि मनो पहिरार माला  
नूपुर कंकन किंकिनि करतल मंजुल मुरली  
ताल मृदंग उपग चंग पेके सुर जु रली  
मृदुल मधुर टंकार ताल मंकार मिली धुनि  
मधुर जंज की नार मंघर गुंजार रली पुनि  
हंसिय मृदु पद पटकनि छटकनि करनारनि की  
लटकनि मटकनि भलकनि कल कुंडल हारन की  
सौशल पिय के संग नृतति यो ग्रन्थ की पावा  
जनु घन मंडल मंजुल खेलनि वामिनि माला  
दृशिनि तियनि के पाछे आछे धिलुलित देव  
रांघम रूप लनानि मंग डोलनि अलिमोरी  
मोहन पिय की मुसकनि हलकनि मोर मुकुट की  
सदा बसो मन मेरे फरकनि पियरे पट की  
पदन कमल पर अलक लुटी कलु अम की मलकनि  
सदा रही मन मेरे मोर मुकुट की हलकनि

७—रिनी=रानी, अनुपम। किन=क्यों नहीं। अलिमोरी  
केवाट। घनघन=जगतीन। मृदु=मृदुला=मधुरयून सागर।

८—रत्नायलि=रत्नों की रानि; रत्नों के समान गोविदा।  
नीलमनी। वनक=मुरंग। किंकिनि=कंकरी। ललकन=लंछनी।

कोउ सखो कर पहरनि नितनि यों छविनां तिय ।  
मानों करतस फिरत देखि नट लट् हान पिय ॥ +  
कोउ नायक के भेद भाव लायन्य रूप यस ।  
अभिनय कर दिखरायति अरु गावनि पिय के अस ॥ = ॥

\* \* \* \* \*

पिय के मुकुट की लटकनि मटकनि मुरली रव अस ।  
कुहकि कुहकि मनु नाचत मंजुल मंग भरे रस ॥  
सिरतें सुमन सुदेस जु यरसत अनि आनंद भरि ।  
मनु पदगति पर रोकि अलक पूजनि फूलनि करि ॥  
रम जल सुंदर बिंदु रंग भरि अति छवि यरसत ।  
प्रेम-भक्ति-विरवा जिनके तिनके दिय सरसत ॥  
बुन्दावन को विविधि पवन विजना जु यिलांलें ।  
जहँ जहँ अमित दितोकत तहँ तहँ रस भरि डोलें ॥  
बड़े अरुन पट दासन मंडल मंडिन ऐसे ।  
प्रेम जात के गोलक कहु छवि उपजत जैसे ॥  
कुसुम धूर धूमरी कुंज मधुकरनि पुंज जहँ ।  
ऐसेहु रस आवेस सटक कोन्हों प्रवेस तहँ ॥ ६ ॥

नम तांगः एक प्रकार का बाजा । लटकनि=चट चट छनि । बरनारनि=  
रापों की ताजियों में । छाये=छाया नरह में । विरलित=डिल्ली हुई ।  
अलि सेव=नदी की भरी छपांड पंक्ति । पहरनि=करना । निररे=  
पंक्ति । मन की लटकनि=रसीने की बूँद । लावन्=लावण्य सौंदर्य ।

६—रव=रत्न । रस भरे=पानदिन । फूलनि करि=रुलों में । निरदा=  
देह । विविध पद=दीनद, नंद और सुगंध दायु । विजना=विजना ।



भोजि गसन तन निपटि निपट छवि अंकित है अस ।  
 नैननि के नहि वैन, वैन के नैन नहीं अस ॥  
 मोर निचोरत लुवतिन देखि अधीर भये मनु ।  
 तन विहुरन को पीर घोर रोषत असुमन अनु ॥  
 निरखि परस्पर छवि सों विहरति प्रेम मदन भर ।  
 मृदति घाम की छाति अत्रुं धरकत जिनके डर ॥  
 तब एक दुम तन चिन्ह कँवरवर आशा दोनी ।  
 निमैत अमर भूपन निन तहँ बरसा कीनी ॥  
 अपनी अपनी रुचि के पहिरे बसन बनी छद ।  
 जगत मोहिनी जे निनकी प्रजतिय मोहनि सब ॥  
 प्रह्न मुहुरत कँवर कागद घर घर आये जय ।  
 गोपन अपनी गोपी अपने दिम जानी तब ॥  
 नित्य राम रस मत्त नित्य गोपी अन बहान ।  
 नित्य निगम जो कहन नित्य नयनन अति दुरलभ ॥  
 यह अद्भुत रस राम महाछवि कहनि न आवै ।  
 सेव महम मुग गावन मोह अन्त ॥ पावै ॥  
 निव मनही मन ध्याय काह नहि जावै ।  
 सनक मनन्दन नारद सारद अति मन भावै ॥ १० ॥

निचोड=कसन है । बागन=बगन, वन । मोडक=छोस को गुन  
 वृन्नी=वृन्नी । अनीन=नेन ।

१०—नीन=नीला । नीन=नील । तन=तन । अत्रुं=अत्रुं । अत्रुं=अत्रुं ।  
 अत्रुं=अत्रुं । अत्रुं=अत्रुं । अत्रुं=अत्रुं । अत्रुं=अत्रुं । अत्रुं=अत्रुं ।  
 अत्रुं=अत्रुं । अत्रुं=अत्रुं । अत्रुं=अत्रुं । अत्रुं=अत्रुं । अत्रुं=अत्रुं ।  
 अत्रुं=अत्रुं । अत्रुं=अत्रुं । अत्रुं=अत्रुं । अत्रुं=अत्रुं । अत्रुं=अत्रुं ।

यह उज्ज्वल रत्नमाल छोटे ज्वनन करि पोंई ।  
 सावधान होइ पहिरौ इहि तोरी मनि कोई ॥  
 अवन कोरतन ध्यान सार सुनिरन को है पुनि ।  
 ग्यान सार हरि ध्यान सार श्रुति सार गुयी पुनि ॥  
 अधहरनी मनहरनी सुन्दर रत्न विलरनी ।  
 'नन्ददास' के कण्ठ बसी निव नंगल करनी ॥ ११ ॥

### भँवर गीत

कथय को उपदेश सुनो ब्रज नागरी ।  
 कय सोन सावन्य सदै गुन आगरी ॥ भँवर  
 प्रेम छुडा रत्न कपिनी, उपजायत सुख पुंज ।  
 सुन्दर स्वाम दिनासिनी, नय सुन्दरन कुंज ॥  
 सुनो ब्रज नागरी ॥ १॥

\* \* \* \* \*

बदन स्वाम लदेस पद मैं तुम पै श्रयो !  
 शदन समै लगेत यहँ सबसर नहि पायो ॥  
 लोचन ही मन मैं रायो, कय पाई इह दायो ।  
 कहि लदेस नंददास को, बहुरि सुखपुगे जायो ॥  
 सुनो ब्रज नागरी ॥ २॥

\* \* \* \* \*

जो इनके गुन होय वेद क्यों नेनि बखानै ।  
 निरगुन सगुन जानना रचि ऊपर सुन्द सानै ॥ ३ ॥

११—उक्त श्रवणार्थक रत्न ही नन्ददास; नाम 'नन्ददास' ही ले कराने हैं ।

भँवर गीत : भँवर । भुक्तिमार्गों का निवेदन ।

१—भगवत्प्रेम ।

२—नन्ददास के शब्द ।



जिनकी चे. आँखें नहीं, देखें कय. यह रूप ।

तिन्हें सांच क्यों ऊपजै, परे कर्म के कूप ॥

सखा सुन स्याम के ॥ ६ ॥

✕ जो गुन आवै दृष्टि मांझ नहि ईश्वर सारे ।

वे सय इनतें घासुदेव अच्युत हैं न्यारे ॥

इन्द्री दृष्टि विकार तें, रहत अधोक्त जोति ।

सुख सरूपी जान जिय, वृत्ति जु वाते होति ॥

सुनो ब्रजनागरी ॥ ७ ॥

✱ ✱ ✱ ✱  
नास्तिक जेते लोग कहा जानैं हित-रूपै ।

प्रगट भानु को छांडि गहै परछांही धूपै ॥

{ हमरे तुम्हरे रूप ही, और न कछू सहाय ।

{ ज्यों फरतल आभास को, कोटिक ग्रह दिखाय ॥

सखा सुन स्याम के ॥ ८ ॥

✱ ✱ ✱ ✱  
ताही दिन एक भँवर कहेंते ही उड़ि आयो ।

प्रजयनितन के पुंज माहि गुंजत छवि छायो ॥

चक्षुओ चहत पग पगनि पर, अरुन कमलदल जानि ।

मनु मधुकर ऊधो भयो, प्रथमहि प्रगट्यो आनि ॥

मधुप को भेष धरि ॥ ९ ॥

✱ ✱ ✱ ✱

६—दुर्गा=क्षिपा कर । वे आँखें=दृष्टि में ।

७—घासुदेव=भीकृष्ण भगवान । अच्युत=विष्णु का एक नाम ।

अधोपत=विष्णु का एक नाम । वृत्ति=कारण-वृत्ति ।

८—हित-रूपै=अन स्वरूप को ।

कोर कहै रे मधुप मेस उनही को धाख्यो ।  
 स्याम पीत गुंजार बैन किंकिनि मूनकाख्यो ॥  
 बापुर गोरस चोरि कै, फिरि आयो यहि देख ।  
 इनको जनि मानहुँ कोऊ, कपटी इनको मेस ॥

देखि लै झारसी ॥

कोड कहै रे मधुप कहा तू रस को जानै ।  
 पशुत कुसुम पै देखि नयँ आपन सम मानै ॥  
 आपन सम हमको कियो, चाहत है मनिमद ।  
 दुखिघ ग्यान उपजाय के दुखित प्रेम आनद ॥

कपट के छंद लो ॥

कोड कहै रे मधुप प्रेम पटपट पशु देख्यो ।  
 अगलौ यहि प्रजदेग माहिँ कोड नाहि विमेल्यो ॥  
 द्वै मिग आनन उतर रे, काहो दीरो गान ।  
 खल दमून सम मानही, दमून देखि डरान ॥

बादि यह रसिकता ॥

कोड कहै रे मधुप ग्यान उकटो लै आयो ।  
 मुक्ति परे जे फेरि निन्दे पुनि करम बनायो ॥

१. — स्याम पीत = पीतल का रंग स्याम पीत पीतल का रंग।

कपट भी उपाय कोर कोर करने का होता है, दोनों में समानता।

बापुर = बाप का । गोरस = गोर का ।

ਦੇਫ਼ ਉਪਨਿਧਫ਼ ਲਾਰ ਭੇ, ਮੋਹਨ ਗੁਨ ਨਹਿ ਲੇਤ ।  
 ਤਿਨਫ਼ੇ ਯਾਤਨ ਸੁਫ਼ ਕਰਿ, ਫਿਰਿ ਕਰਿ ਜੁਧਾਫ਼ੇਤ ॥  
 ਯੋਗ ਬਰਲਾਰ ਮੈ ॥੧੨॥

फोड़ दई रे मधुप तुम्हें लज्जा नई आवै ।  
 लज्जा तुम्हारी स्नान कुदरी-नाथ कहाई ॥  
 यह नीची पदवी हनी, गोपीनाथ कहाय ।  
 सब जहुपुल पावन भयो, दासी जूझन पाय ॥  
 नरन यह दोन हो ॥१७॥

ॐ ॐ ॐ ॐ  
 गेह सब हो मनुष्य ज्ञान लोभी तुन चेला ।  
 दुनिया सोखे सब जियो दहिन सो भेला ॥  
 मनुष्य सुखि बिलस्य है, सबे मोहता नहि ।  
 हाँ सबे भेला समे, तुनरो गाल नहि ॥  
 पधारो राखरे ॥५॥

ॐ ऐं ह्रीं नमः शिवाय नमो भगवते वासुदेवाय ।  
 वाहि न परमानन्द येन पदं श्री श्री परमं न  
 भ्याम लोके लब्धं कश्चन तेन येन पदे ह्यं ह्यं ।  
 यो महि पश्यत तेन ह्यं ह्यं ज्ञाने लब्धं न  
 निरन्तरा इति श्री

१. संस्कृत : संस्कृत : संस्कृत : संस्कृत :

११—दुर्गादेवता की एक शक्ती, जिन्का कोकिल कहलाये  
१२—दुर्गा.....देवी.....दुर्गा देवी के नाम से ही विदित है ।

[illegible]

धन्य धन्य जे लोग मजन हरि कों जो ऐसे ।  
अरु जो पारम प्रेम बिना पायत कोइ कैसे ॥  
मेरे या सधु ग्यान कों, उर मद कसों उपाय ।  
अब जान्यो प्रज प्रेम को, सहत न आधौ आध-१  
कृपा छम करि थके ॥

कमनामई रसिकना है तुम्हरी सब भूठी ।  
जय ही ज्यों मई लखों तबहि लौं पांथी मूठी ॥  
मैं जान्यो प्रज आय के, तुम्हरो निर्दय रूप ।  
ओ तुमको अथलंघ ही, पाकी मेला कुर ॥  
कोन यह धर्म है ॥ १॥

पुनि पुनि कहैं तु जाय थलौ धृन्दावन रदिये ।  
 प्रेम पुंज को प्रेम जाय गोपिन भग लदिये ॥  
 और काम सब छोड़ि कै, उन संगन सुख वैडु ।  
 मानग दूखो जात है, अथ ही मेह सनेहु ।  
 करोगे तो कहा ॥ १६ ॥

सुनत सपना के पैर जैत भरि आवे दोऊ ।  
विषस प्रेम आवेस रहो नाही सुधि कोऊ ॥

१८—सायकव्यभिपुल ।

१८—मह... मूरी—मह तब आपके मेव का सावधानी नही  
तब तब कीजा नय रे, दास में मूय जाने का नहीं ।

१०—नाम..... वाणभूषण के सामने कहीर के रोम रोम ।  
 बेबावस के बाण, बेरिषा ॥ क्यों, मानो कलकल के हवाय हवा ।  
 ५ बने बच रहे हो ।

रोम रोम प्रति गोपिका, द्वै रते सांघल मान ।

बहुर नरोद्ध सांघरो, अष्टद्विना भी पात ॥

उत्सहि रोग रोग मे ॥ २० ॥

### पुष्टवर पद

परिसे तो देखो छात्र मानिनी की गोला माल,

ता बाई सोरिसे मन्त्र प्यारे हो गोविन्द ।

बर पे दिसे बसोत रही है नयन मँदि,

बमाल विदुष्य मानो सोरे रते पूजन पंद ॥

रित भी भीरि मानो भीर रते करदाम,

रगु रते कायो मन्त्ररु मन्त्र करदि ।

मन्त्ररु मन्त्र रते प्यारी वो रते रते दलि,

कायो मुल देखे निरुप रते रगु रते ॥ १ ॥

राम रगु रते रति मन्त्र ॥

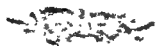
रगु रते रते रगु रते रते, रगु रगु मन्त्ररु रते ॥

रते रगु रते रति मन्त्र, रगु रगु रगु रगु रगु ॥

रते रगु रगु रति मन्त्र, रति मन्त्र रति रति रति ॥

रगु रगु रति मन्त्र, रगु रगु रति रति रति ॥

रगु रगु रति मन्त्र, रति मन्त्र रति रति रति ॥







भी प्रकार सिद्ध नहीं हो सकता। आश्चर्य है कि वर्तमान राधावल्लभीय गुस्ताईयों से पूछ लाछ किए बिना ही विनोद-कारों ने, बिना किसी आधार के, कुछ का कुछ लिख दिया है! यही नहीं, हितहरिवंशजी के जन्म-स्थान के सम्यन्ध में भी भारी भूल की गयी है। दाद ग्राम, जहाँ कि प्रति वर्ष गुस्ताईं जी की जयन्ती मनाई जाती है, को न मानकर देवचन्द (देवचन) को, न जाने किस प्रमाण से, जन्मस्थान माना है! गुस्ताईं जी के पिता देवचन्द में रहते अवश्य थे, किन्तु वहाँ इनका जन्म नहीं हुआ था। दाद गाँव मथुरा से ४ मील दक्षिण है। गुस्ताईं जी के अनन्य भक्त 'सेवकजी' ने भी लिखा है:—

धर्म रक्षित जानी सय दुनी ।

जहाँ 'दाद' प्रगटे जग धनी ॥

श्रीराधावल्लभीय पंडित गोपाल प्रसादजी शर्मा ने 'श्री हित-चरित्र' में गुस्ताईं जी का जन्म-संवत् १५३० माना है। हित-चरित्र में आप को जीवन-यात्रा लगभग ८० वर्ष की लिखी है। इस हिसाब से आपके गोलोक-वास का संवत् अनुमानतः १६१० होता है। औरंगाबाद महाराज मधुकर शाह के राज्यगुरु श्रीहरिराम व्यासजी लगभग १६२२ में गुस्ताईं जी के शरणार्थ हुए। सम्राट् अकबर को इस समय गहनपर घेरे १० वर्ष हुए थे। इसके कई वर्ष बाद महाराज मधुकर शाह के पुत्र घोरसिंह देव ने अशुतकुल को मारा।

\* 'विनोद' के ३३२ पृष्ठ पर सेवकजी के श्रीहितहरिवंशजी का पुर नित है! सेवकजी हिनकी के पुर नहीं थे, किन्तु उनके, स्वन्दारा लिखे हुए, पद लिखे थे।





‘धोहरियंस गुसाईं’ मञ्जन की रीति सकृत् कोर जातिरै।

धीदिनजी ने धीराधारुण्य का विमुक्त भुंगार कर्त किया है। कतिपय अनधिकारियों का यह कहना है कि ए को एयं अन्य भुंगारी महात्माओं को रचनार्थ समुत्तेज है। हम इस पर क्या कहें ! जिसके जैसे नेत्र होते हैं, यह वैसा है देखता है। ज्वराक्रान्त मनुष्य के लिये मधुर जल भी कटु जान पड़ता है। इस प्रकृति-बुद्धि के रहस्य को, रास दिशर के जूरा सात्त्विक दृष्टि में तो देखिये। अपने ‘स्वरूप’ का साइ त्कार करके इन श्रुतियों की कृतिशं पढ़िये, आप से झ सव प्रकट हो जायगा। अम्नु। भोगुसाईं जा के भिन्न से तथा ‘दिन चतुरासी’ से कुछ पद उद्धृत किये जाते हैं—

## सिद्धान्ती पद

### गौरी

यह तु एक मत धरून ठौर करि कहि कौन सधुपाये  
जई तई विगिन आर जयता ज्यों प्रगट पिगला नाये  
है तुम्ह पर ओर धरून दृष्टि परन कौन से धाये  
कहि धा कौन थंक पर राखे ज्यों गनिका सुन जाये  
(जिधो) दिनहरियंस प्रपच बख सख काल प्यास को धाये  
पद त्रिय जानि म्याम म्यामा पद कमल संगि सिर नाये

१—मधु-मृग । मञ्ज=अधिकार । विगला=वेगला । पच=पच  
लहनेली ।

कोईदा कभी ध्यानजी इमी पद को सुन कर, मं ज  
निय से ली दे । इन पद में अन्वयता, इन की पद्यायता की  
बना का बना ही मुंदर सांसे है ।



मेरे तन मन प्राणहु ते प्रीतम प्रिय आपने,  
 कौटिक प्राण प्रीतम मोसों हारे ॥  
 (जै श्री) दिन हरिवंस हंस हंसिनी स्यामल गौर,  
 कहाँ कौन करै जल तरंगिनि न्यारे ॥१६॥

### विलायल

सुनि मेरो वचन छपीसो राधा ।  
 सैं पायी रस सिंधु अगाधा ॥  
 तू मृषमालु गोप की बेटी ।  
 मोहन लाल रसिक हँसि भेंटी ॥  
 जाहि विरंचि उमापति नाए ।  
 तापे तैं चन फूल बिनाए ॥  
 ओ रस नेति नेति श्रुति भाष्यो ।  
 ताको अधर-सुधारस चार्यो ॥  
 तेरो रूप कहत नहि कायै ।  
 (जै श्री) दिन हरिवंस कलुकजसु गाये ॥ १७ ॥

### सारंग

खेलन रास रसिक ब्रज मण्डन ।  
 लुपतिन अंसु दिये भुज दहन ॥

१६—भाषुरी—व्यासी; कच्छी लगती है । इस इतिवृत्त—भाषुरी  
 की गथा ।

इन चंद के राधाकृष्ण की एक कथा, यत्न की तकनीकता एवं  
 रस का वर्णन दिया गया है ।

१७—रस मिश्रु—वर्चिदानन्द स्वयं भीकृष्ण । भाष—भाष्य  
 नेति नेति—वर्चिदानन्द की भाष्य के कारण वेद जिसकी महिमा टीक हो  
 कर रहे ।

सरद यिमल नम चन्द विराजै ।  
 मधुर मधुर मुरली कल याजै ॥  
 अति राजत घन स्याम तमाला ।  
 कंचन बेलि यनी ब्रज धाला ॥  
 याजत ताल मृदंग उपकृष्ट ॥  
 गान मधत मन कोटि अनकृष्ट ॥  
 भूपन बहुत विविध रंग सारी ।  
 अक्ष सुगन्ध दिखायति नारी ॥  
 घरस्त कुसुम मुदित सुर जोषा ॥  
 सुनियत दिवि दुन्दुभिकल घोषा ॥  
 (जै धी) हित हरियंस भगन मन स्यामा ।  
 राधा रमन सकल सुख धामा ॥ १० ॥

### सारंग

आहु नीकी यनी राधिका नागरी ।  
 ब्रज जुयति जूथ नै रूप कर चतुररी,  
 सील सिंगार गुन सयनि तैं आगरी ॥  
 कमल दच्छिन भुजा दान भुज संसु सखि,  
 गावनी सरस मिलि मधुर सुर रागरी ।  
 सकल विद्या विदित रहसि हरियंस हित,  
 मिलत नथ कुंज घर स्याम यह भागरी ॥ ११ ॥

१०—मज मरदन=धीकृत । संसु=होषा । कल=कुन्दर । दक्षिण=  
 एक पक्षर का बाज, जो मुँह से बजाया जाता है । मधत=नोते हैं ।  
 सारी=साड़ी । जोष=जी । घोष=रस ।

११—आगरी=बढ़ कर, बढ़ी । सुर=धर । विरित=विरि ।





## देव गंधार

अत्र नय तरुनि कदम्ब मुकुट ननि स्वाना छाहु यती ।  
 नय सित ली रंग अङ्ग नाधुरी मोहे स्वान धनी ॥  
 यो राजनि कदरो गृधिन कच कनक कञ्च यदनी ।  
 विहुर सन्मुखि बाँच अरथ विधु नानी अस्तत फनी ॥  
 सौम्य रत्न सिर लवत पनायी पिप सौमल्ल दनी ।  
 प्रकुटि फान कोइएड नैन सर कञ्जल रंग कनी ॥  
 मान नितक ताट्टा गण्ड पर नामा उत्तम मनी ।  
 दत्तन कुंद सरसाधर पद्म पौतन मन सननी ।  
 विहुर नम्य अति वारु सङ्ग ननि सौंदर्य दिन्दु कनी ।  
 शीतल मान रत्न सन्मुखि कुच कंचुधि कलित मनी ॥  
 मुद्र मृगान दल रत्न दनद हुत पात मरन लवनी ॥  
 स्वान मोल तरु ननु निद्रवारी रची मन्दिर यनी ॥  
 नानि गंभीर मोल मोलन मन गेलन को हृदनी ।  
 हस्त कटि पुष्ट निनय विविनि हुन कदनि रंग जयनी ॥  
 पद सङ्कुट जावक हुन मूदन मोलन उर लवनी ।  
 नय नय भाव विलोम मान दन विरजि वर वरनी ॥  
 (वैद्यो) हिन हरिचरित प्रसन्नित स्वाना कीरति दिग्द घनी ।  
 गायत लवतनि सुलल सुलाकर पिय दुखित दवनी ॥ २१ ॥

२१—हरन=हर । वरनी=वनी । कच=कच । कच=कच । कच=कच । कच=कच ।  
 कच=कच । कच=कच । कच=कच । कच=कच । कच=कच । कच=कच ।  
 कच=कच । कच=कच । कच=कच । कच=कच । कच=कच । कच=कच ।  
 कच=कच । कच=कच । कच=कच । कच=कच । कच=कच । कच=कच ।  
 कच=कच । कच=कच । कच=कच । कच=कच । कच=कच । कच=कच ।

# श्रीगदाधर भट्ट

—संस्कृत—

## छण्ड

मग्नन सुदृढ सुमील यद्यन आग्न प्रगिराये।  
निरमग्नन निष्काम कृपा करुणा को आये।  
अनम्य मग्नन रुद्र करन धर्यां धनु भनन को।  
परम धरम को मनु विदित गृदाधर नाये।  
भागधन सुधा धरने वदन, काट्ट का नाहिन दुप।  
गुण निरन गदाधर भट्ट अनि, मग्नन को मारी गुण।

—मग्नन



न वर गदाधर भट्ट जी दशिन में हि  
ग्राम के निवासी थे। [मग्नन] १  
मग्नन का वृद्ध पना मही वरुण,  
यह निदिवाह वान है कि वरुण  
धीरेमग्नन व मग्ननमग्नन  
मग्ननमग्नन को मग्नन हा है  
मग्ननमग्नन मग्नन व  
मग्ननमग्नन में मग्नन वरुण

मग्नन ११११ के मग्ननमग्नन विद्या है। मग्नन वरुण है  
मग्नन के मग्ननमग्नन में मग्नन मग्नन मग्नन  
मग्नन मग्नन मग्ननमग्नन के मग्ननमग्नन विद्यामग्नन  
मग्नन के मग्ननमग्नन में मग्नन विद्या है मग्नन मग्नन मग्नन  
मग्नन है—





रत्नमयातुल फलानिरपे ।  
 ध्येयं चरणान्बुज निभ घरलं ॥  
 भाल मिलहर । कुंकुम निलकं ।  
 चन्दन-चित्रित-चक्र-फलकं ॥  
 अन्नाधर-विनिहित-चर वेलुं ।  
 मुनि दुर्लभ-चरणान्बुज-रेपे ॥  
 नारायलि निभ मौक्तिक हारं ।  
 संभृत सौंदर्यामृत सारं ॥  
 विततोरसि दिलसदनमातं ।  
 कटि तट-धरित-सुकिंकिरि जालं ॥  
 यलयांगद संगन भुजदंडं ।  
 दनुज कुलांत विधायनि चंडं ॥  
 चरण रणित मरियन मंजोरं ।  
 सधिन्मुख घन सुभग सरोरं ॥  
 तैलोप्याद्भुत शोभा रुचिरं ।  
 गोप तनुं नर चिन्तय सुचिरं ॥  
 दुर्गत दण्डुं करुण सिधुं ।  
 विशयहितं हृदि कुरु जन दण्डुं ॥  
 क्रीडंतं निज सखिभिः साकं ।  
 गोप यधू जन पुण्य विपाकं ॥  
 अशरण शरणं मय मय हरणं ।  
 प्रथम गदाधर गिरिवर धनं ॥२॥

२.—चिन्तय=चिन्तन कर, ध्यान कर । दण्डि=धो । दण्ड=जादू  
 की छाना । रणनयाधुर=रणनय + अधुर । निभ=जोना । विनिरित=  
 पुन । मौक्तिक=मोती । विततोरनि=विजय + हनि; चौड़े छदन पर ।



## श्रीगदाधर भट्ट

विमल जलक सुदार मुक्ता नासिका दीनों ।  
 जँव आसन पर झुर-झुर उदौ सौ कीनों ॥  
 भौह सौहनिका कहौ झरु भात कुमकुम बिंदु ।  
 स्थान घादर रेख परि मनु अर्वाहि जग्यौ इन्दु ॥  
 लग्यौ मन ललचाइ तातें दस्त नहिं टाख्यौ ।  
 अमित अद्भुत माधुर्य पर गदाधर वाख्यौ ॥४॥

श्री

नमो नमो जय श्रीगोविंद ।  
 आनंद भय ब्रज सरस सरोवर, प्रगटित विमल नील झरविंद ।  
 अनुमति नीर नेह निन पोषित, नवनय ललित लाड़ मुखकन्द ।  
 ब्रजपति तरनि प्रताप प्रफुल्लित, प्रसरित मुजस सुवास अनन्द ।  
 सहचरि जात नरात सह रँग, रसभरि नित खेलत सानन्द ।  
 अति गोपीजन नैन गदाधर, सादर पियत रूप मकरन्द ॥५॥

सारंग

हरि हरि हरि हरि रट रसना मन ।  
 पोषति खाति रहति निधरक भरी, होत कहा तोकों क्रम ।  
 तैं तो मुनी कथा नहिं नांसे, उधरे झनिन महाय ।  
 ग्यान ध्यान जय तप तोरण ब्रत, जोग जाग पिनु संज ।  
 हेम हरन द्विज द्रोह मान भद, झरु पर गुरु दारा ॥

जिवका रंग खेव है । कुंभुन=मोनी । कदर=सादर । माधुर्य=मधुर ।

५—उड़=प्यार । तरनि=पूर । प्रसरित=कैलास । मुजस=

मकरन्द=पान ।

क्या ही सुन्दर हृदय है !

१—निधरक=निहर । रस=रसदेह । लयो । नरपन=न





## आसावरी

है हरि तैं हरिनाम बड़ेरो ।  
 ताको मूढ़ करत कत भेरो ॥  
 प्रगट दरस मुखकुन्दहि दोन्हों,  
 ताह आयुनु भा तप केरो ॥  
 सुत हिन नाम अजानित लानों,  
 या भव में न कियो फिरि फेरो ॥  
 पर अपवाद स्वाद जिय राख्यो,  
 धृया करत दकवाद घनेरो ॥  
 कौन दसा है है जु गदाधर,  
 हरिहरि कहत जात कहतेरो ॥॥

## गौरी

नन्द-कुल-चंद वृषनाभ-कुल-कौमुदी  
 उदित बुन्दाविपिन विमल आकासे ।  
 निकट वेष्टित सजो वृन्द घर तारिका  
 लांचन चकोर लिन रूप रस प्यासे ॥  
 रसिक जन अनुराग-उदधि तजो मरजाद  
 भाव अगनित कुमुदिनी गन विहासे ।

क—बड़ेरो=बड़ा । भेरो=भेरा । मुखकुन्द=मुखादु बंदी मक  
 ला । इन्होंने पात्रजन की भस्म कर दिया था । लोके भीष्म  
 गहर इन्हें रसने दिया । निम्न है, कि रती मुखकुन्द कल्पने के बाद  
 ने केल बराने । अजानित=जक पारी बहल, जो अन्त समय बरने  
 लपलप मानक पुत्र का मान होने से मुक्त हो गया था । फेरो=दुर्लभ ।  
 दकवाद=विश ।

ह—वेष्टित=मुक्त । तारिका=जाल । अनुराग-उदधि=हसी समुद्र ।



कृष्ण अनुराग मकरंद की मधुकरी

कृष्ण गुन गान रस सिंधु घोरी ॥

यिमुख परचित्त ते चित्त जाको सदा

करत निज नाह की चित्त चोरी ।

प्रकृति यह गदाधर कहत कैसे यनै,

अनित महिमा इतै युद्धि घोरी ॥११॥

यसंत

देखी प्यारी कुंज बिहारी मूरतिवंत यसंत ।

मौरी तरुनि तरनिजा नन में, मनसिज रस घरसंत ॥

अरु अघर नध पल्लव सोभा, दिहैसन कुसुम विशास ।

फूलें विमल कमल से सांचन, सुचन मन उल्लास ॥

चलि चूरन कुंतल कलिनाभा, मुगली कोकिल नाद ।

देखत गोपांजन वनराई, मदन मुदिन उन्माद ॥

सदज सुवास स्यास मलंपानिल, लागत परम मुहायी ।

श्री राधा माधवी गदाधर, प्रभु परसत सचुपायी ॥१२॥

सारङ्ग

दधि मथति नंद नरिंद रानी करति सुत गुन गान ।

गीत नीरद संग दिव्य दूकूल घर परिधान ॥

कैस कुसुमनि विरनि मरि नाटक भनवन पान ।

स्नेह वान गन वदन दिधु पर लुधा पिधु सनान ॥

नेत करपन हरप दरपत रतद दिधिनि छान ।

११—घोरी=घोरी दूरी । तरनिजा=पुनः । मूरति=मूर्ति । वनराई=वनराज ।

सदज=सदा । वनराई=वनराज । मदन=मदन । मुदिन=मुदिन । उन्माद=मद ।

राधु=राधा ।

१२—नरिंद=नर । परिधान=परी । नाटक=नटक । भनवन=वन । पान=पान ।







तिलक दान कमान एग नृग, नहै निपट नितक ॥  
 रतन जनननि जटित जुग तारक, रयि रहे द्यौज ।  
 नदधि दुर्गो जोगि मोतिन, मण्डली उदुराज ॥  
 जघर सुधर सुपक धिन्दा, सुभग दसन इतार ।  
 धोर धरिकै फोर नासा, करन नहि नंवार ॥  
 नोत पट तन जोन्ह तन बुद्धि, नंग रह्यस्ताज ।  
 फोक जुगन उरोड परसत, नहि भुजा नृमान ॥  
 निकट कटि केदरी पै, गज गति न मैदा जाति ।  
 प्रगट गज गति जहाँ जंजा, फदलि मचि हुलसानि ॥  
 गदाधर दनि जाइ कृन्तन, लगन है मन वास ।  
 इती संपनि सहित क्यो पिय, देत नहि नयास ॥ १७ ॥









मुकुट की तटक अरु चटक पटपोंत की  
 प्रगट झंकुरित गोपी मनहि मैनु ।  
 कहि गदाधर जु रहि न्याय प्रज सुंदरी  
 विमल वननाल के बीच चाहनु ऐनु ॥२२॥

### कान्हरा

जगहारे रिझारे सारंग-मैनी ।  
 अति रस काननि अमरन दरपत,  
 अंतियाँ जल झलमलाह आई तन पुलकनि खेनी ।  
 आयु सकति करतात देन दीनों न आइ,  
 मुरझाइ भाइ भीनों गज मैनी ॥  
 प्रेम पाणि उर लागि रहो गदाधर,  
 प्रभु के पिप झंग झंग मुखदैनी ॥२३॥

### भैरवी

अधस्तंहापिनि अधन उधारिनि,  
 कलिकात तारिनी नधु नयन गुन कया ।

शिरो । मोनर-मैनु=आँखों के मुखों में उड़ी हुई पूँव । संवय=रख करवा ।  
 १। मैनु=बलवत् । कलिका=कलक । झंकुरित=झटका । मैनु=गानदेव ।  
 रिझाव=रस प्रधारा । ऐनु=तू, निजान ।

२३—जगहारे=जंगहारे । सारंग मैनी=मृदुपरायी । जल झलमलाह  
 पानी=झालू झरझरे लगे, जैसा कि जंगहारे सेवे समय स्नानविक होता है ।  
 आयु....देन=जगहारे सेवे समय, कहते हैं, माँजी का सुखी बला देने से  
 आयु बढ़ती है । मुर झंग=माँजी में रंगे हुए । मैनी=मनिके ।

इस पद में बलाव मुख का बला हो मुरार दिख है ।







रिता, नानिकता और भक्ति तो उनमें पड़ी ऊँची है। आपने ज्ञान्त और भुंगार दोनों पर ही पदावली लिखी है। सि-  
न्ता १६ तथा भुंगार-सम्बन्धी ११० पद मिलते हैं।  
अपकी विहार-विषयक पदावली को 'केलिनाता' भी कहते हैं।  
दो संप्रदाय में एक से एक पद कर चुक्यि, त्यागो, अनुरागी  
और अनुभवो महात्मा हुए हैं। श्रीकृष्ण सम्बन्धिनी कविता  
रिता के अविरत प्रवाहमें दृष्टी संप्रदाय ने यड़ा योग दिया।  
त सप का धेय रसिक-सम्राट् श्री स्थानी हरिदासजी को  
ही है। आपके कुछ पद नीचे उद्धृत किये जाते हैं—

नाथ जू न देखि दस्यो दिन ॥ परोषी खां

सिंह पौरि दस्यो नहिं सोसइ नडाइ के ।

ये 'हरिदास' तोहि खान ॥ न आवै नेक

जनन गैरयो न कनयो कसु बडु के ॥

पर कवित स्थानी हरिदासजी का रचा नहीं है। बल्लभ कुत्र में  
हरिदास नाम के एक कवि हुए हैं, ज्यों का पद कवित हैं। इनके और  
ने कवित बने जाते हैं। जैसे श्री 'सिद्धिनाथ' 'नाथजू' और 'सिंह पौरि'  
पद ही बल्लभ कुत्र की लाली दे रहे हैं।

\* निराल-कण्ठु विनोद के २०१ दृष्ट पर स्थानी हरिदासजी कुछ  
तकरी बैराग्य का बल्लभ है, किन्तु हमें यह सत्य नहीं भूल पड़ना।  
लोक स्थानीजीने श्रीकृष्ण-हृन्त के निराल-विस्तार सम्बन्धी पदों के कवित्व  
पर कोई धन्य नहीं किया। संभव है, मरदाने-कवित के रचयिता कोई दूसरे  
हरिदास ही।





## आसावरी

हित तौ कौजै कमल नैन सौ,  
 जा हित के आगे और हित लागौ फाँको ।  
 कै हित कौजै साधु संगति सौ,  
 आवै कलमप जी को ॥  
 हरि को हित पेसो जैसो रंग नजीब,  
 संसार हित कसूनि दिन दुती को ।  
 कहि हरिदास हित कौजै बिहारी सौ,  
 और न निदाहु जानि जी को ॥ ३ ॥

तितका दयारि के दस ।

म्यों भावै त्यों उड़ाइ सै जाइ आपने रस ॥  
 प्रलोक, सियलोक, और लोक बस ।  
 कहि हरिदास बिचारि देख्यो दिना बिदारी नाहीं अस ॥ ४ ॥

## आसावरी

हरि के नाम को झालस क्यों,  
 करत है रे काल-फिरत सर साथै ।

इसने भी जीव के पुनर्जन्म की हीनता और भगवान की कृपा की स्तुति की है ।

१—कमल नैन=भीकृपा । कलमप=कलमपः पत्र । नजीब=नजीब का रंग कभी छूटा हो नहीं । कसूनि=कसा लाउ रंग । दिन दुती को=दो दिन का; परिक्रम ।

४—तितका=कृपा; नहीं जीव से झालस है । बिचारि=गुण, वहाँ भगवान से झालस है । आपने रस=अपनी इच्छा से ।



घन मद जोयन मद औ राज मद, ज्यों पंदिन में डेल ।  
कहि हरिदास यह जिय जानै, तीरथ कोसों मेल ॥ ७ ॥

### कल्याण

भूँडों घात साँची करि दिखावत हौं हरि नागर ।  
निसि दिन घुनत उघेरत हौं जात प्रपंच को सागर ॥  
ठाठ घनार घणों मिहरों को, हँ पुरुर तँ आगर ।  
कहि हरिदास यह जिय जानौ, सुपने कोसों आगर ॥ ८ ॥

### कल्याण

सोग तो भूले भूलै,  
तुम नति भूलीं माला धारी ।  
अपनो पति छाँड़ि औरनि सौं रति,  
ज्यों दारनि में दायी ॥  
स्यार कहत ते जीय मोतैं,  
विमुक्त, जिन दूसरी करि डारी ।  
कहि हरिदास जिन्हें जग्य देवता,  
पितरनि कौं सरधा भारी ॥ ९ ॥

७—बिगोरो=कर विरोध । डेर=रक पसी । तीरथ को सौ मेल=  
सखिक मेल, तीर्थों में सख भर के सिधे कितनोंमें मेल मिलाप नहीं  
हो जाता ।

८—घुनत उघेरत=बनाते निदाने । मिहरो=चो; यहाँ 'माया'से तात्पर्य  
है । पुरुर=प्रभ । आगर=बदकर ।

९—नाडाधारी=नाथ में नाचा खेने वाले हरिमल । ज्यों दारनि में  
दारी=पिरी में वर पुँधली की, जो अपने पति को छोड़कर अन्य लोगों के



## केलिमाला

### कान्हरा

प्यारी, जैसे तेरी आंखिन में हों अपनपौ  
 देखत, तैसे तुन देखति हौं किधौं नाहौं ।  
 हौं तोसो यहाँ प्यारे, आंखि मूँ दि  
 रहौं ताल निकसि कहाँ जाहौं ॥  
 नोकों निकसिये कों ठौर दनाझी,  
 साँचों करौं यति जाउँ लागौं पाहौं ।  
 धीहरिदास के स्वामी स्वामी,  
 तुमहि देख्यो चाहत और मुख लागत नाहौं ॥ १३ ॥

### कान्हरा

प्राज्ञ तुन दूटत है री तलिन भिन्नगों पर ।  
 चरन चरन पर मुरति शघर पर ,  
 बितयनि दंक लयोली भुव पर ॥  
 चलहु न येनि राधिका पिय पै,  
 ओ भई चाहति हौं सर्वोपर ।  
 धीहरिदास समय जय नोकै,  
 हिति निति केति झटत रति भू पर ॥ १४ ॥

१३—प्यारी=धीतरिकाजी में प्रिय है । प्यारे=धीतरिका से प्रिय है । ताल=प्यारे धीतरिका । लागौं पाहौं=लगे रहता हूँ ।

इस पद में भिन्न-भेद राधा-कृष्ण की दृष्टि-परा का क्या ही भाव-  
 यत्न बिना लक्षित किया गया है !

१४—तुन दूटत है=विरहारी है । भिन्नगों=वर्गों विराती कोहल्य ।  
 दंक=वांसी, निरखी । पै=तल ।



धो हरिदास कहत री प्यारी,  
ये दिन मैं कम करि करि साथे ॥ १६ ॥

### कान्हारा

सोई तो यवन मो सौँ मानि  
तैं मेरो साल मोछो री साँवरौ ॥  
नय निरुज मुख पुंज महल मैं  
नुयस दस्तौ यह गाँवरौ ॥  
नय नय लाड़ लड़ा लाड़िनो  
नहि नहि यह दूज पावरौ ॥  
( धो हरिदास के ) स्वामी स्वामी  
बुझ बिहारी पै धारँगो मालती-भावरौ ॥ १७ ॥

### केदारा

भुवन डोल दुलहिनी दुलहु ।  
इन झरि कुमकुना छिरफन, रोल परस्पर भूलहु ।  
इन नास रयाय और बहु नरनि-नरैदा फूलहु ।  
( धो हरिदास के ) स्वामी स्वामी कुञ्जबिहारीको कतैं नहि फूलहु ॥

१६—साथे साथे=साथ करने करने । ये दिन=मेरी बहिन के दिन के दिन । साथे=साथ दिने, साथ दिने; 'साथे' कुमकुना का शब्द है ।

१७—दुलह=पत्नी, मे, मुल मे ।

१८—रोल=गुल का शब्द । रयाय=रिसे । नरनि-नरैदा=पुत्री पदार्थ । कुञ्ज=कुल्लू=कनक काव्य नर है ।





इहाँ फोऊ हिनू मेरो न तेरो,  
 जो यह पीर जनै ॥  
 हौ तेरो यसीठ तू मेरी,  
 और न धीव सनै ॥  
 ( धौ हरिदास के ) स्वामी स्वामा,  
 कुंडविहारी कहत जु प्रीति पनै ॥ २१ ॥

### विलावल

प्रिया पीड के उठिये को छवि  
 धरनि न जाइ नयहिने न्यारे ।  
 मानो घाँस रैनि एक ठारे मोये ना भये न्यारे ॥  
 बार सदपटे मानो मैथरझुव लरत परनगर,  
 कमल दलनि पर संजरीट न्यारे ॥  
 (धौ हरिदास के) स्वामी स्वामा कुंड विहारी विहारिनि पै,  
 कोटि कोटि अनंग कोटि प्रसांगड बारि किये न्यारे ॥२२॥

### विलावल

स्वामा स्वाम शायत कुंड महल नै रंग नगे ।  
 मरगाजि माल लिखिन पट्टि सिखिनि  
 लखन रैन चहुं जान अगे ॥  
 सब सखि गायनि योन यजावति  
 सब मुख मिलि संगीत पगे ।

२१—मेरे=मेरी । धौ=धौ । प्रीति=प्रेम । पनै=पाने ।

२२—नयहिने=नयने हुए । कमल दलनि पर=कमल अपनी लक्ष्मी पर ।  
 परनगर=पवन; मंजरी का भी लक्ष्मी में बसाया है । प्रसांगड=प्रसांग ।



धनदन्त

बुध गुरुवा ओवन मोर बनबो बसन दादि ही बाग्यो बसने ।  
 गुन मंदिर नो कप दमोवा सहै रीती है मोर लसने ॥  
 बोटि बाम साधन दिहायो जादि देखि नर नर लसने ।  
 दोनोसकधा हरिदास दोनोदामो निजबो भजनदास निजहरसने ॥ २६

गौरी

भजन होम धीबुलदिलो ।

दुखहि मोर बनिक साधन सागरि सदन दुखलो ॥  
 गावे हरि न हरि न प्यारी बटि दिखदिलो न दिख भागो ।  
 धीहरिदास के बलामी बलामा, सदाई बाज हलामो ॥ २७ ॥

नट

देख निबहिर हाथे भये सदन बर नै ।

नर नर मे दसन नर नर मे लसन,  
 लोका हाथो दुहुं दिखि भावो मगर भये बलमिणि बलनै ।  
 मंदर नर देवो दिखि निब हाति,

हरकमि निब ददन नै ।

धी हरिदास के बलामो बलामा बल दिगामे,

देवो देव नरो नर लो लसन नर ॥ २८ ॥

१६—बुध गुरुवा ओवन मोर बनबो बसन दादि ही बाग्यो बसने ।  
 गुन मंदिर नो कप दमोवा सहै रीती है मोर लसने ॥

१७—बुध गुरुवा ओवन मोर बनबो बसन दादि ही बाग्यो बसने ।

१८—बुध गुरुवा ओवन मोर बनबो बसन दादि ही बाग्यो बसने ।

१९—बुध गुरुवा ओवन मोर बनबो बसन दादि ही बाग्यो बसने ।

२०—बुध गुरुवा ओवन मोर बनबो बसन दादि ही बाग्यो बसने ।

२१—बुध गुरुवा ओवन मोर बनबो बसन दादि ही बाग्यो बसने ।

२२—बुध गुरुवा ओवन मोर बनबो बसन दादि ही बाग्यो बसने ।

सूरदास मदन मोहन मोरी कहि  
न आयनि, मेरी दृष्टि न टरी।

कान्हड़ा

नू मुनि कान द्वी मुहनी  
मेरे मुन गांधे ग्याम कृष्ण म  
नतमुख होइ कहि ताहि को अनि। न  
सो तन वर्गनि आई ता पर  
तेरोई ध्यान धरन उर अनर मेर मंदि  
निकमत उर दृश्यन, तेरोई आगम गुनि शर  
नूरदास मदन मोहन सा नू खनि  
मिनि ताहि मे पाया नाम गंगा

कान्हड़ा

नयन किमोर नयन नगरिया।  
धरनी मुक्ता ग्याम मुक्त उदरि,  
क्याम मुक्ता अर। उर अनि।  
कन विमोह नरनि तनया नट,  
क्याम क्याम उमरि तन अनि।  
यो नरदास रहे उर अनर,  
माधन मनि कयन ग्या अनि।

उर पर मे कन ही कन कनेका और आनन।  
कन देवन मे कनी है।

१६—कान्हे बनि-कान्हे के मत मे। कनि को  
कान्हे के मत मे, को कान्हे के मत मे। कान्हे के मत मे  
कान्हे के मत मे। कान्हे के मत मे। कान्हे के मत मे।

उपना को घन दामिनि नहीं: १००

सँदूर धोते धारने करिया ।

सूर नदन मोहन बलि जाये,

नैद नन्दन दृग्गतातु दुखरिया ॥ १९३ ॥

देन

मेरे गति तुमही अनेक तौर पाऊँ:

बल कमल नल नलि पर बिने तुम दहाऊँ ।

घर घर लो डोरी ली हरी तुम्हें लडाऊँ ॥

तुम्हारे कहाप कहाँ सौन को कडाऊँ ।

तुमसे मनु छाँड़ि कहाँ सौन को धाऊँ ॥

सौन तुम्हें नाप कहाँ सौन को नडाऊँ ।

अँवन दर हार छाँड़ि कहाँ सौन को दडाऊँ ॥

सौना लद हानि कहाँ लगत को हँसाऊँ ।

हाथों में उतारे कहाँ गदया बढि धाऊँ ।

कुनकुन को लेन छाँड़ि धावर मुँह लडाऊँ ।

कल धेनु दर में गति कहाँ सौन को दुहाऊँ ॥

कल नल छाँड़ि कपड परन कुनो दहाऊँ ।

पाइन लो पैली मनु ली न अवन उडाऊँ ।

सुरदास नदन मोहन अवन अवन गाऊँ ।

सौन को पानही को रक्कड़ कहाँ ॥१०१॥

१२—कलवि=कलिया । कलिन=कलिया । कलिय=कलिया ।  
१३—कलवि=कलिया । कलिन=कलिया । कलिय=कलिया । कलिय=कलिया ।  
१४—कलवि=कलिया । कलिन=कलिया । कलिय=कलिया । कलिय=कलिया ।

१५—न ल लो डोरी=न ल लो डोरी न ल लो डोरी न ल लो डोरी । न ल लो डोरी ।

मृदाया मदन मोदन मोये - यदि  
न आयति, मेरी यदि न टूटे।

कञ्जरा

**॥ सुनि ज्ञान है ही सुखी**

मेरे गुन गानों का नाम क्या है ?

नमस्ते दोह कई महीने की अतिथि भर

तो तन नरवि आर्य श्री राम ।

तत्पुं० श्रुतान् धरन्तुः संपदं निजं मूर्तिं

निष्काम उर इत्येत, नेमोंई आगम मुनि गवध

गुरुदास मदन मोहन नॉं नृ नृ नृ

विहितं तादृक् नैवायं नाम तद्वत्तमम्

## Abstract

अथ विष्णोर् अथवा माण्डिका ।

अनर्था मुक्ता ग्याम मुक्त उ.ग.रि.

ਪ੍ਰਸ਼ਾਸਨ ਮੁਕਤਾ ਘਾਟੇ ਤੇ ਧਿਆਨ

॥ १ ॥

क्याप्रा क्याप्रा दुर्गा रथ प्रति

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

ਸਾਹਿਬ ਸਾਹਿਬ ਹੰਧਰ ਹੰਧਰ ਹੰਧਰ

एक बर में बारा ही समय कदवा कीज जायगा है ! मेरी सख्त  
 आज दुपहर में बानी है ।

• कर्मचारी परिचर्य के अन्तर्गत : कर्मचारी ...  
कर्मचारी के, या अन्य दाय के अन्तर्गत ...  
कर्मचारी : कर्मचारी के अन्तर्गत ...

उपमा को घन क्षमिनि नाहीं, ॥ १५ ॥

कंदरूप कोटि धारने करिया ।

मूर मदन मोहन बलि जारो,

मंद नन्दन पृथभानु दुखरिया ॥ १६ ॥

देन

मेरे गति तुमहीं कनेक सोय पाऊँ ।

घरन कमल गव मनि पर बिपै सुख यहाऊँ ।

घर घर जो डोलौ ली हरि तुम्हें सजाऊँ ॥

तुम्हारे पहाय कही सोन सो कथाऊँ ।

तुमसे प्रभु दाँडि कहा दोनन सो धाऊँ ॥

सोय तुम्हें नाय कही सोन सो कथाऊँ ।

कंगन उर धार दाँडि बाच फरें दनाऊँ ॥

सोभा सय हानि कहे लगन सो हँसाऊँ ।

दायो तैं उगारि कहा गदहा यदि धाऊँ ॥

कुनकुन सो लेर दाँडि पाइर नंद साऊँ ।

काम धेनु घर में लजि कछा क्यों दुहाऊँ ॥

कनक महल दाँडि क्योंकर दग्न कही दाऊँ ।

पावन जो ऐसी मनु ली न जगन जाऊँ ॥

मूरदास मदन मोहन जगन जगन काऊँ ।

मंतन की पानही सो नरदक्ष कहाऊँ ॥ १७ ॥

१५—कान्तिरूप-ध्यातव्य । क्षमि-क्षमता-समुत्तम । क्षमिनि=महा-  
हृदय । कंदरूप=रूपः कन्दोर । कान्ति-कान्तिरूप-ध्यातव्य । क्षमिनि=महा-  
हृदय ।

१६—न न सो देवी=न न सो देवी न न सो देवी न न सो देवी । न न सो देवी



## ध्रुवपद

उरझी लट कुंडल, बेसन मों पीन पट  
 घनमाला योच आइ उरभे ॥ दंड उर  
 ननि सों नैन, बैन बैननि मों उरभि रहे,  
 चटकीली छवि देखे मटगटान म्याम घन ।  
 होड़ा होड़ो नृप करे, रोकि रोकि अक भरे,  
 मना घेई घेई घेई कान मगन मन  
 सुरदास मदम मोहन राम मटल म ग्यारी को  
 अचल लै लै पंडित है मरम कन ॥

## प्रभाती

स्याम लाल, प्रात भयो, जागौ बलि जाई ।  
 घुटिया सुरमाइ योच सुमन हो गुथाई ॥  
 उगत सूर्य ज्योति भई कुलहिरी घनाई ।  
 गाय बाधि घुंघरै सु बालिशो मिताई ॥

मगाई : यमा=वहनी । कयोउच=क्या उच । पाव दू=पान दो  
 कृप की ओपड़ी । वेचो=वेचो, पका देकर निराम हो । पान=पानी  
 नृदासजी की यह प्रभावना, कि वे मन्ना की हजियां को ल  
 दिया वह, पूरा हो गयी । एक दिन एक साधु इन्हें अपनी हजियां को ल  
 भीषणनेहजी का दर्शन करने बना गया । जब गुणाजी ने इ  
 काम से बुझा, तब कहा वेसा हि 'प्रात मेरी मनोवाञ्छा मर  
 कपी तब ते बेरा भया तब ही था, प्रात मुझे वह मेरा नि  
 मिगरी तब से इच्छा थी ।

१०—दोहजन=धीमास कृष्ण । कटकीरी दक्षिणाभि  
 निरु के गजन नृदास । यवजन=जमीने की बूंदें ।

सूरदास मदन मोहन गुन तिहारो गाऊँ ।  
हरखि निरखि गोविंद छवि जीवन फल पाऊँ ॥ १८ ॥

### ध्रुवपद

खेलिए आँगन में छगन मगन कीजिये कलेवा ।  
झोंके तैं सारां दधि ऊपर नैं काढ़ि धरी,  
पहिरि लेउ अँगुली, फँटा याँधि लेहु मेवा ॥  
ग्यालग से सज्ञ सेज्ञ जाहु, खेलन के मिस भूपन क्याहु,  
कौन परी प्यारे निसिदिन की देवा ।  
सूरदास मदन मोहन घर में ही खेलौ प्यारे ललन,  
भँवर चक डोर दैं हों हंस चकोर परेवा ॥ १९ ॥

### बिलावल

मधु के मतवारे स्याम, खोलौ प्यारे पलकैं ।  
सोंल मुहुड लटा छुटो और छुटो अलकैं ॥  
सुर नर मुनि द्वार ठाढ़े दरस हेतु किलकैं ।  
नासिका के मोनि सोहैं पीच लाल ललकैं ॥  
फटि पीतांबर मुरली कर सयन कुंडल भलकैं ।  
सूरदास मदन मोहन दरस दैंही भलकैं ॥ २० ॥

१८—गुनिका=गोरी । गुरदास=गोपी से मुक्तकार । बुझि=देवी ।

१९—छगन मगन=भीरु का दासत्व रस-भूषक प्यार का मन ।

सेवा=पानःकाज का भोजन । झोंका=तिहार ।

अँगुली=बसों का छोटा मा धुरता; धड़की । फँटा=बसर पर जमने

हुपटा । भूपन=गुंजाओं का पूजों के गहने । देज=देज, आदत । भँवर=

हँ । चक=चकरी । हंस चकोर परेवा=रसों के खिलौने ।

२०—किलकैं=मानन्द मना रहे हैं । भलकैं=बड़ी भाँति ।



गुणदाम भजन मोहन गुन निहारी गाऊँ ।

एतत्ति निरति गोविंद इति जीवन फल पाठं ॥ १८ ॥

१५. वषट्

संविष्ट छांगल में हगल नगल वीजिये फतेहा ।

ਦੀਵੇਂ ਨੇ ਸਾਡਾ ਦੁਖਿ ਤਪਸ ਨੂੰ ਕਾਇਮ ਧਰਾ.

पतिनि हंतुं नैव दुर्गा, नैवैव पतिनि हंतुं नैव ॥

महात्म्य हे महान् संस्था लाह, महान् हे नित्य भूषण ह्याह.

ਬੀਜ ਦਰੀ ਧਰਮੇ ਨਿਸਿਦਿਨ ਬੀ ਦੇਬਾ ।

गुरुदास नंदन मोहन पर में हो शोभा प्यारे लालन,

ਸੰਦਰਸ਼ਨ. ਭਾਂਡ ਦੇ ਪਿੰਡ ਸਨ ਪਥਰੇਲ ਜਥੇਦਾਰ : ੧੬ :

वि.स.सं.

मनु सं. मज्झिमे निकाय, सं. १०१, पृ. १०१, पृ. १०१ ।

मैंने बहुत सारा पढ़ाई और पढ़ाई करवाई ।

सुर सुर मुनि द्वार दार करक हनु शिवही ।

नमिहं नमिहं नमिहं नमिहं नमिहं

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

सुखदास स्वामी जी का जन्म १९१० ई. में हुआ । २० ।

(1-2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9, 10, 11, 12, 13, 14, 15, 16, 17, 18, 19, 20, 21, 22, 23, 24, 25, 26, 27, 28, 29, 30, 31, 32, 33, 34, 35, 36, 37, 38, 39, 40, 41, 42, 43, 44, 45, 46, 47, 48, 49, 50, 51, 52, 53, 54, 55, 56, 57, 58, 59, 60, 61, 62, 63, 64, 65, 66, 67, 68, 69, 70, 71, 72, 73, 74, 75, 76, 77, 78, 79, 80, 81, 82, 83, 84, 85, 86, 87, 88, 89, 90, 91, 92, 93, 94, 95, 96, 97, 98, 99, 100, 101, 102, 103, 104, 105, 106, 107, 108, 109, 110, 111, 112, 113, 114, 115, 116, 117, 118, 119, 120, 121, 122, 123, 124, 125, 126, 127, 128, 129, 130, 131, 132, 133, 134, 135, 136, 137, 138, 139, 140, 141, 142, 143, 144, 145, 146, 147, 148, 149, 150, 151, 152, 153, 154, 155, 156, 157, 158, 159, 160, 161, 162, 163, 164, 165, 166, 167, 168, 169, 170, 171, 172, 173, 174, 175, 176, 177, 178, 179, 180, 181, 182, 183, 184, 185, 186, 187, 188, 189, 190, 191, 192, 193, 194, 195, 196, 197, 198, 199, 200, 201, 202, 203, 204, 205, 206, 207, 208, 209, 210, 211, 212, 213, 214, 215, 216, 217, 218, 219, 220, 221, 222, 223, 224, 225, 226, 227, 228, 229, 230, 231, 232, 233, 234, 235, 236, 237, 238, 239, 240, 241, 242, 243, 244, 245, 246, 247, 248, 249, 250, 251, 252, 253, 254, 255, 256, 257, 258, 259, 260, 261, 262, 263, 264, 265, 266, 267, 268, 269, 270, 271, 272, 273, 274, 275, 276, 277, 278, 279, 280, 281, 282, 283, 284, 285, 286, 287, 288, 289, 290, 291, 292, 293, 294, 295, 296, 297, 298, 299, 300, 301, 302, 303, 304, 305, 306, 307, 308, 309, 310, 311, 312, 313, 314, 315, 316, 317, 318, 319, 320, 321, 322, 323, 324, 325, 326, 327, 328, 329, 330, 331, 332, 333, 334, 335, 336, 337, 338, 339, 340, 341, 342, 343, 344, 345, 346, 347, 348, 349, 350, 351, 352, 353, 354, 355, 356, 357, 358, 359, 360, 361, 362, 363, 364, 365, 366, 367, 368, 369, 370, 371, 372, 373, 374, 375, 376, 377, 378, 379, 380, 381, 382, 383, 384, 385, 386, 387, 388, 389, 390, 391, 392, 393, 394, 395, 396, 397, 398, 399, 400, 401, 402, 403, 404, 405, 406, 407, 408, 409, 410, 411, 412, 413, 414, 415, 416, 417, 418, 419, 420, 421, 422, 423, 424, 425, 426, 427, 428, 429, 430, 431, 432, 433, 434, 435, 436, 437, 438, 439, 440, 441, 442, 443, 444, 445, 446, 447, 448, 449, 450, 451, 452, 453, 454, 455, 456, 457, 458, 459, 460, 461, 462, 463, 464, 465, 466, 467, 468, 469, 470, 471, 472, 473, 474, 475, 476, 477, 478, 479, 480, 481, 482, 483, 484, 485, 486, 487, 488, 489, 490, 491, 492, 493, 494, 495, 496, 497, 498, 499, 500, 501, 502, 503, 504, 505, 506, 507, 508, 509, 510, 511, 512, 513, 514, 515, 516, 517, 518, 519, 520, 521, 522, 523, 524, 525, 526, 527, 528, 529, 530, 531, 532, 533, 534, 535, 536, 537, 538, 539, 540, 541, 542, 543, 544, 545, 546, 547, 548, 549, 550, 551, 552, 553, 554, 555, 556, 557, 558, 559, 560, 561, 562, 563, 564, 565, 566, 567, 568, 569, 570, 571, 572, 573, 574, 575, 576, 577, 578, 579, 580, 581, 582, 583, 584, 585, 586, 587, 588, 589, 590, 591, 592, 593, 594, 595, 596, 597, 598, 599, 600, 601, 602, 603, 604, 605, 606, 607, 608, 609, 610, 611, 612, 613, 614, 615, 616, 617, 618, 619, 620, 621, 622, 623, 624, 625, 626, 627, 628, 629, 630, 631, 632, 633, 634, 635, 636, 637, 638, 639, 640, 641, 642, 643, 644, 645, 646, 647, 648, 649, 650, 651, 652, 653, 654, 655, 656, 657, 658, 659, 660, 661, 662, 663, 664, 665, 666, 667, 668, 669, 670, 671, 672, 673, 674, 675, 676, 677, 678, 679, 680, 681, 682, 683, 684, 685, 686, 687, 688, 689, 690, 691, 692, 693, 694, 695, 696, 697, 698, 699, 700, 701, 702, 703, 704, 705, 706, 707, 708, 709, 710, 711, 712, 713, 714, 715, 716, 717, 718, 719, 720, 721, 722, 723, 724, 725, 726, 727, 728, 729, 730, 731, 732, 733, 734, 735, 736, 737, 738, 739, 740, 741, 742, 743, 744, 745, 746, 747, 748, 749, 750, 751, 752, 753, 754, 755, 756, 757, 758, 759, 760, 761, 762, 763, 764, 765, 766, 767, 768, 769, 770, 771, 772, 773, 774, 775, 776, 777, 778, 779, 780, 781, 782, 783, 784, 785, 786, 787, 788, 789, 790, 791, 792, 793, 794, 795, 796, 797, 798, 799, 800, 801, 802, 803, 804, 805, 806, 807, 808, 809, 810, 811, 812, 813, 814, 815, 816, 817, 818, 819, 820, 821, 822, 823, 824, 825, 826, 827, 828, 829, 830, 831, 832, 833, 834, 835, 836, 837, 838, 839, 840, 841

[illegible][illegible]

ਅੰਤਰ-ਰਾਸ਼ਟਰੀ ਸੰਪਰਕਾਂ ਨੂੰ ਉਤਸ਼ਾਹਿਤ ਕਰਨ ਵਾਲਾ, ਸੰਸਾਰ-ਵਿਆਪੀ ਸੰਪਰਕਾਂ ਨੂੰ ਉਤਸ਼ਾਹਿਤ ਕਰਨ ਵਾਲਾ

*[Illegible handwritten text]*

॥ अथ भक्त्याः १०० श्लोकाः ॥

— 10 —







है पुरोहित रिचा उचारत येलि तमाल मंडप नच्यौ ।  
जै श्रीमद् भाँवरौ परत नटवर अंकमाल प्रिया संग नच्यौ ॥२१॥

### दोहा

जिहि छिन की यलि जाउँ सखि, जिहि छिन भाँवरि लेत  
लाल बिहारी साँवरे, गौर बिहारिनि हेत ॥

### पद

जै श्री बिहारनि गौर बिहारी लाल साँवरे ।  
तेहि छिन की यलि जाउँ सखी री परति जिहि छिन भाँवरे ॥  
हँचन मनि मरकत मनि प्रगटे यसिष जो नंद गाँव रे ।  
विधिना रचित न होय जै श्रीमद् राधा मोहन नाव रे ॥२२॥

### दोहा

निसि पिसि सिर तें परत पट, ससि चढ़नी जुय जात ।  
उठति भोग संग लात के कसत कंचुकी घात ॥

### पद

उठति भोरलात जू के संग तें कंचुकि कसति राधिका प्यारी ।  
खसि जिसि परत नील पट सिरतें ससि चढ़नी नव ओघन घारी ॥  
मन भायती लात गिरिधर की रची बिघाता सरस सँवारी ।  
जै श्रीमद् सुरत रँग भोले लरी प्रिया जुत कुंज बिहारी ॥२३॥

२१—पेरी पुरोहित=ब्रह्मना जी का मठ मानो देदी है । नटरो=मृगती  
हृषा । रिचा=रिचा; वेद मन्त्र । भाँवरौ=निगद के कवसर पर हुए हुए  
दिनी पेरी की जो प्रदक्षिणा देते हैं, हमे भाँवर देना कहते हैं ।

२२—नाव=नाम ।

२३—कंचुकी=छिन्ना । नवभावनी=नव घाती ।





यह जु एक मन बहुत टौर करि कहि कौने सब पायो  
हैं तहैं विपति जार जुबती ज्यों प्रगट पिंगला गायो" इत्यादि  
( जन-भाषुरी-सार, श्रृ ६० )

यह पद सुनकर व्यासजी का सारा विद्या-बल चूर चूर  
गया । आप उसी दिन गुसाईंजी के अनन्य भक्त हो गये ।  
व्यासजी राधा वल्लभाय अर्पण थे, किन्तु अन्य संप्रदायों में  
ऐसा भाव नहीं रखते थे । आपकी दृष्टि में संत-मात्र भगवत्  
स्वरूप थे ।

ओरछे मैं सब प्रकार का मान-सम्मान होने पर भी आप  
से छोड़ कर घृन्दायन चले आये । महाराज भुवकर शाह,  
एक भक्ति पुरुष, इन्हें लेनेके लिये जय घृन्दायन आये, तब ये  
धोर होकर यह पद गाने लगे—

घृन्दायन के रुख ( वृक्ष ) हमारे, मात पिता मुत पन्ध ।  
गुरु गोविन्द साधु गति मति नुग्र, फल फूलनि को गन्ध ॥  
निहि पीठि है अनत डोठि करि सो अंधन में अन्ध ।  
व्यास इन्हि छोड़ै शौं हुड़ाय ताको परियो कंध ॥

घृन्दायन की गुलन-सत्ताप छोड़ कर ये फिर कनो ओरछा  
हो गये । इन्होंने तत्कालीन महान्नाओं के सम्मुख में प्रज-  
पुरुषों का जो रस लूटा, वह अपनी दानों में कर स्थानों  
पर भक्ति भावना से अंकित किया है ।

व्यास जी भगवान से भक्तों को कहीं अधिक ऊंचा मानते  
थे । साधु-सेवा के लिये आपने सर्वस्व समर्पण कर दिया  
था । जाति और पद का तो आपको जरा भी मूढाहल नहीं  
था, कि आप की साजियों से प्रकट होता है—



इसके लिखने की आवश्यकता नहीं। सहृदय सुरसिक  
 इन स्वयं देख लेंगे। आश्चर्य है, व्यासजी मिथ-बन्धु-विनोद  
 साधारण धेरी के कवि माने गये हैं ! नील सत्ताजी ने  
 गत्ताजी की धानी के विषय में क्या ही सुंदर पद कहा है—

“जय जय विसद व्यास की धानी ।

मृतापार इष्ट रत्नमय, उत्कर्ष भक्ति रस तानी ॥  
 लोक वेद भंडन ते न्यारी, प्यारी मधुर कहानी ।  
 स्यादित सुख रवि उपज पावन, मृदु मनसा न श्यानी ॥  
 सक्ति अनोख विमुख भंडन की, प्रगट प्रभाव यजानी ॥  
 मत्त मधुर रसिकन के मन की रस-रंजित रत्नधानी ॥  
 सखी रूप नयनांत उपासन अनृत निकास्यो आनी ॥  
 ‘नील सखी’ प्रनमानि निम्न, लो अद्भुत कथा-भयानी ॥”  
 व्यासजी के कुछ सिद्धान्तों पद, साखियाँ और विहार-  
 ग्रन्थों पद उद्धृत किये जाते हैं ।

सिद्धान्त के पद

सारंग

राधा दत्तन मेरी प्यारी ।

सरसोपरि सपहों को ठाकुर सय मुख दानि हमारौ ॥  
 प्रथ वृन्दावन नाइक सेवा लाइक स्थान उज्यारौ ॥  
 प्रीति रीति पहिचाने जाने रसिकन को रसवारौ ॥  
 स्थान बनस दल तोवन मोवन दुख नैनन को तारौ ॥  
 अवतारौ सब अवतारन को महतारौ महतारौ ॥

१—राधाजी-जिनके हृदय में और सब ब्रजवासियों में, वैसा कि  
 श्री महादेव ने कहा है—

‘जो-किसी केरा सुता इन्द्रा-नारायण-सदृश—



ताल तमाल रसाल साल पल पल चमकत फल पात ।  
 मनहुँ गौर मुख विधुकर रंजित सोभित साँवल गात ॥  
 किंभुक नवल नयोन माधुरी विकसति हिय उरभात ।  
 मनहुँ अरार गुलाल भरे तन दंपति अनि अकुलात ॥  
 पैठे अलि अरविइ पिय पर मुख मकरंद चुचात ।  
 मनहुँ स्याम कुच कुरंगहि प्रीयन छपर मुधा बलि जान ॥  
 गावन मोर फोंकिला गावन कीर चकोर सुरान ।  
 मनहुँ राम राम नानैं दोऊ दिदुर न जानै प्रात ॥  
 त्रिभुवनको कवि कहि न सवन कहु अहुत छवि सी पात ।  
 ग्यास बगन नहि मुग कहि आवै, ज्यों गुंगो गुरखान ॥३॥

### चर्यपरी

नय नय चूड़ा नृपति मनि साँधरो,  
 राधिका तरनि मनि पट्टरानी ।  
 मेम मर तादि ईकंठ परिजंत,  
 तस्य लोक धानेन प्रज राजधानी ॥  
 मेम एजानये कोटि दाम सोचन जहाँ,  
 मुनि पारी तहाँ भरुनि पानी ।  
 मूर समि साहस एयन जन इंदिरा,  
 सरन दामो माट निगम दामो ॥

विशेषित हो रहे हैं । चर्यपरी । विदु बरचस्वना की निराले । राधिका  
 विरचयन का दूर । पुष्पाब्द का है । कीर्तनी । सुन्दर ।

१-दामोदर । २-राधिका । ३-चर्यपरी । ४-विदु ।  
 ५-पुष्पाब्द । ६-कीर्तनी । ७-सुन्दर ।









## सारङ्ग

रसिकः अनन्य हमारो जानि ।

॥ जल देवो राधा, दरनानो मेरी, ब्रज घासिन को पाँति ॥  
 गीत गुणाल, लनेज माला, निज सिन्दूरि, हरि मंदिर भाल ॥  
 हरि गुन नाम चंद भुनि नुनियत, मंजु पद्मावज, कुम फलतात ॥  
 आग्य जमुना, हरि लीला पटर्कन प्रसाद प्रान धन रास ॥  
 किया सिद्धि तिरोध लड़ संगति, दृष्टि मद्दा दृग्गदन घाम ॥  
 इहूनि भागवत, हनु नाम संघा नर्पन, नागद्री जाप ॥  
 गीरी सिद्धि लज्जमान फलपवन, दशान न देत दसोस मवार ॥६॥

नारद

ऐसे ही दमिये प्रज दीपिल ।

गुणाधुन प्रो. पद्मशरदे एभि सुनि, उद्गर प्रोविद्यन मंगलिन ।

[illegible]

१. यह एक ऐसा व्यक्ति है जो अपने इस दुखद दुख में अपने ही  
 दुख में अपने ही दुख में अपने ही दुख में अपने ही दुख में अपने ही  
 दुख में अपने ही दुख में अपने ही दुख में अपने ही दुख में अपने ही  
 दुख में अपने ही दुख में अपने ही दुख में अपने ही दुख में अपने ही



चेतहु भैया, येनि घड़ी कलि काल नदी गम्भीर ।  
व्यास घवन बलि वृन्दावन बसि, सेवहु कुंज कुटीर ॥६॥

### सारङ्ग

भजौ मुत, साँचे स्याम पिताहि ।

जाके सरन जात ही मिटिहँ दारुन दुख की दाहि ॥  
रुपायंत भगयंत मुने में छिन छाँडी जिनि ताहि ।  
तेरे सकल मनोरथ पूजैं जो मथुरा लौं जाहि ॥  
यँ गोपाल दयाल दीन तू, करिहँ रुपा निवाहि ।  
आँर न ठौर अनाथ दुखिन को मैं देख्यो जग माहि ॥  
करना घरनालय की महिमा मो पै कही न जाहि ।  
व्यास दास के प्रभु को सेवत हारि भई कहू काहि ॥१०॥

### सारंग

धर्म दुर्य्यो कलिराज दिखारि ।

कीनों प्रगट प्रताप आपनी सब विपरीति चलाई ॥  
धन भी मीत धर्म भी पैरी पतितन सो हितवाई ।  
जागी जतों तपो संन्यासी प्रत छाँड़्यो अकुलाई ॥  
घरनाश्रम की कौन चलाई संतन हूँ मैं आरि ।  
देखत संत भयानक लागत भावते समुद्र जमाई ॥  
संपति सुखत सनेह मान चित ग्रह व्याहार बड़ाई ।  
कियो कुमंघी लोभ आपुनो महा मोह जु सहारि ॥

१०—दाहि=दाह, जहन ।

११—हितवाई=भिजना । बन=घरना करना कर्म । भावते=ध्याते । घन-  
गां=जलघन, किसी से जबरदस्ती कुछ लेने में ही बाधरूप मह गया है ।



## सारंग

जो मुख होत भक्त घर आये ।

सो मुख होत नहीं घेहु संपति, बांझहि घेया जाये ॥  
 जो मुख होत भक्त चरनोदक पीयत गात लगाये ।  
 सो मुख सपनेहु नहि पैयत कोटिक तीरथ न्हाये ॥  
 जो मुख भक्तन को मुख देखत उपजत दुख विसराये ।  
 सो मुख होत न कामिहि कयहुं कामिनि उर लपटाये ॥  
 जो मुख कयहुं न पैयत पितु घर सुत को पूत खिलाये ।  
 सो मुख होत भक्त घचननि मुनि नैननि नीर बहाये ॥  
 जो मुख होत भिलत साधुन सां छिन छिन रंग बढ़ाये ।  
 सो मुख होत न नैक व्यास को लंक सुमेरु पाये ॥ १७ ॥

## सारंग

हरि विनु को अपना संसार ।

माया मोह बंधो जग बूझत, काल नदी को धार ॥  
 जैसे संघट होत नाव में रहत न पैले पार ॥  
 सुत संपति दारा सो ऐसे दितुरत लगै न पार ॥  
 जैसे सपने रंक पाय निधि जाने कहू न सार ।  
 ऐसे छिन भंगुर देहो के गुरगहि करत गँवार ॥  
 जैसे झंझरे टफत डोलन गनत न खाइ पनार ।  
 ऐसे व्यास बहुत उपदेशे मुनि मुनि गये न पार ॥ १८ ॥

१७—चरनोदक=पैरो का पानी । नैननि नीर बहाये=नैन के पानी बहाने में । रंग=रंग ।

१८—संघट=जाप । पैले पार=दरजे पार, कम पार । दारा=जो ।  
 छिन भंगुर=निरुत्तम । गुरगहि=गुरग । पनार=जाना । मुनि=पार=कानो-  
 परं मुन कर भी मुक्त नहीं हुए ।

रसखानि सखे तन पानपटा,  
 सत दामिनि को दुनि लावनि है।  
 यह यौसुरी को घुनि कान परे,  
 कुम्भकानि हियो तजि भावति है ॥१॥

८५

ग्रज में दूँवो पुरानन गानन,  
 वेद रिचा सुनि शौगुने वापन।  
 दूँवो सुन्धी कवहुं न कित्,  
 यह कैसे सरूप श्री कैसे सुभाषन।  
 देरत देरत हारि पर्यो रसखानि,  
 बतायो न लोग सुभाषन।  
 देखो, दुर्यो यह कुंज कुटीर में,  
 पैठो पलोटत राधिका पायन ॥१॥

८६

खंजन नैन कंदे पिजरा सुषि,  
 नाहि रहै चिर कैसे ह मार।  
 छूटि गई कुलकानि समी,  
 रसखानि सखी मुसकानि सुहार।  
 चित्र कंदे से रहै मेरे नैन न  
 येन कंदे मुख दोनी उहार।

११—रिचा=रचा, रंग । वापन=वापन से । निम्न=नीचे ।  
 पलीला जाने जाने । दुरो=दूरा दूरा । पयो=पदा ।  
 है ।

१२—रिच=रंग है, सोदिन है । चित्र = चित्र । नैन=नेत्र ।





मार रो वा मुख की मुसकानि,  
सँभारी न ऊँहै न ऊँहै न ऊँहै ॥७

ॐ

रंग भरयो मुसकात लला,  
निकस्यो कम कुंजनि तँ सुगर्भा ।  
मैं तबहीं निकसी घर तें,  
तकि मैं यिमाल की घोट लगी ।  
रसखानि सौ घूमि गिरी घरती,  
हरिनी जिमि वान लगे गिरिजा ।  
हृदि गयो घर को सय बंधन, <sup>अयोध्या</sup> <sup>नरसिंह</sup>  
हृदिमाँ आरज लाज बड़ा ॥८॥

ॐ

आहुरी मन्दलला निकस्यो,  
तुलसी बन तें बनके मुसकाये ।  
देखे बनै न बनै कहते,  
अब सो मुख ओ मुख में न समझे ।  
हो रसखानि विलोकिये को,  
कुल कानि को काज कियो हिय हने ।  
आर गर अलयेली अखानक,  
ये भट्ट लाज को काज कहानो ॥९॥

मुसकानि..... ऊँहै=मुसकान देन कर मन हाथ में न रहेगा ।

१७—रंग भरयो=वेषाभूषण में सम्यक् । घूमि=चर सरा ।

बान=बायोकिन मर्यादा, चानिबन ।

१८—बनै=छाया हिये हय, बना बना । हने=होना ।

धोरसखानि

ॐ ३५२५

पैनु यजायत गोधन गावत,  
ग्वारन के संग गोमधि आयो ।

पांसुरी में उन मेरोई नाम,  
हैं साधिन के मिस डेरि सुनायो ॥

ये सजनी सुनि सास के आसनि,  
नन्द के पास उसासन आयो ।

कैसी फरी रसगानि तहों,  
चित चैन नहीं, चित चोर दुरायो ॥१६॥

ॐ

रो सुनाय चितैयें को मारि रो,  
लाल निहारि कै पैंसी-यजाई ।

या दिन तैं मोहि लागी ठगौरी सी,  
सांग कहैं कोई पायरी आई ॥

यों रसगानि धिर्यो तिगरो,  
ग्रज जानत हैं कि मेरो जियराई ।

जो फोड चाहैं भली रूपनो,  
तौ सनेह न काहूँ सौं कीजिये मारि ॥

ॐ

नागर पैसा हो, गोकुल में,  
मग रोदन संग सरा दिगु तैं ॥

१६—नित=रहना । सं=नन्द । चित चोर दुरायो=चोर  
मेरे मन को चुरा गया है ।

१७—जिन्हें को=देखने का । ठगौरी=भोड़नी । गिरांगी=

पी ।



फाह सों माई कहा कहिये,  
 सहिये जु सोई रसखानि सदायै ।  
 नेम कहा जय प्रेम बियो,  
 तय नाचिये सोई जो नाच नचायै ॥  
 चाहन हैं हम सौं कहा सखि,  
 क्योंहु बहै पिय देखन पायै ॥  
 पेरिये सों जु गुपाल रच्यो,  
 नी पायों सी सपै मिलि जेरी कहायै ॥२३॥

२४

प्रीतिहि सी गजिका गज गीध,<sup>१</sup>  
 अजामिल सों बियो सों न निहारो ।  
 गीधन मेहिनी कैरे नरी,  
 प्रह्लाद सों कैरे हयो दुख भायो ॥  
 बहै सों सोन बहै रसखानि,  
 कहा कहिये रहिनेई विचारो ।  
 बीन सों संक परो हैं तु मागन,  
 सागरन हासो हैं सागरन हासो ॥ २४ ॥

२५

१।—गजिका गज गीध । गजिका गीध की गज । गीधिका गीध । गीध की गज । गीधिका गीध । गीध की गज ।

२।—गीधन मेहिनी गीधन मेहिनी । गीधन मेहिनी । गीधन मेहिनी । गीधन मेहिनी । गीधन मेहिनी ।

३।—गीधन मेहिनी गीधन मेहिनी । गीधन मेहिनी । गीधन मेहिनी । गीधन मेहिनी । गीधन मेहिनी ।

४।—गीधन मेहिनी गीधन मेहिनी । गीधन मेहिनी । गीधन मेहिनी । गीधन मेहिनी । गीधन मेहिनी ।



कंचन के मंदिरन शीति उहरान नाहि ,  
 सदा दोषभाव लान भातिक उडारे सौ ।  
 और प्रभुताई अब कहाँ लौ बचानौ ,  
 प्रतिहारि की मोर भूष दरत न द्वारे सौ ॥  
 गंगा न नहार मुझाहन ह लुटाइ घेद ,  
 सोने दोरगार ध्यान काँजन सकारे सौ ।  
 ऐसे ही भये सौ फूरा कानों रसखानि ओ पै ,  
 बिस्त है न कौनी मोति पान पद धारे सौ ॥३१॥

८७

गोरज दिपजै भात लहलही यनमान ,  
 आगे गैयाँ पाछे खात गाई मृदु खानरी ।  
 तैसाँ धुनि दाँसुरी की नधुर नधुर तैसाँ ,  
 पंक चितयनि मन्द मन्द मुसकान सौ ॥  
 बदन बिटन के निकट तन्हुँओं के तट ,  
 झटा झड़ि देख पान पद फहरान सौ ।  
 रस बरसावै नन नयन दुन्दावै नैन  
 माननि रिलायै यह आवै रसखान सौ ॥३२॥

८८

एरी, जात्र काल्हि सब लोक भाज खान दोऊ ,  
 संगे हैं सदै दिधि सदेह सरसाययो -

११—एरी मोहलगे मे । एरी मोहलगे मे । एरी मोहलगे मे ।  
 ॥ एरी मोहलगे मे । एरी मोहलगे मे । एरी मोहलगे मे ।

१२—एरी मोहलगे मे । एरी मोहलगे मे । एरी मोहलगे मे ।  
 एरी मोहलगे मे । एरी मोहलगे मे । एरी मोहलगे मे ।

यह रमखान दिन है मैं बान फैलि जैहै,  
 कहाँ लौं सम्मानो-चंद हाथन विरागयो ।  
 आज हौं निहाखो घोर, निपट कलिन्दी तीर,  
 दोउन को दोउन सौं मुख मुमघरयो ।  
 दोउ परैं पैयाँ दोउ लेन हँ बलैयाँ उन्हें  
 भूल गई पैयाँ, उन्हें गार

६६

आपनो सो दोटा हम सबही को जानति हैं,  
 दोऊ प्राणी सबही के काज निज घासी ।  
 ते तो रसखानि सब दूरि तैं तमासों देखैं ।  
~~सखी~~ सखि ननूजा के निकट नहिं आसी ।  
 धान-दिन धान अनदिनुन सौं कहाँ कहा,  
 दिनु जे जे आवे तेऊ लांचन दुपारी ।  
 कहा कहीं आली गाली देन सब डाली हाथ !  
 मर-वनमासी को न काली तैं छुट

६७

६६—वीर=वे मली । निपट=चढ़ेगे म; पराजित म । मुन  
 वन ही मन मुमगरना । पैयाँ=पैर । उन्हें=( १ ) भीड़गरी  
 गरिमासी को ।

६७—दोटा=वकूता । दोऊ प्राणी=नंद और जगदीश । मरि  
 नु=पुनी क्यूना । लांचन दुपारी=श्रीम विपने में, जो वृत्त  
 योग्य । वनमासी=वन मान्य वानर माने श्रीकृष्ण । शरीर  
 काल, जो यकृत में रहता था और जिसे श्रीकृष्ण ने नाथ निर  
 कल्पक रूप का कला ही कल्प कहलवाया है ।

# प्रेम-वाटिका

## दोहा

पंक विलोकनि हँसनि मुरि, मधुर धैर रससानि । X  
मिले रसिक रसरज दोड, हरनि हिये रसखानि ॥१॥



मोहन हृयि रसखानि लखि, अय दग अपने नाहि । X  
ऐसे आवत धनुष से, छूटे सर से जाहि ॥२॥



या हृयि पै रसखानि अय, पारो कोटि मुनोज़ ।  
जाको उपमा कविन नहि पाई, रहे सु खोज ॥३॥



प्रेम अयनि धौ राधिका, प्रेम धरन नैद नंद ।  
प्रेम वाटिका के दोड, नानी मातिन हंड ॥४॥ ये



१—मुरि=मुख पर । रससानि=रसीते ।

२—ऐसे.....जाहि=जाते जोड़ने के समय में धनुष के तीरे के समान अपने पास गिये जाते हैं, पर गन्धर्वग जने पर बाण की नाश कर जने हैं । मदन पर भी जाने पर गिर पाय नहीं जाते । इनो समय का वह निम्नलिखित दोहा रसिक कहें—

“हरि सोन धेरी रंग, दग जगत पर दुरि ।

सौच कानुनो होर को, हरि रिजो दुनि दुनि ॥”



हाने प्रेम प्रेम सब कोऊ कहत, प्रेम न जात को।  
आ जुन जाने प्रेम तो, मरै जगत को।

ॐ

प्रेम अगम अनुपम अमित, सागर मरित बरत।  
जो आयत पहि दिग्य बहुरि, जात नहीं रसवान।

ॐ

प्रेम धारनी छानिकै, बरत भये उलझाव।  
प्रेमहि ते बिष पान करि, पूजे जानि गिरि।

ॐ

प्रेम रूप दरपन भरो, रचै अङ्गो डं।  
धामे अपना रूप कह्यु, लखि परिहै।

ॐ

✓ कमल तंतु सों छीन, अरु कठिन लङ्गम की धर।  
अति तृषां टेढ़ो बहुरि, प्रेम पथ अनिहार।

ॐ

लोक वेद मरजाद सब, लाज काज भरो।  
देन बहाम प्रेम करि, विधि निषेध को भरो।

(—) श्री आनन... ..रसवान-प्रेम मित्र के पास गया  
हैं संगार-आनन में नहीं लौटना। श्रीग में श्री किया ?—

“बहुमन्त्र न निवर्तन्ते तद्वाम वरम वम ।”

—श्रीग-गिरि श्री ।

—कर्म-रसवान का दूत भेष; प्रेम राज में जाने ही को  
३ का मन्त्र को कायदा और कायदा दिग्य सागर दिग्य को।







याही तैं सब मुक्ति तैं, लही यद्गार प्रेमी  
प्रेम भये नसि जाहि सब, वैधे जगत

२४

हरि के सब आधीन, वै हरी प्रेम काहेन  
याही तैं हरि आपुहों याहि यद्गार

२५

येद मूल सब धर्म, यह कहैं सर्व छुति मर।  
परम धर्म है ताहु तैं, प्रेम एक अनिवार

२६

अद्वि जमोदा मन्द अरु, रगत याम सब धार।  
वै या जग में प्रेम की, गोपी भई अनार

२७

या राम की कहु माधुरी, ऊर्ध्व लदी मराहि।  
पाय कदुरि मिटास अम, अय दुजो को मराहि

२८

२६—दग दीदे में मुक्ति ले प्रेम का दत्ता इच्छा दत्तगता ॥  
मुनसीदग भी करने हैं—

“ममून दत्तामक मोच्छ न लेरी ॥”

२९—अनिवार=अनिवार्य; परमावश्यक ।

३०—अनार्य=अनुराग ।

३१—दग दीदे की मुक्ति केवि नारद जी भी करने नहि शक  
२६२—

“यथा यम गोविन्दनाम् ॥”















छवि ठाढ़ी कर जोरे, गुन फला चौरे ढोरे,  
 दुति सेयै तन गोरे रति बलि जाति है ।  
 उजराई कुंज येन सुधराई रची मैंन,  
 चतुराई चितै नैन अति ही लजाति है ॥  
 राग मुनि रागिनी ह, दोत अनुराग बस,  
 मृदुताई अंगनि हुबति सकुचानि है ।  
 हित भूय मुकुमारो, पुतरान ह तें प्यारी,  
 जीवति देखे बिहारी मुख सरसाति है ॥ ४ ॥

८५

माधुरी की कुंज तामें मोद की लै सेज रची,  
 तिहि पर राजै अतयेले मुकुमार री ।  
 रूप तेज मोद के जुगुल तन जगमगै,  
 हाय भाय चातुरी के भूपन सुदर री ॥  
 नेह नीर नैननि की सैननि में रहे भोजि,  
 कौन रंग घाड़्यो जहाँ बोलियोउ भार री ।  
 अति ही आसक समी रही मोहि जोहि जोहि,  
 हित भूय प्राननि को इहई अहार री ॥ ५ ॥

४—मुधराई=शैष्या । मृदुताई...सकुचानि है=हृदय कोमलता कोमल  
 र की धुरर लज्जित हो जाती है । पुनरी=नेत्री की पुनरी ।

५—जुगुल तन जगमगै=भी राधाकृष्ण के दिव्य शरीर प्रकाश  
 रहे हैं । सुदर=सुंदर । बोलियोउ=बोलीया भी । जोहि जोहि=देख देख  
 । अहार=भोज्य; इष्ट ।



बिल जुगुल हँसि चिनयनि ठाढ़ो पासि.

भानो निहि उर नई नेह बेलि धई है ॥

हेत ध्रुव नीरज से नीर भरे ढरे नैन,

बोलति न कहूँ धैन चित्रसी है गई है ।

नेन द्वाइ लीने रूप परी नय प्रेम कूप,

धाकी गति जानै साँई जिहि अनभई है ॥ = ॥

सवैया

रूप की रासि कितोरे कितोरी,

रँगो रसकेलि निकुंज विहारा ।

माते अनंग प्रवीन सवै अंग,

फूल सरोरुह ते मुकुमारा ॥

इसी उर नैननि में दिन रैनि नसी

भन के जिते आदि विहारा ।

जाँचत बात न शीर कहूँ ध्रुव,

देहु प्रिये ! रस प्रेम की धारा ॥ ६ ॥

कवित्त

सदज सुभाउ पर्यो नवल कितोरी जू को.

मृदुता दयालुता कृपालुता की रासि है ।

नेक है न रिस के ॥ भूले है न होत सन्तो,

रहन प्रसन्न सदा हिये मुख रासि है ॥

=—साँई है—जोई है । शरीर=गर्भित, नव । चित्र सी है—साँई है—चित्र के ।

। मदी है, हिनी दुरती नक नगी है । अनभई=अनुभव ।

इम छंद में लगन का बड़ा हो मनोउ चित्र साँका मय है ।

६—प्रसन्न=सदय । नसी=जात बने । निवे=हो प्यारी गये ।

१०—मृदुता=मृदुता ; दयालुता ; कृपालुता । मृदुता=मृदुता ; दयालुता ; कृपालुता ।



गनि दृष्ट नै नलि यादी, पर नई प्रेम ग्रंथि अति गाढ़ी ।  
 १ देखन फल नहि नार्ह, तिनको प्रेम कहाँ नहि जाई ॥  
 २ सुभाइ जनमनी देखै, निमिषनि कोटि कलप सम लेखै ।  
 चितवति जय प्रान्तम नार्हीं, सोई कलप निमिषाँ जाहौँ ॥  
 नि हँसनि ताल को भावै, नेह को देवाँ निनहि मनावै ।  
 ३ प्रेम दिनदि दिन होई, यह रस दिरहो समुझै कोई ॥  
 ज्यों रूपहि देखन नार्ह, प्रेम रूप को ताप न जाई ॥२॥

### दोहा

प्रेम रूप को ताप ध्रुव, कैसेहुँ कहाँ न जात ।  
 रूप मोर विरक्त गहँ, मज न नैन अघात ॥३॥

### चौपाई

१ प्रेम तिहि ठाँ को कहिये, हुआँ पौद् चितवत सखि रहिये ।  
 य सुप्रेम एक रस धारा, अति अगाध तिहि नाहिन पारा ॥  
 २ मधुर रस प्रेम को प्रेमा, पाँयत नाहि भूति गये नेमा ।  
 ३ सगी रहै दिन राती, हित भुव जुगुन नेह नदनातो ॥४॥

### दोहा

तनिधि रनिफ किनोर विधि, नदयति परम प्रदीन ।  
 हा प्रेम रस मोह नै, रहति निरंतर मीन ॥५॥

१—देखै=निमी मज । कनिह=कनि । कनिह=कनिह । ॥२॥=देखै ।  
 २—सुप्रेम=सुप्रेम देव । अति अगाध=अति अगाध । ॥३॥=देखै ।  
 ३—मधुर=मधुर । प्रेम को प्रेमा=प्रेम को प्रेमा । ॥४॥=देखै ।  
 ४—नदनातो=नदनातो । ॥५॥=देखै ।









अवतंये सदै सहचरो, मत्त रहन उड़ो रंग भरी ।  
 त को जासो रचि रहै, भाग पाइ सो कहु इक लहै ॥  
 यनसरन भाव धरि आवै, सो या रस के स्वादहि पावै ।  
 कपट भ्रम दिन दुलरावै, ताको भाग कहत नहि आवै ॥  
 मंजरि रंग लागै जाके, प्रेम कमल फूलै हिय ताके ।  
 त जाके उर न सुहाई, ताको संग देनि तजि भाई ॥ २ ॥

### दोहा

या रस सो लाग्यो रहै, नितिदिन जाको चित ।  
 ताको पद रज सोल धरि, बंदत रहु ध्रुव नित ॥३॥

### प्रेम लता

### दोहा

जिन नहि समझ्यो प्रेम यह, निनको कौन कलाप ।  
 दादुरा जल में गहै, जल नोन मिलार ॥१॥

### चौपाई

जि पान मुख चाहन रूपने, निनको प्रेम बुदत नहि सपने ।  
 । या प्रेम हिंडोरे भूलै, निनको सार सदै मुख भूलै ॥  
 न रसासव चारों अवहो, कारे रंग चढ़ै ध्रुव तवहो ।  
 । रस में जय मन परै सारै, मोन नोर को गनि है जाई ॥

१—नंद=नरसिंह । मंजारी=मंजरी । मुख रुप । कपटि=कपट । तसे  
 त्र द्र । मान=मान । दुलराई=दुलरी में प्यार को ।

२—निन=निन ।

३—प्रान=पान । निगार=जल वा) प्रेम ।

निमि दिन ताहि न कळू सुहाई, प्रीतम  
 जाको जासोई है मन मान्यो, सो है ताके  
 अरु ताके अँग सँग की याने,  
 कहे मोह जो ताकोई भावै, ऐसी नेह की  
 ओ रस लाल लड़ेती माहीं, ऐसी प्रेम और की

### दोहा

ग्रज देवी के प्रेम की, बधी पुत्रा प्रति हूँ  
 प्रत्यादिक बाँधन रहै, तिनके पद की हूँ ॥



मन मन रूप सुभाष मिलि, मैं रहै रहै न  
 जीवनि मुमकनि चितहो, अथ रामा ल

### चौपाई

सुन्दारन घन राजन कुँज, विहरन नहीं रमिह हूँ  
 एक प्रान विवि दह है दोऊ, निन समान प्री की  
 सब पर अधिक जानि यह प्रेमा, नाके बस मे न



१—नवाहूँ दिव्यमह हो जाना है, वन वन ॥ २ ॥  
 कन नदीनी—नीरुज और गरिहा ।

३—चौपाई का अर्थ है कि वहाँ न ॥ २ ॥  
 ४—॥ २ ॥ ॥ २ ॥ ॥ २ ॥

५—॥ २ ॥ ॥ २ ॥ ॥ २ ॥

६—॥ २ ॥ ॥ २ ॥ ॥ २ ॥



दोषों के लिये तब तक प्रार्थना करे ।

तब ही तब प्रार्थना करे ।

दोषों के लिये तब तक प्रार्थना करे ।

प्रार्थना करे तब तक प्रार्थना करे ।

तब ही तब प्रार्थना करे ।

प्रार्थना करे तब तक प्रार्थना करे ।

प्रार्थना करे तब तक प्रार्थना करे ।

प्रार्थना करे तब तक प्रार्थना करे ।

२००

आत्म साधना प्रथम

आत्म साधना प्रथम

आत्म साधना

आत्म साधना

आत्म साधना के लिये तब तक प्रार्थना करे ।  
आत्म साधना के लिये तब तक प्रार्थना करे ।

आत्म साधना के लिये तब तक प्रार्थना करे ।

आत्म साधना के लिये तब तक प्रार्थना करे ।

आत्म साधना के लिये तब तक प्रार्थना करे ।

आत्म साधना के लिये तब तक प्रार्थना करे ।

आत्म साधना

आत्म साधना के लिये तब तक प्रार्थना करे ।

# श्रीगुरुदेव

ऐसा रहितु न भवति, न भवति न भवति न भवति ।  
 न भवति न भवति न भवति न भवति । २ ।

ॐ

ऐसा रहितु न भवति, न भवति न भवति न भवति ।  
 न भवति न भवति न भवति न भवति । ३ ।

ॐ

ऐसा रहितु न भवति, न भवति न भवति न भवति ।  
 न भवति न भवति न भवति न भवति । ४ ।

ॐ

ऐसा रहितु न भवति, न भवति न भवति न भवति ।  
 न भवति न भवति न भवति न भवति । ५ ।

ॐ

ऐसा रहितु न भवति, न भवति न भवति न भवति ।  
 न भवति न भवति न भवति न भवति । ६ ।

ॐ

ऐसा रहितु न भवति, न भवति न भवति न भवति ।  
 न भवति न भवति न भवति न भवति । ७ ।

ॐ

१—ऐसा रहितु न भवति ।

२—ऐसा रहितु न भवति ।

३—ऐसा रहितु न भवति, न भवति न भवति न भवति ।

४—ऐसा रहितु न भवति, न भवति न भवति न भवति ।

५—ऐसा रहितु न भवति, न भवति न भवति न भवति ।





भूलिहु मन दीजै नहीं, भक्तन निन्दा शोर ।  
होत अधिक अपराध तिहि, मति जानहु उर थोर ॥१४॥

८५

सेवा करत में भक्त जन, होइ प्राप्त जो आइ ।  
सो सेवा तजि येगि ही, अरचहु तिनको जाइ ॥१५॥

८६

भक्तन देखे अधिक है, आदर कीजै प्रीति ।  
यह गति जो मन की करै, जाइ सकल जग जीति ॥१६॥

८७

जो अभिमान न कीजिये, भक्तन सोँ होइ भूलि ।  
मुपन्न आदि हूँ होइ जो, मिलिये तिन सोँ फूलि ॥१७॥

### कुण्डलिया

यहु रीती थोरी रही, सोई रीती जाइ ।  
हित ध्रुव येगि विचारिकै, यसि वृन्दायन आइ ॥  
यसि वृन्दायन आइ, लाज तजिकै अभिमानहि ।  
प्रेम लीन है दीन, आपको तन सम जानहि ॥  
सकल सार को सार, भजन तू करि रस रीती ।  
रे मन सोच विचार, रही थोरी यहु रीती ॥ १८ ॥

१४—सेवा=भगवत्-सेवा, कर्चा पूजा ।

१५—भूलि=प्रसन्न होकर ।

१८—थोरी रही=थोड़ी दायु और बची है ।

## सोरठा

सुन्दायन रसरति, रहै विचारन विरह हू।  
पुनि जैहै बय बीति, भजिये नवल हिसोर हू।

## दोहा

दुरलभ मानुस जनम है, पैवन वेह मँझ।  
सोरें देखी कौन बिधि, यदि भजन बिनु जनि।

७५  
विषई जम में मीन उयो, करन कलौज हार।  
नहि जानत दिन बाल बसु, रह्यो ताकि धरि पार।

७६  
ज्यो मृग मृगियन अप सँग, किरनमत मन की।  
जानन नाहिन पारधी, रह्यो काज मर सती।

७७  
निसि वासर मग करतसी, लिये बान कर हरी।  
कागद सम भर आयु नय, दिन २ कलन तरी।

७८  
जिहि तन को सुर आदि सब, बँधत है दिन हरी।  
सो पाये मनिहीन है, कृपा मँयायन तरी।

७९  
रे मन, प्रभुना कालजी, करहु जनन है मँ १।  
ए गिरि भजन कुठार सों, काटत ताही मँ १।

१०—वेद-विद्या प्रहार।

११—एक बलि-वन जगा कर, प्रेम में प्रहार।

१२—हरण-वेदी।



प्रेम विनाश उपास, रही इत रस मन मारी।  
निहि सुख को कह कही, मोरि मनि है सम मारी।  
दिन ध्रुव यह रस अनि सरस, रमिनि नियो प्रेम।  
मुक्ति छीड़े युगत नहि, मानगरोपर हम॥१॥

५४

मेरे दिव्य मैं निरनिधे, नय विमार रस रानि।  
मिथयनि अनि अनुगत की, करन मद मृदु हानि।  
करन मद मृदु हानि, दांड निज प्रेम प्रहामदि।  
छुके रहन मदमन, रानि दिन मदन विनामदि।  
दिन ध्रुव दधि मों कुंज में है समनि मुत्र वैने।  
मेरी मनि इन नादि कहे उपमा है वेने॥१॥

५५

सुन्दरिनिन निमिज है, निनि विवि माने छानि।  
मदन नही केने रही, लाया अगन नानि।  
मोनों अगने नानि, मृदु वस्तु समुपन मारी।  
नटमनिदि नि मृदे काय के मनिपति मारी।  
प्रमत्ता पुनित निरंज यम अदमन है रस का मदन।  
मंजुन नाइकी लाज अह, वेगो है सुन्दरिनिन॥१॥

५६

- १—हे सुन्दरिनिन निमिज है, निनि विवि माने छानि।  
२—सुन्दरिनिन निमिज है, निनि विवि माने छानि।  
३—सुन्दरिनिन निमिज है, निनि विवि माने छानि।  
४—सुन्दरिनिन निमिज है, निनि विवि माने छानि।



मंजु के आदेश ने इन्होंने सतमई अथवा बसंत, उमकी रखना का एक मात्र ध्येय उत्पन्न किया। हममें हमें संदेह है। विद्वान्माल जी स्वयं निगते हैं—

“हृदयं वाचं प्रयत्निह को, एतं विद्वान्मालं।

करी विद्वान्मालं, मरी अनेक सत्तरी।

विद्वान्मालजी एक स्वतंत्र अध्यापक के बरि थे। महाप्राज्ञों के अपनी बरिना स प्रसन्न इतना कि मात्र ध्येय नहीं था। इन्होंने बरिना बनायी, और बरि, निय बनायी। सतमई के गुरुम पदवीलन हुना है, चलना है कि उनके निर्माण वाल स का। क प्रयत्न है, पत्तिर्नन हूय। यह प्रयत्न नाश क अ ध्येय में है। बरि, बाद वरि में इनका जी उद्यत गया। बरि महाप्राज्ञ अहंकार के आगे इनकी स्वतंत्रता स बरि। निरंज और वैराग्य का उद्यत हूय। बरि, बरि, बरि में इनका मन कि अन्तः। निगते हैं—

वयं वां देवस्य कोन है, एतं ॥ एतं सत्तरी

मुनहु नागं उद्यत गुरु, उद्यतवयं उद्यत वरि

भावे गुरु विमल, विमलः वरि ॥

मुनहु वरि वरि सत्तरी, उद्यत वरि वरि

इस समय उद्यत विमलः वरि वरि वरि वरि

वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि

वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि

वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि





संमारी कवि भी नहीं थे। इनका सम्बन्ध  
था। प्रज और प्रजभाषा के साथ तो इनका सम्बन्ध  
था। जनमर्द के पद्य-श्रीकाकार कृष्ण कवि कथाही दस  
गये हैं—

नय है—  
 "अज्ञ भाषा करनी कथिन, बहु विधि बुद्धि विभिन  
 मय को भूषन समझें, करी विद्वान्मय"  
 इन मय नामों को मोच कर हम प्रस्तुत मयों की  
 ज्ञान के सम्मिश्रित करने का लोभ संशय नहीं -  
 समझें के कुछ उद्योगम दोहें नीचे विनं जानें हैं—

दीर्घ

( मेरी भव नाथा हरी, नाथा बागि में  
 . आ मन की भाई गने, क्याम हरिण पुनि में

१५  
[साम सुदृढ कटि वायुर्गो, वर सुगमो उर उर  
यद धानिक सो मम वसो, मया विहायी उर]

[illegible][illegible]

“अहो नमो भगवते वासुदेवाय”

[illegible][illegible]

*[Faint handwritten notes at the bottom of the page]*

मोहन मूरति स्याम की, अति अद्भुत गति जोय ।  
चसति सुचित अंतर तऊ, प्रतिबिंबित जग होय ॥३॥



सखि, सोहति गोपाल के, उरगुंजन की माल ।  
याहर लसति मनो पिये, दावानल की ज्वाल ॥४॥



मोर मुकुट की चन्द्रिकाणि, यों राजत नंदनन्द ।  
मनु सखिसेखर के अकस, किय सेखर सत चन्द ॥५॥



नाचि अचानकह उठे, यिन पायस बन मोर । ३  
जानत हों नन्दित करी, इहि किन्नि नन्द किमोर ॥६॥

१—गनि=गान । मोय=देवो । प्रतिबिंबित जग होय=संगमर भर में  
गिरि हो रही है; घट घट में व्यापक है ।

इस दोहे में दार्शनिक चमत्कार है । ब्रह्म स्वतः प्रकाशरूप होने के  
लिये, माया से छायादिता होने पर भी, सर्वत्र देदीप्यमान हो रहा है ।

४—गुंजन=गुंफा । नगति=भक्तकमी है । दावानल=वन में लगी  
आग ।

दाशानव—एक बार ब्रह्म के एक वन में, जहां गान गाये चरा रहे थे,  
हो प्रसन्न आग लग गयी । आतं गान और गीतोंको देखकर भीहृष्य  
दाशानव की देखते देखते पान कर गये । यहां पर गुंफाओं की लाल  
ग दाशानव की लपट के समान दिखलाई देती है ।

५—सखिसेखर=शिष्यी । अकस=दूध, होड़ । सेखर=गिरि ।

६—नन्दित=आनन्दित । नंद किमोर=भीहृष्य ।

भीने मोर के समान भीहृष्य को देखकर मोरों की घनघटा का चम  
गया ।

जहां जहां आदो लख्यो, स्याम सुभग सिमरै।  
वनहं दिन दिन गहि रहत, दगनि अजौ यह छैरै।

६२

मकरांगन गोपाल के, कुंडल सोहन कान।  
धरयो समर हिय गढ़ मनहुं, ज्योंही समत निबर।

६३

तजि मोरघ हरि राधिका नन दुति करि अनुता।  
जिहि अज केलि निकुंज मग, पग पग होत प्रदल।

६४

नित मति एकत ही रहन, धूम धरत मन दल।  
अदियन सुगुल निमोर लजि, लोचन जुगुन दल।

६५

७—सुभग=सुन्दर। गहि रहत=रहने लगी है, लीन होती है।

८—मकरांगन=मधुरी के आसन वाले। नमर=नर, दल=

बादल का दल जिया है, उसमें कामदेव प्रवेश का दल।  
के द्वार पर मिलेदार कामदेव की कूटन कपी पुत्राये होति।

९—नरदेवि=मान-गत। पदार्थ=तीर्थयात्रा, गगन का  
दुआ हो।

प्रदान में गगन-पुत्रा-नारण्यी का संग्रह है। भीमों का यह  
संग्रह, दाना और भाग्य है। कदा भी राजा कृष्ण के अर्पण  
मिलेगी या मारी है।

चिरजीवो जोरो जुई, क्यों न सनेह गँभोर।  
को घटि ये हृदभानुजा, वै हलधर के घोर ॥११॥

८९

प्रलय करन चरयन लगे, जुरि जलधर इक साथ।  
नुरूपति गर्व हन्यो हरपि, गिरिधर गिरि घर हाथ ॥१२॥

९०

मोर चन्द्रिका स्याम सिर, चढ़ि कत करत गुमान।  
लखियो पाइन पै लुठत, नुनियत राधा नान ॥१३॥

९१

११—हृदभानुजा=नारायण हृदभानु का कन्या: रूपम अर्थात् बैज  
भानुजा ( बहिन ) । हलधर=वल्लभ: बैव । घोर=भार्य ।

जानि जानि में ही गहरा प्रेम होता है। यहाँ भीहृन्म और राधिका  
में ही राजहृन्म के हैं। अथवा, रहस्यार्थ से, राधिका जी बैज की बहिन  
तो हृन्म बैव के भार्य ।

१२—जुरी=इच्छे होकर । गिरिधर=( १ ) गोकर्ण पहाड़ उठाने  
भीहृन्म ( २ ) पहाड़ को धारण कर, उठा कर ।

१३—लखियो=देखो ( बुद्धिपूर्वक ) । लुठत=रोटती, दुर्ग । नान=हठ  
माना ।

राधिकाजी को मनाने समय भीहृन्म उनके पैरों पर कदम मस्तक  
में, इन समय नाथे पर कड़ी हुई मोर चन्द्रिका ( मुकुट ) भी चरणों  
में लोढ़ने लगेंगी । सब गर्व सब ही जायगा !

साहन छोड़े पीत पट, स्वाम सलौने गल।  
मनों नील मनि सैल पर, आनख पर्यो प्रभात।

अधर धरन हरि के परत, ओठ दीड पट जेति।  
हरे बाँस की बाँसुरी, इन्द्र धनुष मो

किती न गोकुल कुलवधू, काहि न किन मिलहोत।  
कोने तजी न कुल गली, है मुरली मुर मोत।

हुटी न मिमुता की झलक, भलखयो जोषन झं।  
दीपति देह दुहनि मिलि, रिपन सफता रस।

इक भीजे चाहने परे, पूड़े बड़े हजार  
किन न योगुन नर करत, नै से चढ़ती बार।

१४—गयोदे=मुन्दर। आनख=पुन।

मानः काकोन पूर का रग पीया होना है। यश भीड़ल द  
स्व पूर के समान है।

१५—दीड=द्वि। पट=पीनाम्बर। जेति=जयक।

बरी पर इन रंगों की अत्यन्त बढ़ने से इन्द्र धनुष

कोट=बाह्य।

पट=पीना।

दीड=स्नेह, स्वाम चोर भाव।

बरी=द्वि।

१६—गोदुल=वज्र। कुनगरी=नित्यव्यास, पानिजन।

१७—मिमुता=चक्रवर्तन। भलखयो=दिलायी देने लग।

कचरत। नाकना=पुन खींच।

भीड़े=भीजे, पीड़ाही ला रंग बना। चढ़ने परे=नगर के द्वार



अनिपारे क्षीरघ द्रवनि, किन्तो न तदनि मनन।  
 यह चित्तपनि औरै कसू, त्रिदिग्गम हंन सुजन।

पया हो निधि पाइये, या पर के सई नाम।  
 नित प्रसि पुन्यो ही रहति, आनन आंग उत्राम।

यहाँ लखीना ही रह्यो, सुनि मेयत एक संग।  
 नाक पास बेंसर लह्यो, यासि मुकुनन के संग।

### सोरठ

मंगल बिन्दु सुरंग, मुर सभि, केंसर छाड़ गुड़।  
 एक मारी लहि संग, रसमय किय नोचन जग।

२२—अनिपारे=अनुरीते । तदनि=निधियों । मनन=मननशीली । सुजन=चमुर ।

२३—पया=प्याह । पुन्यो=पुण्यवाली । आनन=चमुर ।

२४—लखीना=( १ ) कसूकुन ( २ ) लख गहो । लख पा  
 सुनि=( १ ) कान ( २ ) केद । नाक=( १ ) नासिका ( १ )  
 मुकुनन के=( १ ) मोनिया के ( २ ) मारुगुला के साथ ।

इस दोहे में श्लेषार्थ से मरसंग की पराकाशा वर्णन की गयी है।  
 चयपन आदि से मरसंग कही अधिक भेषकर है ।

२५—सुरंग=गड । छाड़=छाड़ा डोहा । गुड़=हृदयनि,   
 रंग पोका है । मारी=( १ ) बी ( २ ) गति । रस=( १ ) आनन ( १ )  
 इन श्लेष दोहे में ज्योतिष सम्बन्धी चमत्कार है ।

जय चन्द्र, मंगल और हृदयनि एक ही राशि पर स्थित होने से  
 मरसंग योग होता है । यहां एक ही बी में चन्द्र जैसा गुण, मर

## दोहा

फन देयो सौँप्यो समुद्र, यह धुरंधरी जानि ।  
रूप रहचटें लनि लग्यो मांगन सब जग जानि ॥२६॥

५९

लिखन बैठि जाकी सया, गहि गहि गगन गहर ।  
भये न फेले जगत के, चतुर चितेरे कूर ॥२७॥

५९

नेह न नैननि को फहू, उपजी घड़ी दलाय ।  
नोर भरे नित प्रनि रहें, तऊ न प्यास बुझाय ॥२८॥

५९

नार विन्दु और छहस्पति जैसा पीना टीका देखने से संसार भर समस्य  
बर्षान् आविर्भूत हो जाता है ।

२६—फन=घनाज, भीत । धुरंधरी=घोटे छोटे हाथवाली ।  
रहचट=शोध ।

कज्जल समुद्र ने चाहा कि छोटे छोटे हाथवाली यह मे भोज दिलाने में  
कम सूर्य हो जायगा, पर यह उसका धन था । यह वा अपूर्व मौन्दर्ष्य देख  
कर सारा संसार ही भिखारी बन गया !

२७—मची=विष । गहर=गहरा । कूर=कूत ।

प्रतिष्ठा सुंदरता बढ़ जाने से कोई भी विष प्रथार्थ नहीं गिरा सता ।  
अपना नादिक भाव ( परमाना, कंय कदि ) का जाने से विष टोक टोक  
नहीं भर सका । अपना मौन्दर्ष्य में निमग्न हो जाने से मन हृष में न रहा  
और इसीमें विष सोचने समय बुद्धि नष्ट हो गयी । यह दोहा दार्शनिक दृष्टि  
से परमात्मा पर तथा शरीर दृष्टिसे नादिक पर घटता है ।

२८—नोर=आपत्ति, रोग । नौर=अव, घँसू ।



✓ या अनुरागी चित्त की, गति समुझै नहि होय।  
ज्यों ज्यों हूँ स्याम रंग, त्यों त्यों उज्जल ।

✓ जो न जुगुति पिय मित्रन की, धूरि मुकुति मुन होय।  
जो लहिये सँग सजन सौ, धरक नरक हो ।

✓ लई सौह मी मुनन की, नजि मुरली धुन झर।  
फिये रहनि रति, रात दिन, कानन लायें कान

✓ लोभ लगे हरि रूप के, करो सुनि जुनि जाय।  
होइन बैची धीछ ही, सोपन बड़ी बनार ।

२६—गति=अवस्था । स्याम=रामा, भीरुछ का रंग (रंग)।  
राजम=राज, भक्त ।

२७—जुगुति=मुक्ति, मोक्ष । मित्रन=मित्र । राक=रूप ।  
यों देव की पराकाशा कर्म की गयी है । इसी घाउ  
दोरा कठिनर भद्रमद का भी है—

कदा कदा बैरुण्ड मे, कवचद्वय की धार ।

‘भद्रमद’ शक नराहिये, ओ शीतल गव बार ।

२८—मोद=अनन्य । रति=देव, लगन । कानन=वन, हृदय  
तानव है ।

२९—मल=गोरा तब करने की (द्वन्द्व-वा की) गुण बन की  
गुरि=मित्र का । धीछ ही=रिवा कृष्ण के मुने ही । सोपन=नेत्र ।

नैरुण्यो दयाकी ने भीरुछा के नेत्रों से मिल कर मुझे  
बैच राधा, कृष्ण कृष्ण नरक नहीं ! इस दोहे से कवि का व्योमार्ति  
अनन्य होना है ।

## श्रीविहारोत्तम

न. निहारे कर को. कही सीति यह कौन। मम  
 तौ लागै पतक दग. लागै पतक पतौ न ॥३३॥

८५

तौ दसिदे क्यों निदहिदे. नीति नेह पुर नाहि।  
 दगावगी लोपन करे. नाइक मन दैधि जाहि ॥३४॥

८६

धैर दिगुनां पुरुषों गितन. इति दानता दिजाय।  
 बलि दानन को बोन सुनि. को दसि तुन्हें पयाय ॥३५॥

८७

साव लगान न मानहीं. नैना मो बल नाहि।  
 ये सुहँडोर तुरंग नौ. ऐबनह बलि जाहि ॥३६॥

११—नगरपालिका को नाम के निम्ने। नौरी दण्डननन नगर है।  
 नौरी दण्ड है। पत्तौननन दण्ड को भी।

१२—नौरी दण्डननन। नौरी दण्डननन नगर। नौरी दण्डननन। नगर  
 नौरी।

नौरी दण्डननन नगर को दण्डननन नगर है। दण्डननन नौरी  
 नौरी दण्डननन को दण्डननन है।

१३—नौरी दण्डननन को दण्डननन दण्डननन। नौरी दण्डननन नौरी दण्डननन  
 नौरी दण्डननन (१) नौरी दण्डननन (२) नौरी दण्डननन।

नौरी दण्डननन के दण्डननन नौरी दण्डननन नौरी दण्डननन नौरी दण्डननन  
 नौरी दण्डननन नौरी दण्डननन नौरी दण्डननन नौरी दण्डननन नौरी दण्डननन  
 नौरी दण्डननन नौरी दण्डननन नौरी दण्डननन नौरी दण्डननन नौरी दण्डननन

१४—नौरी दण्डननन नौरी दण्डननन नौरी दण्डननन नौरी दण्डननन नौरी दण्डननन



# धीविहारीनाम

कल्लाने तपन पवन, अति मयूर मृग पाव । ३३ ॥  
जगत तपोधन सी किया, दीन्य दाव निदाव ॥ ४१ ॥

५९

रुनित भ्रम गटायली, गरन दान मधुनीर ।  
मंद मंद आधन बाली, वृक्ष वृक्ष स्वमीर ॥ ४२ ॥

६०

कुर्यात दुराज प्रज्ञानि वा, दया न पद अति दद । ३४ ॥  
अधिक कौशेरे जग पर, मिलि मायस रवि बर ॥ ४३ ॥

६१

धीरि धीरि मय धृति मधुनीर वा मयाने नाम ।  
मौन दवायन निवय दी, पानव रापा राम ॥ ४४ ॥

४१—कल्लाने=कल्लाने दूत, कल्लाने=कल्लाने ४२—मयानी=मयानी  
४३—मौन=मौन, निवय=निवय ।

४४—मयानी=मयानी दूत, कल्लाने=कल्लाने ४५—मयानी=मयानी  
४६—मयानी=मयानी दूत, कल्लाने=कल्लाने ४७—मयानी=मयानी

४८—मयानी=मयानी दूत, कल्लाने=कल्लाने ४९—मयानी=मयानी  
५०—मयानी=मयानी दूत, कल्लाने=कल्लाने ५१—मयानी=मयानी

५२—मयानी=मयानी दूत, कल्लाने=कल्लाने ५३—मयानी=मयानी  
५४—मयानी=मयानी दूत, कल्लाने=कल्लाने ५५—मयानी=मयानी

५६—मयानी=मयानी दूत, कल्लाने=कल्लाने ५७—मयानी=मयानी  
५८—मयानी=मयानी दूत, कल्लाने=कल्लाने ५९—मयानी=मयानी  
६०—मयानी=मयानी दूत, कल्लाने=कल्लाने ६१—मयानी=मयानी

६२—मयानी=मयानी दूत, कल्लाने=कल्लाने ६३—मयानी=मयानी







- ✓ नरक त्याग पिंडरा पश्यो, सुवा समय के फेर ।  
आइर दे दे बोलियन, पायस बलि को धेर ॥५६॥
- ✓ जो सिंग धरि महिमा नहीं, लहियन राजा गद्य ।  
प्रगटन जड़मा आपनों, मुकुट पहिरियन पाय ॥६०॥
- ✓ चले जाहु हाँ को करन, हाथिन को पर्यापार ।  
नहि जानन या पुर यवनन, घोषी और कुम्हार ॥६१॥
- ✓ शिरम घृषादित को मृग, जियो मनीगनि मोधि ।  
कामिन प्रणार कलाव जल, नारी नृप पयोधि ॥६२॥
- ✓ गिरि में ऊँचे गनिक मन, बुद्धं जहाँ हजारा ।  
बाँ मन्दा पनु नगन गौ, प्रेम पयोधि पगार ॥६३॥
- ✓ अटक न हाँटन पदन ह, नञ्जन नेह गैनीर ।  
फोकी परे न दग फड़े, रंगो मोन रैन चौर ॥६४॥

४६—प्रा=प्रेम । लं=ललन=लुप्त हो गये हैं । दार=दौलत । दमि=दमन का प्रयत्न ।

मन्दा न किंकरा नरने से कदमे भी कले-दम इतर रोमों हैं—

“नमो नित्य को गौ, गौ, जो ननु मानी नम ।”

४७—मनिक=मनीषी वह जो मन्दा पद कि मृदु कर्मादिष्ट होते हैं ।

नित=नारद । नृप=नर मन्दा नर ।

४८—दुहे=दुःख । नरे=नरकाचारिण, कल=कल । दार=दौलत ।

४९—नम=नमन हो जाने का । नम=नमन । नम=नमन । नम=नमन ।













फाँड़ें चित सोई निरौ, जिहि पतितन के साथ ।  
मेरे गुन आँगुनगनन, गिनौ न गोपीनाथ ॥२३॥

८९

धोरेई गुन रीकते, धिसराई यह, यानि ।  
तुमह कान्ह भये मनौ, आज फालि के दानि ॥२४॥

९०

कयको देरत दोन है, होत न स्याम सहाय ।  
तुमह लागी जगनगुरु, जगनायक जग याय ॥२५॥

९१

कोऊ कोरि क संग्रही, कोऊ लाख हजार ।  
मो संपति जहुपति सदा, विपति विदारनहार ॥२६॥

९२

ज्यों है हौं त्यों होंहुगो, हौं हरि अपनी चाल ।  
हठ न करौ अति फटिन है, मो तारियो गुपाल ॥२७॥

२३—तिरौं=तमारा से तर जाऊँ, मुक्त हो जाऊँ । गनन=गनगुनो को ।

२४—धोरेई=भगाते ही । यानि=प्रभाव । कान्हकन के=करियुगो, पौ ।

२५—जगनाय=दुनियावी दया, स्वार्थभाव ।

स्वयं क दोनो दोहो में करियुगी शायी दानियों की निदा की गयी है ।

फिर है, महाशक्ति विहारी का किसी राजा ने कनादर दिया है, और हमारे लक्ष्य करके ये दोहे बनाये गये हैं ।

२६—कोरि क=हरोड़ो । विदारनहार=नारा करनेवाले ।

२७—चाल=चरनी । गुपाल=गोपाल, श्रीकृष्ण ।



तो पलिये भक्ति घनी, नागर नंद फितोर ।  
ओ नुम नीचे ये लग्यो, मो करनी घी ओर ॥ ६२ ॥

६३

जात जात पित होत है, ज्यो प्रिय में संतोष ।  
होत होत न्यो होत नौ, होय घरी में मोष ॥ ६३ ॥



- १—बीरक=वीरक है । एरो एरो=एक ही ( दुहे गायी )  
२—बीरक=वीरक है । मोके बीरक=वीरक से, दुहाय करके ।  
तो ओर, तो बाय, बाय, बाय है एरो एरो=एक ही से क देली, बाय  
एके से मोो बाय बाय बाय बाय । एके एके ओ है तो बाय, बाय  
बाय ओ बाय बाय बाय ।  
३—एके एके एके=एक ही से । एके एके=एक ही से, बाय,  
बाय । एके बीरक एके है । बीरक=बीरक ।  
एके बाय है तो बाय बाय है तो बाय बाय बाय ।







1  
1911

1912

1913

1914

## सवैया

यन नूपुर मंजु यजै,  
कटि किञ्चन में घुनि को मधुराई ।  
थिरे अंग लसै पटपोत,  
हिये हुलंसै यनमात सुहाई ॥  
थिरे किरोट चड़े दग खंचल,  
मंद हैसी मुख चन्द जुन्हाई ।  
। जग-मन्दिर दीपक सुन्दर,  
धौ प्रज दूतह देव सहारै ॥ १ ॥

## कवित्त

जो के परम पदु, ऊनो के अनंत मदु,  
दूनो के नदीम नदु इंदिरा फुरै परी ।  
हिमा मुनोसन को, संयति गीतसन की,  
रसन की सिद्धि प्रज योयो विधुरै परी ॥  
गदो की औंधेरी अधराति, मधुरा के पय,  
आरि मनोरथ, देव देवकी दुरै परी ।  
गायवार पूरन, क्षपार, पर ब्रह्म रासि,  
जमुदा के कोरे एक बारक कुरै परी ॥ २ ॥

।—किरीट=मुकुट । जुन्हाई=जुंहाई । मधुर दूतह=अन के मंदग, व ।

१—अनै=अन करके । पानरदु=नदी । इंदिरा=रानी । रंस=रंसरं  
ही । विधुरै परी=विजय विजय हो गयी । देवकी, श्रीकृष्ण की माता ।  
मनोरं में । कुरै परी=जात ही, मर दी; 'कुरै' कुरैतकी रान है ।  
रस वंद में ही कृष्ण-जन्माश्रमी का क्या ही लोभावनच चिर है !



कि. भू. पाताल, नाक सूची तें निकसि आये,  
चौदही भुवन भूमे, भुनगा को भयो हेत ।  
गिरी-झंड-भंड में समान्यो, ग्रहमंड नय,  
सपन समुद्र चारि मुंद में हिलोरे नेत ॥  
मेलि गयो मूल धून, मूल्हम समूल कुल,  
पंच भूत गन अनुराज में कियो निकेत ।  
गप ही नें आपही सुननि मिझारि डेद,  
नख सिंग गरं में सुमेन देयरारि देन ॥५॥

१५

तुही पंचत्व, तुही नय, रज. नम तुही,  
धावर छी जंगम अितेक भयो भय में ।  
तेरे ये दिनास सौटि, तोही नें समान्यो, कहू  
जान्यो न परन पहिचान्यो जय जय में ॥  
देख्यो नहीं जान, तुही देखियन जहाँ तहाँ,  
दृश्यो न देख्यो देख, तुही देख्यो शय में ।  
सय की समर नुरि, नारि सय धूरि कहै,  
दुरि नयही ते, नर पूरि रागो नय में ॥ ६ ॥

१—नय=नय । सूची नाक=सूची का मुँह । भुनगा=भोजन । ली रोड़ा ।  
नय । सय=सय, सय । धूरि=धूरि । पंचभूत=पानी, जल, तेज,  
गैर प्राण । नितेक=न । नितारि=नितारि दो । नय निग नय  
ये जय भल अरुन रारि के नय । नय सिंग अरुन नय का  
अरुन का नय निग । सय अरुन की अरुन १ ।  
२—नय=नय । धूरि=धूरि, धूरि । नय=नय । नितेक  
न । नितारि=नितारि । नर नुरि=नर नुरि ।

घोर तर मोजन विपिन, तन्त्री जन

निकम्पी निमंक अनि मातुर चर।

गने न कलक मृदु संकनि, मयंक मुनी

पंकज पमान धाई भागि निमि रं।

भूपतनि भूलि पन्दे उलटे दुहुल दय,

गुले भुजमूल प्रतिफल गिधि व।

बूढ़े बड़े छड़ि उपमान दूध भाँडे उम,

सुन छड़ि अक. पनि छड़ि पात्र।

### मयैया

बो लग के सुगराज मयों,

अमरात्र के। वधन बीर दुखे

मेक मही में मही करि के।

लग देर दुखे व। छेति दुखे

नाग न पुत्र, न नई न मयें,

मरें सु मयें, निरि बीर दुखे

भूट ही वेद पुगलन धाँवि,

लघान लोम नय के भुजलो दि

६८

११—बीरकर्मिण, बलुय हिन नयन  
बलकर्मण बलकर्म हिन नयन व। बीरकर्मिण । बलकर्मिण  
बलकर्मिण बलकर्मिण हिन नयन । बलकर्मिण बलकर्मिण, बलकर्मिण

१२—बलकर्मिण बलकर्मिण बलकर्मिण । बलकर्मिण बलकर्मिण, बलकर्मिण  
बलकर्मिण बलकर्मिण बलकर्मिण । बलकर्मिण बलकर्मिण, बलकर्मिण















## कवित्त

ऐसां जां हीं जानतो कि जैई नू विष के नंग,  
 एने मन मेरे, साथ पाँच मेरे नारतो ।  
 हाथु लीं हीं बन नर नाहन की नाहीं मुनि,  
 नेह लीं निहारि लागि पदन निमोगतो ॥  
 चवन न हेतो देवी ~~सुखी~~ ~~सुखी~~ करि,  
 चायुष निवायनोन लागि मुँह मोगतो ।  
 नगी मेन राधर नगारे ई नरे लीं पण्डि,  
 गधायो दिग्द के पारिधि में पोगतो ॥२०॥

## नवैया

माँसन हीं लीं समीर गयो कर,  
 छाँडुन हीं मय नीर गयो दगि ।  
 नेच गयो गुन लीं छानो कर,  
 भूमि गई मनु की मनुता करि ॥  
 लोच गयो निगिरी कि छास,  
 कि छासू छास प्रखान गयो भरि ।  
 जा दिम में मुग फेकि हरे हैंनि,  
 नेति लियो छानिने हरि नू हरि ॥२१॥

१०—पोगतो=पोंड हाथ । ११—नरे=नर । निगिरी=निगरी ।  
 निगरी=निगरी । निगरी=निगरी । निगरी=निगरी । निगरी=निगरी ।  
 निगरी=निगरी । निगरी=निगरी । निगरी=निगरी । निगरी=निगरी ।

१२—छासू=छास । छास=छास । छास=छास । छास=छास ।  
 १३—छासू=छास । छास=छास । छास=छास । छास=छास ।  
 १४—छासू=छास । छास=छास । छास=छास । छास=छास ।

खोरि लौं खेसन आबती ये न,  
 तौ आलिन के मन में पाती क्यों!  
 देव सुपालहि देखती ये न,  
 तौ या विग्हानम तौ दाती क्यों!  
 पापुरी, मधुल आँय की पासि,  
 सुभाग मी हँ उर तौ आती क्यों!  
 कोमल कृक कैं कयैलिया कूर,  
 कलत्रन की दिखै दाती क्यों!

५४

मेर मये यिन, भार्य न भूषन,  
 मूर न भावन की बसु ईली!  
 देव जू देगे कैं बसु मों मधु,  
 दूख सुखा दारि मावन दौली!  
 मदन मों शिनयो नहि प्रात, नृमी  
 शिन मारि निगंनि निगंनि  
 कुल उगै मूल, मिमा मम मेत्र,  
 विष्टीननि योगि विष्टे मतो बोली ॥१॥

५५

१५—नंगी—अनकी। कामी—चमका। बर्बद—बुरा। दरिद्र  
कामी—अनकी। नृमी—नरमी। दोवन—दूध। बेअरु—आ। न—न। विष्टे  
विष्टे—विष्टे।

१६—दो—दो। दुख—दुख। दोली—दोली। विष्टे—विष्टे।

रैनि सोई दिनु, इंदु दिनेस,

जुगुहई हें घान घनो चिरगई ।

फूलनि सेज, सुगंध दुकूलनि,

नूल उठै तनु, नूल ज्यों ताई ॥

याह भोतर भवै हूँ जन,

रागो परै देव सु पँहुन आई ।

हो हो सुलानी कि भूले नवै,

कहै मोरम नो नगदागम माई ॥४८॥

१९

ना यह नंद को मंदिर है,

दुखभान को भौन; कहा उरनी हो ?

हो हो यों तुमहीं कहि देवजू,

काहि धौ घुंघरु कै तरनी हो ?

भैरवी मोहि भट्ट कहि कारन,

कौन को धौं हृदि नो दूकनी हो ?

कौनी भई ? नो कहाँ किन कैसे ह ?

कान्त कौनी है ? उग दूकनी हो ॥४९॥

४८—जुगुहई—पोंदने । इंदु—सूर्य । दिनेस—पुन । नगदागम—नगद जगु  
का करन ।

विग्रीनी—इसी प्रकार विग्रीनी के मुख से शरमरी बान बरसा  
रहे हैं—

“हो हो बीनी बिरद बन, कै बीरी मय मन :

कम जानि रे कल है ममिदि मीनकर मन ॥”

४९—जगुनी हो—करवें करवो हो । दूकनी हो—दूकनी को हो रही हो ।

विग्रीनी को उगदागम का शरदा उदागम है ।









राधिका कान्ह को ध्यान धरै.

तब कान्ह है राधिका के गुन गावै ।

लौं कंसुवा बरसै, बरसाने को.

पानी लिने, लखि राधे का ध्यावै ॥

राधे है जाय धर्मक में देव.

सुप्रेम का पानी तै छाना लगावै ।

झापुने आपु ही में उरमै.

सुमै, उरमै, समुमै, समुममै ॥४६॥

### कवित्त

कोऊ कहा कुनदा कुनौन कुनरांन कहा.

कोऊ कहा गरिनि, कतनिनि कुनारो हा ।

कैला नरलोच, बरलोच बर लोचनि में,

लौनहीं में कनोच, मोच-लोचनि ने न्यारी हो ॥

नन जाड, मन जाड, देव गुरु जन जाड,

मान किन जाड, देक दरनि न शरी हो ।

पुन्यावन धारो बनधारी को मुकुट धारी,

पौट पटवागो करि मूर्ति पै धारी हो ॥४७॥

६४

२६—बरलोच=भीमविहारी का आसन । उरमै=उपवन में पड़  
गई । सुमै=सुखन शरीर । समुमै=महा ना महाजन कर लेगी है ।

२७—नरलोच=नरलोच । बरलोच=बरलोच । देव=देव । कनोच=  
कनोच । लौनहीं=कनोच को नीचे बा निजकर कनोच है ।

## मर्यादा

राजन राज समान में राजन,

राजन है मुख मात्र वदन

आपु मुनी गल वीर मुना व

मुनाल मुनाव विरो प्रत व

लाल का लाल मल्ला वीर दान, -

ना वर न गवन वरा न मल।

आलिख राज न राज न नो मुख

कहि गय कहि काहु का वरा दी।



•

राजन राज समान में राजन, राजन है मुख मात्र वदन  
आपु मुनी गल वीर मुना व, मुनाल मुनाव विरो प्रत व  
लाल का लाल मल्ला वीर दान, - ना वर न गवन वरा न मल।  
आलिख राज न राज न नो मुख, कहि गय कहि काहु का वरा दी।

# श्रीआनन्दघन

—००६८—

छप्पय

दिल्लोश्वर नृप निमित्त एक धुरपद नहि गायो ।  
मैं निज प्यारी कहे सभा को गोकुल रिन्हायो ।  
कृपित होय नृप द्विय निकानि वृन्दावन आवे ।  
परम मुजान मुजान छाप पद कथिन घनाये ॥  
नादिरशाही ब्रज रज मिले, किय न नैक उद्याट मन ।  
हरि भक्ति बेलि सेचन करी, घन आनन्द आनन्द घन ॥

श्री० गणेशाय नमः

लिक-पुंगव आनन्दघन जी ज्ञानि के  
कायस्थ थे । इनका जन्म संवत्  
१५४६ के लगभग हुआ और यह  
संवत् १५६६ में, नादिरशाही में  
मारे गये । इनका असल नाम  
घनानन्द था, पर कथिना में यह  
अपना नाम आनन्द घन लिखते  
थे । यह दिल्लोश्वर बादशाह मुह-  
म्मद शाह के मौर मुंशी थे । कहते  
हैं, इनका मुजान नाम की एक

बेटी पर बड़ा प्रेम था । यह सदा उसकी शाहा पर चला  
करते थे । एक दिन दरबार में कुछ चुगुलपौरों ने बादशाह  
से यह कह दिया कि मौरमुंशी साहब गाने बहुत अच्छा  
हैं । बादशाह ने उन्हें गाने के लिये हुक्म दिया । उन्होंने शाह



महात्म कन तिया । त्यागा न करा हि गद दृष्ट है धा  
 न मायेगे अगद इनमे मुक्तान कहें तो गद ॥  
 पदमा ही किया गया । यनानन्द जी, बाइगाँव की गद  
 और मुक्तान की लक्ष्मी, मुँह कर्कें माने लगे । देसी गद  
 ही हि. माया गदवार इन गद लक्ष्मी का गया । बाइगाँव  
 का लक्ष्मी दूध, गद इनकी पीड़े दिव्यान् की देवता  
 गद लक्ष्मी । नागाँव का इन्द्र नगर में बाहर तिहार  
 लक्ष्मी लक्ष्मी इन्द्रान मुक्तान में अगद माया लक्ष्मी  
 इन्द्रान लक्ष्मी कह दिया । मुक्तान के विचार में ही  
 मर्जा माया ही है मुक्तान लक्ष्मी माया इन्द्र मुक्तान  
 मर्जा माया ही है मुक्तान लक्ष्मी माया इन्द्र माया  
 हिन्दु इन्द्र मुक्तान लक्ष्मी इन्द्रान माया का हि. इन्द्रान  
 लक्ष्मी न लक्ष्मी लक्ष्मी । गद लक्ष्मी के लक्ष्मी लक्ष्मी  
 मुक्तान लक्ष्मी का प्रमाण करने लगे । लक्ष्मी लक्ष्मी  
 लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी  
 लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी

मुक्तान लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी

लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी

लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी

लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी

लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी

लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी

लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी

लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी

लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी

लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी







जिन आँखिन रूप चिन्हारि भरि,  
 तिनको नित ही दहि जागनि है ।  
 हित पीर सों पूरित जो हियरा,  
 फिरि ताहि कहाँ कहु लागनि है ॥  
 धनआनंद प्यारे मुजान मुनौ,  
 जियराहि सदा दुख दागनि है ।  
 मुख में मुखचंद बिना निरखे,  
 नख तैं सिख सों बिख पागनि है ॥ ४ ॥

८५

जोब कि बात जनाइये क्यों करि,  
 जान कहाय अजाननि आगी ।  
 तीरन मारि कै पीर न पायत,  
 एक सो मानत रोइयों रागी ॥  
 ऐसी यनी धनआनंद आनि जु,  
 आनन समेत सो कित त्यागी ।  
 मान भरैने भरैने विगा पै,  
 अमोही सों काहु को मोह न लागी ॥ ५ ॥

८६

किमुक पुंज से फूलि रहे,  
 सु लगी डर दौ जु बियोग निहारे ।

४—जिन.....भरै=जिन आँखों ने रूप से चित्रण कर ली । रदि  
 ति है=जजनों हुई जागती हैं । लागनि है=लगना है, प्रेम करना है ।  
 ५—जिन ।

४—आगी=आग । रागी=राग । अमोही=निमोही, जिसे दूसरे के प्रेम  
 में ध्यान न हो ।



काह काही मनआनंद प्यारे,  
 इती एठ पौन पै आपु लियो झू ।  
 दाय ! सुझान सनेही कहाह फ्या,  
 मोह अनार के द्रोह कियो झू ॥ ८ ॥

१९

पर काइहि देह सो धारे फिरी,  
 परजन्य जगामय है दरमो ।  
 निधि नोर सुधा के समान करी,  
 नवही दिधि नज्जनना सरलो ॥  
 मनआनंद ओषन दायक ही,  
 बसु मेरिये पीर हिये परनो ।  
 बसुं या विस्तारो सुझान के आँगन,  
 मो प्रेमसुगमि हौं मैं परमो ॥ ९ ॥

२०

धुनि धुनि हौं निज बाननि में,  
 जल सो उपराजिघोरै सी बरै ।  
 मन मोहन मोहन ओहन के,  
 अमिनाय सम्राजिघोरै सी बरै ॥  
 मनआनंद तीरिये लाननि सी,  
 सर से सुर सम्राजिघोरै सी बरै ॥

१—पराजिघोरै (१) मेरै; (२) धुनि के हिये । उपराजिघोरै; बरै  
 न बरै बरै । मेरिये-मेरी हौं । बरिये-बरी ।

२—पराजिघोरै-पराजिघोरै बरै । अमिनाय-अमिनाय । अमिनाय-अमिनाय  
 बरै बरै । अमिनाय-अमिनाय ।



राति द्यौत कटक सजेही रहै दहै दुख.

कहा कहौ गति या वियोग यज्ञमारे की ।

तियो धेरि औचक झकेली कैं विचारो जोष.

कहू न यत्ताति यों उपाय बलहारे कां ॥

जान प्यारे सागों न गुहार तो जुहार करि,

जून कैं निकुनि टेक गहै पन धारे की ।

रेत-रेत धूरि चूर चूर है नितैगो नय,

चलैगी कहानी धनआनंद निहारे को ॥ १३ ॥

८७

इंदोबर इतनि निताइ सौनहुही गुहो,

सुहो नाथ हात रूप गुन न परं गनै ।

पौरी ये पिहौरी होर सोम पै उत्तदि राखै,

कैंसर विविध अंग रंग नाथ सों सनै ॥

सुप्लो में गौरी धुनि देरी धनआनंद है.

नरे द्वार दहकनि ऊपम घने डनै ।

हा हा है मुजान ! आहु दीवै भान दान,

नेहु आवन गुपान देखि लोभ बन तैं बनै ॥ १४ ॥

८८

११—इतक=सैक । औचक=अचानक । झकेली=झुंझकी । विचारो=चिन्ता । जोष=जोश । गुहार=गुहार । पनपन=कौन-कौन । करनै=करने । रेन=रेन । दहै=दहै । चूर चूर=चूर चूर । दुख=दुख । १२—गौरी=गौरी । सौनहुही=सौनहुही । गुहो=गुहो । हात=हात । रूप=रूप । गुन=गुन । न परं गनै=न परं गनै । उत्तदि=उत्तदि । राखै=राखै । कैंसर=कैंसर । विविध=विविध । अंग=अंग । रंग=रंग । नाथ=नाथ । सों सनै=सों सनै । १३—इंदोबर=इंदोबर । इतनि=इतनि । निताइ=निताइ । सौनहुही=सौनहुही । गुहो=गुहो । सुहो=सुहो । नाथ=नाथ । हात=हात । रूप=रूप । गुन=गुन । न परं गनै=न परं गनै । १४—इंदोबर=इंदोबर । इतनि=इतनि । निताइ=निताइ । सौनहुही=सौनहुही । गुहो=गुहो । सुहो=सुहो । नाथ=नाथ । हात=हात । रूप=रूप । गुन=गुन । न परं गनै=न परं गनै ।

११—इंदोबर=इंदोबर । इतनि=इतनि । निताइ=निताइ । सौनहुही=सौनहुही । गुहो=गुहो । सुहो=सुहो । नाथ=नाथ । हात=हात । रूप=रूप । गुन=गुन । न परं गनै=न परं गनै । १२—गौरी=गौरी । सौनहुही=सौनहुही । गुहो=गुहो । हात=हात । रूप=रूप । गुन=गुन । न परं गनै=न परं गनै । १३—इंदोबर=इंदोबर । इतनि=इतनि । निताइ=निताइ । सौनहुही=सौनहुही । गुहो=गुहो । सुहो=सुहो । नाथ=नाथ । हात=हात । रूप=रूप । गुन=गुन । न परं गनै=न परं गनै । १४—इंदोबर=इंदोबर । इतनि=इतनि । निताइ=निताइ । सौनहुही=सौनहुही । गुहो=गुहो । सुहो=सुहो । नाथ=नाथ । हात=हात । रूप=रूप । गुन=गुन । न परं गनै=न परं गनै ।



भारत बनमाली बनमाली सुजान तंज.

आफ़ो देखि काम के हिये न नाहो धार है ॥

सुगनि लमाज नाज कोकिल कुहक राजें.

सासन इनके सुन सारभ सनीर है ।

स्वेद मकरन्द और मनोरथ मधुर पुंज.

मंजु कृष्णावन देस जनुना के नौर है ॥१७॥

नवैया

तद नो त्वन दृग्हि तं मुमुक्षाय,

यन्त्राय के ओर जो दृष्टि है।

दस्तावेज बनाने की श्रम देने में,

रक्षाद्वयं श्री गौरी गणेशाय नमः ।

अपनी हर माहि दसाय यै भारत,

एक निमासी कहाँ घों घने ।

बहु नेह निपाइन जानन हें.

नौ मन्त्रों की प्राप्ति में कार्य होने पर =

आहुति ते ननु हरि रिते,

तिरछे करि नैननि नेह हें जाइ नैं ।

१३-नीति-वृत्तः । नीति-वृत्तः कालः है, यह सुझाव है । नीति-वृत्तः  
नीति-वृत्तः कालः है, यह सुझाव है । नीति-वृत्तः

ॐ श्री गुरुभ्यो नमः ।

१-जहाँ की.....होती है वही जहाँ सब घर मुसकाने।  
नहीं बँधा कर कन : मरने की शराबों को काट पना ।





कृपाभक्ति परिपूरन जिनके अंग है ।  
 दगनि परम अनुराग जगमगै रंग है ॥  
 वन संतन के संवन दसधा पाइय ।  
 प्रज नागर नैदलात सु निसिदिन गाइये ॥ १० ॥

८७

प्रज वृन्दावन स्थान पियारी नूमि है ।  
 तहँ फल फूलनि भार रहै नम भूमि है ॥  
 भुव दंपति पद अंकनि लोट लुटाइये ।  
 प्रज नागर नैदलात सु निसिदिन गाइये ॥ ११ ॥

८८

नंदोदयर परसानो गोकुल गांवरो ।  
 पंसीपट लंकैत मन तहँ सांवर ॥  
 गोधर्वन राधाकुंड सु अनुना जाइये ।  
 प्रज नागर नैदलात सु निसिदिन गाइये ॥ १२ ॥

८९

१—वासरतै=भक्त का है । दगपा=भक्ति के दग परदार, दगः  
 को दगर को माने लगी है—अर्थात्,

आप भीम विजयो, स्वयं पाद मंगल ।

अपम पद दाम्, दाम्पत्य विवेकम् ॥

‘दाम्पत्य’ शब्द का मे दाम्पती और दाम्पत्यी भक्ति का दाम्पत्य आया  
 जो पद दाम्पत्य और दाम्पत्यदाम्पत्य है ।

११—वृन्दावन=वृन्दावन का पद पवित्र स्थान । वृन्दावन=वृन्दा  
 वन को वृन्दावन के मतलब है । वृन्दावन=वृन्दावन  
 वन । वृन्दावन=वृन्दावन, जो वृन्दावन के पद  
 वृन्दावन को पद वृन्दावन है ।



साध्या प्र० मिथिन जसु रसनि रसाहये ।

इन्द्राक्षर नंदनाथ ह्य निमिदिन नाथ्ये ॥ १६ ॥

अथ इमं सौता सुनन् न वदति कदाचन ।

प्रलुः शनन स्तन संयति आन दगापनो ॥

नागसिन्धु प्रज्जयन् कुर्या पद पादये ।

पञ्चमः नैदमालः नु निस्सिद्धिः गारये ॥ १५ ॥

१८

एतद्वाच्यं भवति ।

मान लन मन नन कथंरु. राधिका वं पय ॥

एतौ ज्ञानेन मूलि नै, एतौ मृदु सुखशान ।

बन्नी मलिन निषेध मोम्मा, मुम्बईया वम्बान ११

ਦਾਸੀ ਦੇ ਬਾ ਬਾਹਰੇ ਬਲੀ, ਭੀਨ ਬਲੀ, ਭੀਨ ।

ਭਾਗੀ ਜੁਝਾਰ ਧੀਰ ਧਨਿ ਨਿਲਿ ਰਾਮ ਮੰਦਰ ਧੀਰ ॥

वहाँ जाति बल्लभ को, भुवि गरीबकुल बाँध ।

एतौ गुरु विद्वान् पद्मसुतः, नन्दः पण्डितः वरुणः ।

यदां गच्छत इति न मे विद्य रंजिष्येति स ज्ञान ।

पति मोहन बाबू मोहन, विष्णु रत्न मण्डलार ।

1. The first part of the document is a letter from the President of the United States to the Congress, dated January 8, 1860. It contains a report on the state of the Union and the progress of the government during the year.

2. The second part of the document is a report from the Secretary of the Treasury, dated January 10, 1860. It contains a detailed account of the financial operations of the government during the year.

3. The third part of the document is a report from the Secretary of the Interior, dated January 12, 1860. It contains a detailed account of the land and mineral resources of the United States.

4. The fourth part of the document is a report from the Secretary of the Navy, dated January 14, 1860. It contains a detailed account of the naval operations of the United States.

5. The fifth part of the document is a report from the Secretary of the War, dated January 16, 1860. It contains a detailed account of the military operations of the United States.

6. The sixth part of the document is a report from the Secretary of the State, dated January 18, 1860. It contains a detailed account of the diplomatic relations of the United States.

7. The seventh part of the document is a report from the Secretary of the Agriculture, dated January 20, 1860. It contains a detailed account of the agricultural operations of the United States.

8. The eighth part of the document is a report from the Secretary of the Commerce, dated January 22, 1860. It contains a detailed account of the commercial operations of the United States.

9. The ninth part of the document is a report from the Secretary of the Education, dated January 24, 1860. It contains a detailed account of the educational operations of the United States.

10. The tenth part of the document is a report from the Secretary of the Public Works, dated January 26, 1860. It contains a detailed account of the public works operations of the United States.

11. The eleventh part of the document is a report from the Secretary of the Post Office, dated January 28, 1860. It contains a detailed account of the postal operations of the United States.

12. The twelfth part of the document is a report from the Secretary of the Marine Corps, dated January 30, 1860. It contains a detailed account of the marine operations of the United States.

13. The thirteenth part of the document is a report from the Secretary of the Army, dated February 1, 1860. It contains a detailed account of the army operations of the United States.

14. The fourteenth part of the document is a report from the Secretary of the Air Force, dated February 3, 1860. It contains a detailed account of the air force operations of the United States.

15. The fifteenth part of the document is a report from the Secretary of the Coast Guard, dated February 5, 1860. It contains a detailed account of the coast guard operations of the United States.

16. The sixteenth part of the document is a report from the Secretary of the Customs Service, dated February 7, 1860. It contains a detailed account of the customs operations of the United States.

17. The seventeenth part of the document is a report from the Secretary of the Patent Office, dated February 9, 1860. It contains a detailed account of the patent operations of the United States.

18. The eighteenth part of the document is a report from the Secretary of the Copyright Office, dated February 11, 1860. It contains a detailed account of the copyright operations of the United States.

19. The nineteenth part of the document is a report from the Secretary of the Trademark Office, dated February 13, 1860. It contains a detailed account of the trademark operations of the United States.

20. The twentieth part of the document is a report from the Secretary of the Land Office, dated February 15, 1860. It contains a detailed account of the land operations of the United States.

21. The twenty-first part of the document is a report from the Secretary of the Mineral Office, dated February 17, 1860. It contains a detailed account of the mineral operations of the United States.

22. The twenty-second part of the document is a report from the Secretary of the Fishery Office, dated February 19, 1860. It contains a detailed account of the fishery operations of the United States.

23. The twenty-third part of the document is a report from the Secretary of the Forestry Office, dated February 21, 1860. It contains a detailed account of the forestry operations of the United States.

24. The twenty-fourth part of the document is a report from the Secretary of the Game Office, dated February 23, 1860. It contains a detailed account of the game operations of the United States.

25. The twenty-fifth part of the document is a report from the Secretary of the Wildlife Office, dated February 25, 1860. It contains a detailed account of the wildlife operations of the United States.

26. The twenty-sixth part of the document is a report from the Secretary of the National Park Service, dated February 27, 1860. It contains a detailed account of the national park operations of the United States.

27. The twenty-seventh part of the document is a report from the Secretary of the Bureau of Reclamation, dated February 29, 1860. It contains a detailed account of the reclamation operations of the United States.

28. The twenty-eighth part of the document is a report from the Secretary of the Bureau of Indian Affairs, dated March 1, 1860. It contains a detailed account of the indian operations of the United States.

29. The twenty-ninth part of the document is a report from the Secretary of the Bureau of Prisons, dated March 3, 1860. It contains a detailed account of the prison operations of the United States.

30. The thirtieth part of the document is a report from the Secretary of the Bureau of Census, dated March 5, 1860. It contains a detailed account of the census operations of the United States.

31. The thirty-first part of the document is a report from the Secretary of the Bureau of Statistics, dated March 7, 1860. It contains a detailed account of the statistical operations of the United States.

32. The thirty-second part of the document is a report from the Secretary of the Bureau of Labor, dated March 9, 1860. It contains a detailed account of the labor operations of the United States.

33. The thirty-third part of the document is a report from the Secretary of the Bureau of Mines, dated March 11, 1860. It contains a detailed account of the mining operations of the United States.

34. The thirty-fourth part of the document is a report from the Secretary of the Bureau of Geology, dated March 13, 1860. It contains a detailed account of the geological operations of the United States.

35. The thirty-fifth part of the document is a report from the Secretary of the Bureau of Meteorology, dated March 15, 1860. It contains a detailed account of the meteorological operations of the United States.

36. The thirty-sixth part of the document is a report from the Secretary of the Bureau of Hydrology, dated March 17, 1860. It contains a detailed account of the hydrological operations of the United States.

37. The thirty-seventh part of the document is a report from the Secretary of the Bureau of Zoology, dated March 19, 1860. It contains a detailed account of the zoological operations of the United States.

38. The thirty-eighth part of the document is a report from the Secretary of the Bureau of Botany, dated March 21, 1860. It contains a detailed account of the botanical operations of the United States.

39. The thirty-ninth part of the document is a report from the Secretary of the Bureau of Agriculture, dated March 23, 1860. It contains a detailed account of the agricultural operations of the United States.

40. The fortieth part of the document is a report from the Secretary of the Bureau of Commerce, dated March 25, 1860. It contains a detailed account of the commercial operations of the United States.

41. The forty-first part of the document is a report from the Secretary of the Bureau of Education, dated March 27, 1860. It contains a detailed account of the educational operations of the United States.

42. The forty-second part of the document is a report from the Secretary of the Bureau of Public Works, dated March 29, 1860. It contains a detailed account of the public works operations of the United States.

43. The forty-third part of the document is a report from the Secretary of the Bureau of Post Office, dated March 31, 1860. It contains a detailed account of the postal operations of the United States.

44. The forty-fourth part of the document is a report from the Secretary of the Bureau of Marine Corps, dated April 2, 1860. It contains a detailed account of the marine operations of the United States.

45. The forty-fifth part of the document is a report from the Secretary of the Bureau of Army, dated April 4, 1860. It contains a detailed account of the army operations of the United States.

46. The forty-sixth part of the document is a report from the Secretary of the Bureau of Air Force, dated April 6, 1860. It contains a detailed account of the air force operations of the United States.

47. The forty-seventh part of the document is a report from the Secretary of the Bureau of Coast Guard, dated April 8, 1860. It contains a detailed account of the coast guard operations of the United States.

48. The forty-eighth part of the document is a report from the Secretary of the Bureau of Customs Service, dated April 10, 1860. It contains a detailed account of the customs operations of the United States.

49. The forty-ninth part of the document is a report from the Secretary of the Bureau of Patent Office, dated April 12, 1860. It contains a detailed account of the patent operations of the United States.

50. The fiftieth part of the document is a report from the Secretary of the Bureau of Copyright Office, dated April 14, 1860. It contains a detailed account of the copyright operations of the United States.

51. The fifty-first part of the document is a report from the Secretary of the Bureau of Trademark Office, dated April 16, 1860. It contains a detailed account of the trademark operations of the United States.

52. The fifty-second part of the document is a report from the Secretary of the Bureau of Land Office, dated April 18, 1860. It contains a detailed account of the land operations of the United States.

53. The fifty-third part of the document is a report from the Secretary of the Bureau of Mineral Office, dated April 20, 1860. It contains a detailed account of the mineral operations of the United States.

54. The fifty-fourth part of the document is a report from the Secretary of the Bureau of Fishery Office, dated April 22, 1860. It contains a detailed account of the fishery operations of the United States.

55. The fifty-fifth part of the document is a report from the Secretary of the Bureau of Forestry Office, dated April 24, 1860. It contains a detailed account of the forestry operations of the United States.

56. The fifty-sixth part of the document is a report from the Secretary of the Bureau of Game Office, dated April 26, 1860. It contains a detailed account of the game operations of the United States.

57. The fifty-seventh part of the document is a report from the Secretary of the Bureau of Wildlife Office, dated April 28, 1860. It contains a detailed account of the wildlife operations of the United States.

58. The fifty-eighth part of the document is a report from the Secretary of the Bureau of National Park Service, dated April 30, 1860. It contains a detailed account of the national park operations of the United States.

59. The fifty-ninth part of the document is a report from the Secretary of the Bureau of Reclamation, dated May 2, 1860. It contains a detailed account of the reclamation operations of the United States.

60. The sixtieth part of the document is a report from the Secretary of the Bureau of Indian Affairs, dated May 4, 1860. It contains a detailed account of the indian operations of the United States.

61. The sixty-first part of the document is a report from the Secretary of the Bureau of Prisons, dated May 6, 1860. It contains a detailed account of the prison operations of the United States.

62. The sixty-second part of the document is a report from the Secretary of the Bureau of Census, dated May 8, 1860. It contains a detailed account of the census operations of the United States.

63. The sixty-third part of the document is a report from the Secretary of the Bureau of Statistics, dated May 10, 1860. It contains a detailed account of the statistical operations of the United States.

64. The sixty-fourth part of the document is a report from the Secretary of the Bureau of Labor, dated May 12, 1860. It contains a detailed account of the labor operations of the United States.

65. The sixty-fifth part of the document is a report from the Secretary of the Bureau of Mines, dated May 14, 1860. It contains a detailed account of the mining operations of the United States.

66. The sixty-sixth part of the document is a report from the Secretary of the Bureau of Geology, dated May 16, 1860. It contains a detailed account of the geological operations of the United States.

67. The sixty-seventh part of the document is a report from the Secretary of the Bureau of Meteorology, dated May 18, 1860. It contains a detailed account of the meteorological operations of the United States.

68. The sixty-eighth part of the document is a report from the Secretary of the Bureau of Hydrology, dated May 20, 1860. It contains a detailed account of the hydrological operations of the United States.

69. The sixty-ninth part of the document is a report from the Secretary of the Bureau of Zoology, dated May 22, 1860. It contains a detailed account of the zoological operations of the United States.

70. The seventy part of the document is a report from the Secretary of the Bureau of Botany, dated May 24, 1860. It contains a detailed account of the botanical operations of the United States.

71. The seventy-first part of the document is a report from the Secretary of the Bureau of Agriculture, dated May 26, 1860. It contains a detailed account of the agricultural operations of the United States.

72. The seventy-second part of the document is a report from the Secretary of the Bureau of Commerce, dated May 28, 1860. It contains a detailed account of the commercial operations of the United States.

73. The seventy-third part of the document is a report from the Secretary of the Bureau of Education, dated May 30, 1860. It contains a detailed account of the educational operations of the United States.

74. The seventy-fourth part of the document is a report from the Secretary of the Bureau of Public Works, dated June 1, 1860. It contains a detailed account of the public works operations of the United States.

75. The seventy-fifth part of the document is a report from the Secretary of the Bureau of Post Office, dated June 3, 1860. It contains a detailed account of the postal operations of the United States.

76. The seventy-sixth part of the document is a report from the Secretary of the Bureau of Marine Corps, dated June 5, 1860. It contains a detailed account of the marine operations of the United States.

77. The seventy-seventh part of the document is a report from the Secretary of the Bureau of Army, dated June 7, 1860. It contains a detailed account of the army operations of the United States.

78. The seventy-eighth part of the document is a report from the Secretary of the Bureau of Air Force, dated June 9, 1860. It contains a detailed account of the air force operations of the United States.

79

● 此書之出版，實為我國學術界之一大貢獻，其內容之豐富，實為我國學術界所罕見，其價值之高，實為我國學術界所罕見，其影響之廣，實為我國學術界所罕見。

[illegible]

॥ अथ श्रीगणेशोत्थानम् ॥

100

100

100

100

100

कथा सत्य सनेह कां, उग्र नाहिं आशय सीर ।  
 वेद संसृति उपनिषद् कां, रक्षा नाहिंन टीर ।  
 मरदि में है कदनि नाथी, सुनत खोता नीन ।  
 सोइस मागर लोग दुभक्त, बहि न आवत रैन ॥२०॥

4

यज्ञ के पदम खनेही लोग ।  
 गायी है हंसि मिलन गहपरे, कलर प्रेम सज्जोग ।  
 प्रेम रूप रूप हंसि लोला, यह मिलकों निम भोग ।  
 नागविशाल वन कान्हो, सुपनेह नहि सोन ॥१॥

14

कहाँ से मुज मासी हय हाथी ।  
 धरे विधान बजाय साजसे, गहँ बाट कमल माथी ।  
 गहँ हाथ हाथी मुज जोदन, दम मोहँ सब भोग ।  
 धातु कालो मर मर ही कुँहयो, धरे गहँ सब भोग ।  
 हाथी गहँ निजि दिन विधान बँ, भट बहन दिवस ।  
 कालो मर विरहि काले लखँ रह, हाथ नाथ गहँ मरन ।

[illegible]

It is not a good idea to use a single word to describe a whole document.

1. Ammonium chloride is a strong electrolyte because it dissociates into ammonium ions and chloride ions.

... ..  
... ..  
... ..



दरएन देरम, देकान नाई ।

साक्षात्पुनः पितरि प्रकटं कथानं कथं, दहति स्येत हि ज्ञानं ।  
 नाना रूपं यदा मुखा ये पलटे, नहि कथानता कृती ।  
 निदरे ज्ञापनं भृशं न कथनं, सर्वान् हि यः पृच्छति ।  
 एषा भक्तिः सुखं सौख्यं न साक्षात् सुखं देहं सुखं साक्षात् ।  
 साक्षात्पुनः सौख्यं नहि निदरे, ज्ञापनं नहि निदरे । २४५

12

एति च कलुषगत इत्यत्र दर्शितं ।

परमेश्वर उग्ररूप धारण करी, मोक्षों में निश्चये ॥  
 सहिते जल पानान नाथ विद्य, काहो भक्ति करे ॥  
 नैन सुरंग छड़े पाषाण दिख, मातां पिछाति परे ॥  
 पाद में कमलजल हो कित, प्रभु रङ्ग बर पहने ॥  
 आनन्द भव काशीन कला वी, हनुमान हनुमान हनुमान ॥१॥

11

इस प्रकार ज्ञान ही हमारे लिए सत्य है।

नमः विदं नाने दिगुत्तमं नमः, देवा ददु नमः ।

॥ — दृष्टव्यं... ॥

[illegible]

11-12-13-14-15-16-17-18-19-20-21-22-23-24-25-26-27-28-29-30-31-32-33-34-35-36-37-38-39-40-41-42-43-44-45-46-47-48-49-50-51-52-53-54-55-56-57-58-59-60-61-62-63-64-65-66-67-68-69-70-71-72-73-74-75-76-77-78-79-80-81-82-83-84-85-86-87-88-89-90-91-92-93-94-95-96-97-98-99-100-101-102-103-104-105-106-107-108-109-110-111-112-113-114-115-116-117-118-119-120-121-122-123-124-125-126-127-128-129-130-131-132-133-134-135-136-137-138-139-140-141-142-143-144-145-146-147-148-149-150-151-152-153-154-155-156-157-158-159-160-161-162-163-164-165-166-167-168-169-170-171-172-173-174-175-176-177-178-179-180-181-182-183-184-185-186-187-188-189-190-191-192-193-194-195-196-197-198-199-200-201-202-203-204-205-206-207-208-209-210-211-212-213-214-215-216-217-218-219-220-221-222-223-224-225-226-227-228-229-230-231-232-233-234-235-236-237-238-239-240-241-242-243-244-245-246-247-248-249-250-251-252-253-254-255-256-257-258-259-260-261-262-263-264-265-266-267-268-269-270-271-272-273-274-275-276-277-278-279-280-281-282-283-284-285-286-287-288-289-290-291-292-293-294-295-296-297-298-299-300-301-302-303-304-305-306-307-308-309-310-311-312-313-314-315-316-317-318-319-320-321-322-323-324-325-326-327-328-329-330-331-332-333-334-335-336-337-338-339-340-341-342-343-344-345-346-347-348-349-350-351-352-353-354-355-356-357-358-359-360-361-362-363-364-365-366-367-368-369-370-371-372-373-374-375-376-377-378-379-380-381-382-383-384-385-386-387-388-389-390-391-392-393-394-395-396-397-398-399-400-401-402-403-404-405-406-407-408-409-410-411-412-413-414-415-416-417-418-419-420-421-422-423-424-425-426-427-428-429-430-431-432-433-434-435-436-437-438-439-440-441-442-443-444-445-446-447-448-449-450-451-452-453-454-455-456-457-458-459-460-461-462-463-464-465-466-467-468-469-470-471-472-473-474-475-476-477-478-479-480-481-482-483-484-485-486-487-488-489-490-491-492-493-494-495-496-497-498-499-500-501-502-503-504-505-506-507-508-509-510-511-512-513-514-515-516-517-518-519-520-521-522-523-524-525-526-527-528-529-530-531-532-533-534-535-536-537-538-539-540-541-542-543-544-545-546-547-548-549-550-551-552-553-554-555-556-557-558-559-560-561-562-563-564-565-566-567-568-569-570-571-572-573-574-575-576-577-578-579-580-581-582-583-584-585-586-587-588-589-590-591-592-593-594-595-596-597-598-599-600-601-602-603-604-605-606-607-608-609-610-611-612-613-614-615-616-617-618-619-620-621-622-623-624-625-626-627-628-629-630-631-632-633-634-635-636-637-638-639-640-641-642-643-644-645-646-647-648-649-650-651-652-653-654-655-656-657-658-659-660-661-662-663-664-665-666-667-668-669-670-671-672-673-674-675-676-677-678-679-680-681-682-683-684-685-686-687-688-689-690-691-692-693-694-695-696-697-698-699-700-701-702-703-704-705-706-707-708-709-710-711-712-713-714-715-716-717-718-719-720-721-722-723-724-725-726-727-728-729-730-731-732-733-734-735-736-737-738-739-740-741-742-743-744-745-746-747-748-749-750-751-752-753-754-755-756-757-758-759-760-761-762-763-764-765-766-767-768-769-770-771-772-773-774-775-776-777-778-779-780-781-782-783-784-785-786-787-788-789-790-791-792-793-794-795-796-797-798-799-800-801-802-803-804-805-806-807-808-809-810-811-812-813-814-815-816-817-818-819-820-821-822-823-824-825-826-827-828-829-830-831-832-833-834-835-836-837-838-839-840-841-842-843-844-845-846-847-848-849-850-851-852-853-854-855-856-857-858-859-860-861-862-863-864-865-866-867-868-869-870-871-872-873-874-875-876-877-878-879-880-881-882-883-884-885-886-887-888-889-890-891-892-893-894-895-896-897-898-899-900-901-902-903-904-905-906-907-908-909-910-911-912-913-914-915-916-917-918-919-920-921-922-923-924-925-926-927-928-929-930-931-932-933-934-935-936-937-938-939-940-941-942-943-944-945-946-947-948-949-950-951-952-953-954-955-956-957-958-959-960-961-962-963-964-965-966-967-968-969-970-971-972-973-974-975-976-977-978-979-980-981-982-983-984-985-986-987-988-989-990-991-992-993-994-995-996-997-998-999-1000-1001-1002-1003-1004-1005-1006-1007-1008-1009-1010-1011-1012-1013-1014-1015-1016-1017-1018-1019-1020-1021-1022-1023-1024-1025-1026-1027-1028-1029-1030-1031-1032-1033-1034-1035-1036-1037-1038-1039-1040-1041-1042-1043-1044





ग्रज के लोग सय ठग महा ।

आप ठग, ठग के उपासक, अधिक कहिये कहा ॥  
 कनक घोड़ा सो धवन रचना, दंत तनिक चखाय ।  
 पावरो है रहत सो फिरि, घाम घन बिसराय ॥  
 छाड़ि कै रज लुटत रज में, दौन दौसत अंग ।  
 और जग मुख रंग उड़िकै, चढ़न कारो रंग ॥  
 भूमि ठग द्रुम देस ठग, इत ठगे क्याम मुजान ।  
 राखै सयानप सोइय इनके, और दौन समान ॥  
 इहाँ आयत हां परत दृढ़ प्रेम को गर पास ।  
 भूति हां कोड आइयो मति, कहन नागरिदास ॥२६॥

५५

भक्ति धिन है सय लोग निगट्ट ।

आपस में लड़िये भिड़िये को, जैसे जंगो दट्ट ॥  
 निन उनको मति भ्रमत रहत है, जैसे लोनुप लट्ट ॥  
 नागरिया जग में ये उदरन, जिहि विधि नट के दट्ट ॥३०॥

५६

२६—ठाग के उपासक=भक्तों के मन को झगनेवाले भोहरा के उपा-  
 मर । कनक घोड़ा=मोने के देने घोड़ा । छाड़ि कै रज.....रज में=राजगी  
 नदकार छोड़ कर रज को पून में मोने है । कारो रंग=भोहरा का  
 रंग । घाम=कंदा ।

मेन-मन्य का क्या ही सुन्दर घर है !

३०—विगट्ट=मुकुर्य होन । जंगो दट्ट=जड़ाने छोड़े । च्यरन=  
 चरने करने है । दट्ट=दण्ड, मोड़े कानोका जिमे का मोने दट्टा करने है ।



जो मुख लेत सदा ब्रजवासी ।

। मुख सपनेह नहि पावत, जे जन हैं बैकुण्ठ-निवासी ॥  
। घर घर हैं रह्यो जितौना, जत कहत जाकी अविनासी ।  
गतिदास बिस्व नैं न्यारी, लगि गई हाथ लह सुन्यरासी ॥३३॥

८५

ब्रजवासी नैं हरि की सोभा ।

। न अघर दृषि भये त्रिभंगी, सो वा ब्रज की गोभा ॥—  
। ब्र यन धानु विविध मनोहर, गुंज पुंज अति सोहैं ।  
। ब्र मोरनि को पंज साँस पर, ब्रज जुवती मन मोहैं ॥  
। ब्र रज नीकी लगति अलक पै, ब्रज हुन फल उर माल ।  
। ब्र गडयन के पाँछे आँछे, आवत भट गज चाल ॥  
। शीघ्र साल ब्रजचंद मुहाये, चाँद और ब्रज गोप ।  
। गगरिया परनेसुरह की, ब्रज तैं यादौ आँप ॥३४॥

८६

ब्रज सम और कोउ नहि धान ।

। वा ब्रज नैं परनेसुरह के, सुधरें सुन्दर नाम ॥  
। हृष्य नाँव यह सुन्यां गर्न नैं, कान्ह कान्ह कहि दोलैं ।  
। बल केति रस भगन भये सद, आनंद निन्धु कलोलैं ॥  
। अनुदानंदन, दामोदर, नवनीत-प्रिय, दधि चोर ।  
। चोर चोर, चित चोर, बिकनियाँ, बानुर, नवल बिसोर ॥

३३—जल=जल ।

३४—गुंज=गुंजा, पुंजवा । नद नल=पल्ल रूपी । गोप=गोपः शोभा ।

३५—गाने=गाने इत्यादि के कुसुम । बनोवैं=बनोवैं उल्लेख है ।

सोत निर=निरको दक्षय पदार्थ है । बिकनियाँ=बैराग्य । दगिराने=



## मनोरथ मंजरी

### दोहा

नो नैनन की और को, कय सै है यह रुंध ।  
नैन ताप सौनलकरन, सघन तयन की धूंध ॥ ३६ ॥

कय सुन्दायन धरनि में, चरन परंगे जाय ।  
मोटि धूरि धरि सोस पर, कलु मुखह में पाय ॥ ३७ ॥

पिक केको कोकिल कुहुक, पंदर पंद अपार ।  
ऐसे नर नगि निकट, कय मिलिहो याँइ पसार ॥ ३८ ॥

कय रसोली कुडज में, हौ करिहो परदेस ।  
नगि नदि लनाहु मटलहो, बित हौगो कायेस ॥ ३९ ॥

दिय परिकर के सुखर जन, दियहो प्रेम-निशेत ।  
देखि कैरे सपटापहो, उनते दिय करि हेन ॥ ४० ॥

० गलागलाही की सवेदन रचना की है। इसका रचना-कार १००० है।

३६—यह है वह बड़े-बड़े कय टक सेली। नरन की पूर्ण-पदों को दान।

३७—कलु मुखा ने कल-पेड़ी ली हुई में जो कर कर।

३८—नरन-नरन। नरन-नरन। नरन-नरन। नरन-नरन।

३९—नरन-नरन-नरन। नरन-नरन।

11

12







तुं देवी गुह्यत हिनिमिति षोडशे चंद्र प्रकाशितो ।  
 १ श्रीदेवी कर्मा निवृत्त विनाशितो ॥ ३ ॥

२१

एव त्वं श्रीदेवीस्तुति कानंद रस भरी ।  
 नृणां प्रति दिन रत्न वादति एव उर धरा ॥  
 नंद नंद मणि जालि विदित्र विधि संविता ।  
 दिन दिन साधु साधु मनहृ लसेवितो ॥  
 दिवो वहु भोजि भोजिद सरस्वती जन मन हिये ।  
 एव सात्वत सात्वत सात्वती सांख्य सांख्य दिन दिन हिये ॥  
 १ शेष साधु साधुति सात्वति सांख्य रस भरी ।  
 २ त्वं श्रीदेवीस्तुति कानंद रस भरी ॥ ४ ॥

२२

एव त्वं श्रीदेवी स्तुति तं सत्पुत्र नंद  
 रत्न नृति जग हृद निमित्त विदुषे नंद ॥  
 प्रेम तु साधु विदु मन्त्र मन मंत्र नंद  
 विदुषे विदुषि साधु साधु साधु नंद ॥  
 न नंद नंद साधु साधु नंद नंद नंद नंद  
 नंद नंद नंद साधु साधु नंद नंद नंद नंद ॥

एव त्वं श्रीदेवी स्तुति तं सत्पुत्र नंद  
 रत्न नृति जग हृद निमित्त विदुषे नंद ॥

एव त्वं श्रीदेवी स्तुति तं सत्पुत्र नंद  
 रत्न नृति जग हृद निमित्त विदुषे नंद ॥  
 नंद नंद नंद साधु साधु नंद नंद नंद नंद



परम पावन पुलिन सरस सुच्छ स्थलनि,  
 मदन मद दवनि ससि जोन्ह छाई ॥  
 बनी अति चारु जरनारि सारी सुभग,  
 किरिन चौकोर मुख लहलहाई ।  
 भाइ भाइन उरष लेन सुन्दर सुलष,  
 यदन रनि रंग अंग अंग निकाई ॥  
 नांत पट पीत फहरात अंगनि मिथुन,  
 नडित घन नील उद्योतिनाई ।  
 लेन ओघर सुघर तालगति तान श्री,  
 जगमगत पाँक मुग्य अरुनिमाई ॥  
 ताल मिरदंग लिय संग सजनी मरीं,  
 मुरालि मोहन मधुर सुर यजाई ।  
 देहि पग थाप आलाप सुर गंग भगें,  
 भूपननि अंग छनकनि मिल्लाई ॥  
 अलक अंगुष्ठ नगजनि गहे पलटि पग,  
 जान मुसक्यान सुंदर सुहाई ।  
 परों रस भीर दंग धीर नाहिन धरें,  
 निगति अलवेलिअलि छुबि छुटाई ॥२२॥

२२—मुग्ध=मन्द । इशनि=रमन करनेवाला । मिथुन=मंगल ।  
 पीत=पीला । अरुनिमाई=जानी । मिरदंग=मृदंग, पन्नादज  
 की है । थाप=ताप । रसभीर=रसानन्द का मन्द; कन्धशिक आ  
 गम-अम्बुषों इनके घोर भी बड़े उत्तमोत्तम पद हैं । मधुर-  
 मधुर। नहीं दिये जा सके ।



भारत निर्मुक्त विचार का है। सुख सुधा दिन पौर्णिमा १९५५  
 श्री गुरुदेव गुरुदेव से मिले। बरदा काय न दुर्लभ १९५५  
 दिन सुखदा सुखदा सुखदा का। इत्येवम्। इति श्री १९५५

श्रीमान् सुभाषण दत्त साहू ।  
 मेरा रहस्य ग्रहण कर निम्नलिखित, यह किन्तु मेरा निष्कर्ष है ।  
 इसमें मेरा विश्वास है कि, यह किन्तु मेरा निष्कर्ष है ।  
 श्रीमान् सुभाषण दत्त साहू ।

[illegible]

... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..

1. The first part of the document is a list of names and titles, including "The Hon. Mr. Justice" and "The Hon. Mr. Justice".

1. ~~\_\_\_\_\_~~

\_\_\_\_\_

\_\_\_\_\_



रंग मांघरी गुन भर्यो, मनिहारी-कुल-शेष ।  
 मुदिन होत सब देखि कै, यहि पुर गांभी गांभी ॥  
 काह पै न उगाव है, तरी बुद्धि बिसात ।  
 नाम अधिक करि आयगो, येचि बडे घर मात ॥  
 मेरे मातहि लेय सां, जो नैह मांग्यो देय ।  
 ऐसो है कोट भाभिनी, (नाको) नाम प्रगट किन लेय ॥  
 सैवनहारी कान को, कहा अधिक इतराय ।  
 पोरि भूष दुरमानु को, लागन (को) वस्तु बिकाय ॥  
 पुर-पजार देखे नहां, है गरवीली नारि ।  
 व्यापारिन अपही घनो, घात न कहत बिचारि ॥  
 नोहि लै चलिसी नुप घर, कसो ब्रिद हांत उदास ।  
 नेहि लाडिनी राधेदा, (जा) सौदा तेरे पास ॥  
 यह सुनि कै छोडो गही, नुगिन नं जंग जंग ।  
 भनो जु तेरो मानिही, लै चनु अपने संग ॥  
 नै गां पोरि भातु का, घात करी मनुनाथ ।  
 गुन प्रगट कर सांझी, (नाहि) लै देनि पुताय ॥  
 हो मनिहारी दूर को, लाई राजद्वार ।  
 सैवी चुरी चुरता, कोड लेड दिनभार ॥  
 सुनि लाई विद्या ननुर, नूचनि रागर मांस ।  
 मात पुगी परितारने, दनि रह परि नर मांस ॥  
 सज्जन लाग लो सरजै, दिव दिव दासो दीन ।  
 कसो लै नुग लो रई, गरजिन रति रति दीन ॥

१। विमल-विमल कर देने जग । दोन-पदा । दोन-पदा ।  
 २। विमल-विमल कर देने जग । दोन-पदा । दोन-पदा ।  
 ३। विमल-विमल कर देने जग । दोन-पदा । दोन-पदा ।





हो आई तकि राज घर, करन प्रथम पहिचानि ।  
 भनि लोये ही बिन करो, हैसी होय दिन हानि ॥ ३  
 कासो है ते हित कियो, अथलगि परी न दृष्टि ।  
 दान कहत उरभै सखी, रची कौन विधि सृष्टि ॥  
 अथ रूपनी कर हित कहौ, भूपन जुवति समाज ।  
 सब विधि पूरन होय तौ, मो मन याँवत काज ॥  
 भनि चौकी बैठी कुंवरी, शोन्ही भुजा पसारि ।  
 काढ़ि चुपे अति सोहिना, पहिराई (मुघर) भनिहारि ॥  
 भुजा कढ़त भनिहारि दग फूल्यो मनो वसंत ।  
 मन छुटि चल्यो जु हाथ तै, घरि याँधत गुनवंत ॥  
 जवही कर सों कर गहो, सिवअरि कियो प्रताप ।  
 तन गति देषध जानि कै, मधुरे कियो अताप ॥  
 तुम लायक चूरी कुंवरी, भूति जु आई गेह ।  
 निरखि कहो प्यारी तेरो, फ्यों कांपनि है देह ॥  
 सरस्यो प्रेम हिये दली, उत्तर देइ जु कौन ।  
 रूप-अमल तापै चढ्यो, फ्यों न गहै मुख मौन ।  
 ललित कहि यह प्रेम है, कोऊ परस्यो रोग ।  
 जतन करौ तनु पेजिकै, कौन दरि संजोग ॥  
 परम गुनीलो नंदसुत, मैं देख्यो टकटोप ।  
 यही प्रिया प्रीतम बिना, ऐसो प्रेम न होय ॥  
 सोचै नार गुलाब दग, प्रिया चिबुक कर लाय ।  
 प्रेम-गहर ते काढ़ि कै, पुनि पुनि लेउ दताय ॥

मित्र-वर्तिका भाव दृष्टि होने से देख देनेलगत हो गये । देवद-वर्तिका ।  
 नर-वर्तिका । मुनी-वर्तिका । उद्योग-वर्तिका । भली नैति नैति















नमयनरविह, अनमय विना, नदि कोइ सुखा।  
अमन समन ।

५३

भावि धीगपारमन, भूँटी मर मंदा।  
बाजीगर का नेलता, मिटन न लगी बर।  
मिटन न लगी बार नून को मंगति है।  
मिदनी मानी नून, नुर्वा की लोहा है।  
मगवन ने नर अथम लाव बल नर बा बर।  
भूँटी गढ़े सुनार माय क. काले मंगि।

५४

कगरी मग न कीजिये बरनि दिनु ला हा।  
बायन है बलि का नुकी, नर जाने मर बां।  
बह जाने मर बाह बहुरि वपु धारि बाहिने।  
अगुनन सुग विवाह, सुननन सुधा बहिने।  
बन्दा यम बहाह सुनु गानन बाने।  
मगवन बरिना विर नया नमनन बहुरि।

५५

मिन्द-विहारी की कथा, प्रथम नून बहुरि।  
नानु भोज मगदा मरि, नून नमन नमन।

१-मगवन नमनन बहुरि का कथा, नमनन नमन नमन

२-मगवन नमनन बहुरि का कथा, नमनन नमन नमन

मगवन का कथा ।

३-मगवन नमनन बहुरि का कथा, नमनन नमन नमन

४-मगवन नमनन बहुरि का कथा, नमनन नमन नमन

जाको सकल एसाग, महस्तनु उपज्यो जाते ।  
 साहंकार उत्पत्ति भई, स्रुति कहैं जु नाते ॥  
 साहंकार प्रेरण भयो, सिध विधि असुरासी ।  
 भगवत स्वयं को तत्व-योद्धा अनित्य बिहारो ॥ ६ ॥

ओ जानै मानै सोई, मानै क्यों दिन जान ।  
 पौर प्रभुतां की कहा, जानै थांम अजान ॥  
 जानै थांम अजान, नपुंसक रति मुन्य माहीं ।  
 ऐसेहि नीरस पुरुष, कहा समुझै रस माहीं ॥  
 भगवत निन्य विहार, रसिक अनुनय उर जानै ।  
 गूढ़ धान नम जानि जानि, बरही ओ जानै ॥ ७ ॥

साधारण सतिता सखी, रमिह हमारी हृदय ।  
 निन्य किमोर उपासना, जुगन मंत्र दो जाय ॥  
 जुगन मंत्र दो जाय, वेद रत्तिदान को पातो ।  
 श्रीशृङ्गारन धाम, दृष्ट न्यामा नारानी ॥  
 मेन देखना मिले बिना मिथि होइ न कारज ।  
 भगवत सख सुख दानि, प्रगट भे रत्निहाचारज ॥ ८ ॥

1. *Hydrolysis of esters*  
 2. *Hydrolysis of amides*  
 3. *Hydrolysis of nitriles*  
 4. *Hydrolysis of aldehydes*  
 5. *Hydrolysis of ketones*  
 6. *Hydrolysis of alcohols*  
 7. *Hydrolysis of acids*  
 8. *Hydrolysis of bases*  
 9. *Hydrolysis of salts*  
 10. *Hydrolysis of oxides*  
 11. *Hydrolysis of peroxides*  
 12. *Hydrolysis of hydrides*  
 13. *Hydrolysis of azides*  
 14. *Hydrolysis of azides*  
 15. *Hydrolysis of azides*  
 16. *Hydrolysis of azides*  
 17. *Hydrolysis of azides*  
 18. *Hydrolysis of azides*  
 19. *Hydrolysis of azides*  
 20. *Hydrolysis of azides*  
 21. *Hydrolysis of azides*  
 22. *Hydrolysis of azides*  
 23. *Hydrolysis of azides*  
 24. *Hydrolysis of azides*  
 25. *Hydrolysis of azides*  
 26. *Hydrolysis of azides*  
 27. *Hydrolysis of azides*  
 28. *Hydrolysis of azides*  
 29. *Hydrolysis of azides*  
 30. *Hydrolysis of azides*  
 31. *Hydrolysis of azides*  
 32. *Hydrolysis of azides*  
 33. *Hydrolysis of azides*  
 34. *Hydrolysis of azides*  
 35. *Hydrolysis of azides*  
 36. *Hydrolysis of azides*  
 37. *Hydrolysis of azides*  
 38. *Hydrolysis of azides*  
 39. *Hydrolysis of azides*  
 40. *Hydrolysis of azides*  
 41. *Hydrolysis of azides*  
 42. *Hydrolysis of azides*  
 43. *Hydrolysis of azides*  
 44. *Hydrolysis of azides*  
 45. *Hydrolysis of azides*  
 46. *Hydrolysis of azides*  
 47. *Hydrolysis of azides*  
 48. *Hydrolysis of azides*  
 49. *Hydrolysis of azides*  
 50. *Hydrolysis of azides*  
 51. *Hydrolysis of azides*  
 52. *Hydrolysis of azides*  
 53. *Hydrolysis of azides*  
 54. *Hydrolysis of azides*  
 55. *Hydrolysis of azides*  
 56. *Hydrolysis of azides*  
 57. *Hydrolysis of azides*  
 58. *Hydrolysis of azides*  
 59. *Hydrolysis of azides*  
 60. *Hydrolysis of azides*  
 61. *Hydrolysis of azides*  
 62. *Hydrolysis of azides*  
 63. *Hydrolysis of azides*  
 64. *Hydrolysis of azides*  
 65. *Hydrolysis of azides*  
 66. *Hydrolysis of azides*  
 67. *Hydrolysis of azides*  
 68. *Hydrolysis of azides*  
 69. *Hydrolysis of azides*  
 70. *Hydrolysis of azides*  
 71. *Hydrolysis of azides*  
 72. *Hydrolysis of azides*  
 73. *Hydrolysis of azides*  
 74. *Hydrolysis of azides*  
 75. *Hydrolysis of azides*  
 76. *Hydrolysis of azides*  
 77. *Hydrolysis of azides*  
 78. *Hydrolysis of azides*  
 79. *Hydrolysis of azides*  
 80. *Hydrolysis of azides*  
 81. *Hydrolysis of azides*  
 82. *Hydrolysis of azides*  
 83. *Hydrolysis of azides*  
 84. *Hydrolysis of azides*  
 85. *Hydrolysis of azides*  
 86. *Hydrolysis of azides*  
 87. *Hydrolysis of azides*  
 88. *Hydrolysis of azides*  
 89. *Hydrolysis of azides*  
 90. *Hydrolysis of azides*  
 91. *Hydrolysis of azides*  
 92. *Hydrolysis of azides*  
 93. *Hydrolysis of azides*  
 94. *Hydrolysis of azides*  
 95. *Hydrolysis of azides*  
 96. *Hydrolysis of azides*  
 97. *Hydrolysis of azides*  
 98. *Hydrolysis of azides*  
 99. *Hydrolysis of azides*  
 100. *Hydrolysis of azides*

न देणा मिहान्न है ।

“—सर्वोपायः को । सर्वोपायः । योग की मर जिग रहो रे—  
“योग की मर हायन जगै, की जिग मरु होय ।”

२-अविनाशकाली=अविनाश के साथ काली हरिदाम्नी के लक्षण  
विनाशकाली=अविनाश के लक्षण काली हरिदाम्नी ।

नहि हिन्दू नहि नुरक हम, नहि जैनी जैनां।  
 सुमन संभारत रहन नित, कुंज विहारी संग।  
 कुंजविहारी संग, छवि मग दृष्टि न संग।  
 गह विलोकन केनि नाम भगवत यनि संगे।  
 श्रीसलिला मनि पाय ठुपा, संगत मुग मगरी  
 नहि बाह संगे टोह, मोह बाह संगे रंगे।

२८

जैसे मिले कुधानु के, लगे कंचन रंग।  
 दूरि करै सब कानिमा, जवहीं मिलै सुहाग।  
 जवहीं मिलै सुहाग, रीति ललिता की जगै।  
 ज्यों जल लहि समाह, फिरे करवट उतरावै।  
 भगवत रसिक, भगवत महल में राजन रंगे।  
 ज्यों रंग अजन यम, बरीनी बाहिर रंगे।

२९

चममा निग्य विहार को, दिवो विहारिनि संगे।  
 भई प्रीति परनीति उर, अलख लीनों जंगे।  
 अलख लीनों जंगे, निरलख निज पन पंगे।  
 मारद मुक मनकादि, जेनि निगमागम पंगे।

—शिवजी मरने के बाद । रंग ३०४ ३ ३०५ ३०६  
 पद्य १ अथवा २१ अथवा २२ अथवा २३

२३—कुल्लुग-कुल्लुग, अथवा २४ अथवा २५ अथवा २६  
 लीने २३ अथवा २४ अथवा २५ अथवा २६ अथवा २७

२४—देवीजी मरने के बाद । रंग ३०५ ३०६ ३०७ ३०८  
 पद्य १ अथवा २१ अथवा २२ अथवा २३ अथवा २४

भगवत यह रस रोति, प्रगट परिभूजन ससमा ।

प्रेम पियूर न खवै, भाव-रूपो विनु चसमा ॥ ११ ॥

८९

देखे हाट बजार सब, जहँ नहँ पोति यिकाय ।

लिये जयाहिर जोहरो विनु, गाहक फिरि जाय ॥

विनु गाहक फिरि जाय, बलाहक ऊपर घरमें ।

छुपन भोग बनाय, कहा धनचर के परसैं ॥

ऐसेहि फरैठ लोग, धर्म रति घरन बिसंखे ।

भगवतरसिक अनन्य, स्वाद भेदो कहूँ देखे ॥ १२ ॥

९०

सुनुभव विनु जग आंधरो, धस्तु न दीर्घ कोइ ।

मुकुर दिगाये होत कह, ज्ञानन जात न जोइ ॥

ज्ञानन जात न जोइ, सग्य यानो को कहियो ।

सुने न होइ प्रतीति, विना देखे उर इहियो ॥

बहु विधि मरदन करैं, नहीं चेतन्य होइ शय ।

भगवत रस को यान, कहा जानै विनु सनुभव ॥ १३ ॥

९१

काह दर न लरै कोइ, विद्यमान दरसाय ।

ज्यों मनियागे उरग मनि, सैं आयै लै जाय ॥

सैं आयै लै जाय, यस्तु रमिकन की ऐसे ।

निसि दिन संयत रहै, रूपन निज संपति जैसे ॥

११—पोति=राग के लोटे लोटे होने । बलाहक=वेध । ऊपर=रस ।  
 १२—जहाँ भगवत नहीं देखा होता । बलाहक=बलाहक काहरी । बरसैं=  
 पीन को बरसैं कहते । स्वाद-भेदो=रस-वस्तु के ज्ञान ।

१३—मुकुर=दर्पण । गह=गुह्य ।



भगवतरसिक अनन्य, भजौ तुन स्याम सनेही ।  
नंग दुहुन को नजौ, वृत्ति बिनु बिरनरु मेही ॥ २२ ॥

६९

जाको जैसो लखि परी, तैसी गावै सोय ।  
बोधी भगवतमिलन की, निहचय एक न होय ॥  
निहचय एक न होय, कहैं सब पृथक हमारो ।  
जुनि स्मृति भागौन, माखि गौनादिक भारी ॥  
भूपति सयनि समान लखै निजु परजा नाको ।  
जाको जैसो भाष मुगपै तैसो नाको ॥ २३ ॥

७०

हाथी देख्यो साँधन, निज मन के अनुमान ।  
कान पूँछ पग पाँछि गहि, कस्यो सयन परमान ॥  
कस्यो सयन परमान, बिटौरा रूप पैदनर ।  
भगरैं सन्न महन्त, निगम आगम पुरान यर ॥  
भगवतरसिक अनन्य दृष्टि यर कोजै साथी ।  
जिन देख्यो गुन रूप अंग द्विय में हरि हाथी ॥ २४ ॥

७१

जुनि भगवत नहिँ कल परै, कैसे धरिये धोर ।  
बढ़ी बुढ़ाती बैस यह, तिस्तोदर की पोर ॥

बिराकादि पुगलोत्त २२ वर्क । पारें=पारने हैं । हनि=विश्व महान् ।  
पारन=विश्व (विराट) यर ।

२२—बोधी=मान । भजौत=धीनमानान पुरान । पगज=पग ।

२४—पमान=पमान । बिटौरा=दोर । दृष्टि=दृश्य निरचकमद  
केन री ।



श्रीमद्वैतसिख.

श्रीमद्भगवद्गीता  
रस म्यादीं कोउ मिलै जाहि गुन दोष न बांधे ।  
न द्रष्टा होइ करौ सेवन तजि आंधे ॥ ३२ ॥

22

१. माछर, माँगने, मूने, माँदर, नांग ।  
 २. दोमक, जीव को जागा दस दुख घार ।  
 ३. ना दम दुख नांग, दास पगों कोजे घन में ।  
 ४. सन घसन धिनु मिले, रहै नार्थारज मन में ॥  
 ५. गयतरसिक अनम्य मिलन दुस्तर स्तुति मादो ।  
 ६. विहरन म्याना स्याम जहाँ नहि माँदर माँदी ॥ ३३ ॥

22

५५  
 कौया धोये हंस नहि, होर न बधरा स्थान ।  
 रासभ तें हय होर नहि, जो धोयै भगवान ॥  
 जो धोयै भगवान, सागि देगीं दुरलोकन ।  
 हरि जाये बनि दूत, गये फिरि भयो न दोषन ॥  
 भगवतरसिक, अतन्य होय नहि दाँभन नायक ।  
 गुन सुभाउ नहिं निटै, हंस संगति करि दोष ॥ ३५

फाँटे फूटकर बाधरो, जाकों लागै भूत ।  
हरै अमल तहँ आपनो, दायि परायो पुन ।

**कर अनल तह**

१. - नमो भगवते वासुदेवाय ।

३३  
५५५

*[Faint handwritten notes at the bottom of the page]*





वाचिना

मोहित मेशरी मीन मोहति सुहाग भरी,  
मोहन दिहारी मन मधुप पखो पोंद ।  
होपति उगारी नये नील पट भोनों मारी,  
मेवद, बच बारी बोटि बाली कपोंद ॥  
रुगमद बेदी भाव मचिरी, बगारि बाल,  
बालगारि मैन उरी लजन मये सुहांद ।  
नगपन बगारि मैन देखि देखि पाये दीन,  
प्यारी मेरी दानन बहस बली को बंद ॥२०॥

पद

पदम पावन बगरी को पाली ।  
नाचें पियन हृदय में लालन, मोहन बाधा बाली ॥  
कलुषय दगद होय मोहरी को, माद दिनांद बगाली ।  
अनन्य ललित निबुंज माली को, दृष्टि मीन मन माली ॥२१॥

५९

लाली लिन लाल को सुललन ।  
निर्मल दिहारी देर दिशि ऊर, लोच ललन लाल ॥  
नेह लन लललल ललन, लाल ललन ललन ।  
ललन ललन लल लल ललन, ललन ललन ललन ॥२२॥

॥ ललन ललन लल लल ललन, ललन ललन ललन, ललन ललन ललन ॥  
॥ ललन ललन लल लल ललन, ललन ललन ललन, ललन ललन ललन ॥  
॥ ललन ललन लल लल ललन, ललन ललन ललन, ललन ललन ललन ॥  
॥ ललन ललन लल लल ललन, ललन ललन ललन, ललन ललन ललन ॥

॥ ललन ललन लल लल ललन, ललन ललन ललन, ललन ललन ललन ॥  
॥ ललन ललन लल लल ललन, ललन ललन ललन, ललन ललन ललन ॥  
॥ ललन ललन लल लल ललन, ललन ललन ललन, ललन ललन ललन ॥  
॥ ललन ललन लल लल ललन, ललन ललन ललन, ललन ललन ललन ॥



कीरति किसोरी घृषमानु की दुहाई नोहि,  
लच्छ लच्छ भांति सों हठी को पच्छ करिये ॥१७॥

८५

जन दुख हरनी धरनी पति ध्यावैं तोहि,  
तेरी जग कर्नी विधि यनी यड़े धान की ।  
चिन्ता कैसा घेरा मंन डेरा सो भ्रमन फिरै,  
हदै नहि डेरा, मुधि खान की न पान की ॥  
ध्यायत यनै न मोहि तेरोई कहायत हौं,  
हठी पै रुपा की कोर राखि दया दान की ।  
औगुनन भगे हौं काहन करजोर श्रेय,  
मोगे पच्छ कर नू किसोरी घृषमानु की ॥ १८ ॥

८६

ध्यायत महेसह गनेसह धनेसह,  
दिनेसह फनेस न्यों गुनेस मन मानी है ।  
तीनों लांक जपन धिताप की हरनहार,  
नयो निदि निद मुक्ति भई दर्यानी है ॥  
कीरति दुलारी मेरव चरन धारारी धन्य,  
जाकी किन निज विधि खेदन यम्बानी है ।

पछ=पछ । पच्छ=पछ, नष्टकारी ।

१८—कर्नी=करनी, नीज । कर्नी=करनी, दर्शन की । धार=धार ।  
१९—पछ=पछ । पच्छ=पछ, नष्टकारी ।

१८—धनेस=धनेस । फनेस=फनेस । गुनेस=गुनेस ।  
१९—महेसगनेस धारि का अनुगत निजाने के विषे कवि ने राज्य की  
१९ कर 'मुनेस' कर दिया है । दर्यानी=दर्या का लड़ी रहने वाली



आर देखि होइ आँ दिखाऊँ ताहि चलि लाल,

चरन पलोटे घुपमानु श्री कुमारी के ॥ २१ ॥

१९

आहु हो गरं हो घोर सहज निफुंजन में,

कौतुक दिलोपयो नहाँ सय सुखदानी के ।

कहत यनै न मोपै शरजरज यात हठी,

कहि कहि हारे भुल्य चार वेद धानी के ॥

अयन सुन्यो न मानै, साँखिन दिग्याऊँ नाहि,

चलि दुरि मेरे साथ चरिन गुमानी के ।

लटै सुग मोटे करै मनुहार फोटे पैठ्यो,

पायन पलोटे लाल राधा नागनी के ॥ २२ ॥

२०

गति पै गगनद धारी, पग अरविन्द धारी,

हठी जति हृन्द धारी कलवन फंद पै ।

गुलफ गुविन्द धारी, मोलता पै सिन्धु धारी,

मफल सुगंध धारी मुख श्री सुगंद पै ॥

कहि पै मृगेन्द धारी, ननु लखि हृन्द धारी,

देनी पै फनिन्द धारी नानी नैदन्द पै ।

झौठ जीययंधु धारी, हाँसी सुधाकंद धारी,

कोटि कोटि चंद धारी राधे मुख चंद पै ॥ २३ ॥

१९—पेलमानो=बड़ा । गुमानी=उपदेश । मोटे=पेड़ों की । मनुहार=राधा । फोटे=फोड़ने ।

२०—कनि-हृन्द=कमलमन्द । कद=कदम्ब । गुलफ=गुलफ, हठी के लक्ष्य । मोलता=मोदिपुत्र, मोलता । सुगंद=सुगंध । जीययंधु=जीययंधु ।









# श्रीसहचरिशरण

छप्पय

कुज-बलि-माधुर्य-मिथु पूरन अथगाथां ।  
गादो को अधिकार संत प्रत अगम निवाहो ॥  
मंजापति रत्न सरस रदति-पद्मति विस्तामी ।  
भरं न है नहि हैद रचना अस रसपातो ॥

उन रसिका मंडली काभरण, संये धीस्यामा वरुण ।  
पद सित्य राधिकादास के, प्रेम पुंज सदचरिसरण ॥  
शिवोपाधि

**श्री** सहचरि शरणजी का असल नाम सखी शरणजी' था ।  
यह रही मंजुषा की परम्परा' में मदन राधिका-  
त्मजों के उत्तराधिकारी थे ।

१—विषयः ( १२ ७८१ ) में यह बताया जा रहा है कि म-  
न में रहस्य का प्रतीक होने के कारण इसे म-  
न में ही रहना चाहिए, और यह ही म-  
न ही म-  
न ही म-  
न ही म-

१—म-  
२—म-  
३—म-  
४—म-  
५—म-

- १—म-
- २—म-
- ३—म-
- ४—म-
- ५—म-



पयों का विविध छन्दों में बल्लभ किश नरा है । सरस-  
जावली में १५० मंज वा मांझ ह । बोंच में कदा कहीं पर  
दिल्ल छंद है । इसकी रचना बड़ा ही उच्च काटि की है ।  
अप्य-चमकार के साथ ही इसमें प्रेम-माधुर्य और रस-वारणी  
एक निरासी ही छुटा और मादरुता ह । इसकी भाषा भी  
रुझनूटे ढंग की है । प्रजभाषा, सङ्गोकोली, पंजाबी और  
पर्सो का उसमें बड़ा ही मधुर मिश्रण हुआ है । कोई कोई  
इ तो 'तीर तलवार और नमंचा' का काम कर जाना है ।  
मारी गाय में तो महदय-जन नग्नमंजचनों को न बोलत  
रडामरण या हृदय-हार हो बनायें, परन्तु इसे नमिक-समाज  
की गीता मान कर उसका निम्न पाठायन किश करें ।

सहचरि सरणजी की सुधा-मयी रचना की कुछ धानगी  
सिद्ध जनों के जाने प्रस्तुत की जानी है—

### नरस मंजावली

#### अङ्किल

स्याम कठोर न होहु हमारी बार को ।  
नेक दया उर ल्याय उदय करि प्यार को ॥  
सहचरि सरन अनाथ अकेलो जानि कै ।  
दियो चरन चरन प्यार पचासो जानि कै ॥१॥

५

स्याम सुपेद पेद को नार है ।  
आशिश-विलक इच्छ करनार है ॥

१—सहचरि-सहचर, नर ।

२—पेदः=पेदः नवी नोने मनेने दोष । नोन मुन-दया,



पाहि पाहि उर अन्तरजामी हरन अमंगल होके ।  
सहचर सरन विनय मुनि काँजै यागिधि कृपा अमी के ॥  
दुस्तर दुसह दुखद अविचारु विफल होहि मल जी के ।  
जिमि सिमुपान कुचालो जाँ के परे मनोरथ फोके ॥६॥

८५

हिनिपति सेत मोल पसु पच्छिन इहि विधि कय लहौगे ।  
रवि-दुहिता नुरसरिन भूमि जिमि रस उर कयँ रहौगे ॥  
पकरन भृङ्ग फाँट को जैसे नैसे कयँ गहौगे ।  
सहचरिसरन मराल मानसग मन इमि कयँ रहौगे ॥७॥

८६

माँडा मंजु पिताया प्याला पेंसा मुरशिद मेरा ।  
रमिकराजदा मैं गुनाम जिमि कामी कामिनि चेरा ॥

१—पाहि पाहि=पल कसो, रखा करो । अमंगल=अशुभ, दुख ।  
२—के=कर के । सिमुपान=बेहि का गला जो भीड़ना वा पुनेरा भाँट  
३—दुखद=दुखति । परे=...कोई=गिनुनर को लगी दुखि  
४—जैसे नैसे=जैसे नैसे । अविचारु=अविचार । फोके=फोका  
५—मल=मल । मल जी के=मल जी के ।  
६—मल=मल । मल जी के=मल जी के ।  
७—मल=मल । मल जी के=मल जी के ।

१—हिनिपति=पति । रवि-दुहिता=रवि-दुहिता । नुरसरिन=नुरसरिन ।  
२—जिमि मंजु, जो निजम मे है । रामे सहयोग परे जाने है ।

३—मुरशिद=मुक्त प्याला । रमिकराजदा=रमिकराजदा के गला ।  
४—रामिनि प्याली भाँट के कनुनाम ममना-मुनर 'राम' के छंद से



॥ मं धाय न्य सौ मैकं हिन को नेज विद्रावै ।  
 ॥ एग डोरे जुड़यो धर पछी टांके टोक लगार्ये ॥  
 ॥ नयुर सचिदानंदन शंभ शंभ हृदि हनुका नरम खरावै ॥  
 ॥ स्थान नदीय इलाज करै जय नय धायन नयुरार्ये ॥११॥

दाँती पाग चट्टिका ना पर, तुम मरि रह्यो है ।  
 पर मिर पैंच माल उर, दाँती पट को चट्टक लखा है ॥  
 दाँते नैन नैन मर दाँते, दैन विनाद मंहा है ।  
 दाँते की दाँती भाँती एगि, दाँती रहा कता है ॥१२॥



गङ्गा गौतमिनी श्री मञ्जुलामाया, त्वाम् उदकम्तो वीर्यम् ।  
 चन्द्राग्रदारी पुनि ना पर, दम्बिन कलंगी हीरा ॥  
 नग पर जड़े कड़े कर सुन्दर, लड़े पौद पट पीरा ।  
 गङ्गाविरह रति रा दिन नालन मृदु बालन मुख पीरा ॥३८॥

११—प्रिय=प्रेम । अविद्वज्जन्=विद्वान्, अविद्वान् । अविद्वान्=अविद्वान् ।  
अविद्वान् या अविद्वान् । अविद्वान्=अविद्वान् अविद्वान् ।

॥ मनुष्यो ज्ञानं विना न भवति ॥

‘‘सोम वी मर दोर दिऐली, मर वेर मंजूर्यत होय .’’

१३—सुर्ग=सोनी । पर=सीसाभर । मैमार=मनोरंजक के द्वारा रच-  
नेवाला विभाग । बहिन की दोरी झंडी=पत्नी के निकट स्पर्श का प्रतीक  
यदि । बोरी दान जमाई=एक दूध बेड़ी से मल्लार में कड़ा देवने की तरह  
करना है ।

११—तावमोऽयमसी दह, तिमिरं मृष्टिं वा कथं रोमा ॥ २॥  
१२—योगः प्रभुः वा योगः ।

॥ ! विरह हो तो ऐसा ॥





सुग नृदु मंजु महा खूबो, यह गाय गुनाय हरौगे ।  
चरम चार नरगिस्त अलिमस्तां उर संकोच भरौगे ॥  
एसेदार जुगल जुलफैं, छुपि सम्भुन छैन छरौगे ।  
सहचरिखरन संग तैं गुनसन नैर सिनाय करौगे ॥१७३

८४

नतयज तितकललाट पटल, पट अटल मनह सटक सो ।  
नदन विजय अनु करत पुरट मय कटि किंकिनी कटक सो ॥  
सहचरिखरन नरनि नैनेया नट, नटपर मुकुट लटक सो ।  
चिन सुरमी मुरली धुनि गायन आवत चटक मटक सो ॥१७४

८५

कय नकरार करी मनि पारों, लगौ लगन चित चंगी ।  
शौचन प्रान जुगल जोरी के, जगन आहिरा अंगी ॥  
नतय नहीं फुनिशौ ने एम, इश्क दिलां दे मंगी ।  
सहचरिखरन रसिक सुमतां पर, महिरदान रम रंगी ॥१७५

८६

कमत चढ़ी भृकुटी पर फरकैं, फरकैं दग रतनारे ।  
नृदु मुसपगन पैकीली पांकी, पैन बिनोद सुधारे ॥

१७—नरगिस्त=एक पत्नी जिसकी उपमा प्रारम्भी के बरि छौंके से  
ले करी है । अलि मस्तां=दमपाये भीरे ।

१८—नरार=चढ़ाई भगडा । अंगी=पट कले, सरकलन । फुनिशौ  
=नष्ट होके, निह पुरखों से । इश्क दिलां=प्रेमिलों के । सुमतां पर=  
समतां से धेरे ।

१९—कमत चढ़ी=चढ़ी से चढ़ी हुई । रतनारं=पर । दंग=दो, दो,  
दग । पांकी=पल्ल । शकैं=इकडे, बस दये ।



## अडित्त

हृत् दिवस हरिदान रतिक रत्न मूल है ।  
 जानि सरन सवि सरन दुख अनुकूल है ॥  
 पान करन हर भजन भेन स्वच्छंद को ।  
 संत प्रसन्नित सुखन दुखन ननि मंद को ॥२४॥

## दोहा

यह संतापनि मंदु रा. हरन निनीलुत भजन ॥  
 रलिनन हृदय मंगु वरि. सखन प्रति प्रभिरान ॥२५॥

## ललित प्रकाश

## गुरु-व्यास-जिना

## रोला

आनदीर मंगीर दिन सारखन नुतिपर ।  
 उमर जगदीश नर नमुर रागी प्रमोद कर ॥  
 गुन अनुकूल दखन हृत् यन निधिपन माही ।  
 समर ली मनु रागि सावि जल ही निर नाही ॥२६॥

५४

११—हृत् दिवस ।

१२—निनीलुत भजन ।

१३—संतापनि—मंगु वरि. सखन प्रति प्रभिरान ।  
 १४—यह संतापनि मंदु रा. हरन निनीलुत भजन ।  
 १५—रलिनन हृदय मंगु वरि. सखन प्रति प्रभिरान ।

१६—आनदीर मंगीर दिन सारखन नुतिपर ।

१७—उमर जगदीश नर नमुर रागी प्रमोद कर ।  
 १८—गुन अनुकूल दखन हृत् यन निधिपन माही ।  
 १९—समर ली मनु रागि सावि जल ही निर नाही ।



धौगुरु अन्त प्रसन्न धन्य धनवास दिसेखो ।  
 जनसठि सुठि जेहि आयु स्याम स्यामा दुखे देखो ॥  
 सरसदेव रनि सरस गौड़ कुल कल जनु भुंगो ।  
 गुरु करुता धनवास यहत्तर आयु असंगो ॥३०॥

५

गुरु पाछे दुत्तोस घरस धनराज दिराजे ।  
 राम केलि कौनूह गाय अनंद नित साजे ॥  
 नरहरि देव सनाढ्य गुढ़ा को प्रथम पसेये ।  
 पुनि आरन्य अनादि अनुरम अनंद हेरो ॥३१॥

५

रसिकदेव रसभान सनाढ्य पान प्रेम सौ ।  
 जनन दुंदेलाखंड विपिन पुनि भजन नेम सौ ॥  
 कौनू शिष्य अनेक एक नै एक समायक ।  
 नित विच मिथुन प्रमिद भिद सुनि मव विधि लायक ॥३२॥

५

३०—दुनि=दुखि । अनिरम=अनिरम से प्रसन्न । समता=सिरत ।

३१—अनादि=अनादि से साधन विविध से है । कौनू=कौनू, कोनू । गुरु=गुरु अथवा दुंदेलाखंड से है । समता=सम अथवा न ।

३२—सौ=परिपुष्ट, हठ । समायक=साधन से विविध । मिथुन=मोः  
 लब्ध करन शिष्य हो-ये, - भोजनविहितोपदेशी और भोजनान्तर  
 रत्न ।



# श्रीगुरुमंजरीदास



कृष्ण

सुगत मेन सर्वस्य भजन भाजन नन शहनित ।

मज्ज दासिन दो करन करन भजन दो सबदित ॥

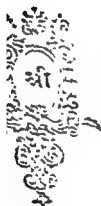
राधारमन लडाव रहत नाही रंगराते ।

धोभागीत सरप इष्टमध्यन रत्ननाते ॥

पदरचना पावन हिरे, देस देस भद्र भंजरी ।

धोमल्लजी गुरुमंजरीदास रूपर गुरुमंजरी ॥

गो. गणेशदास



गुरुमंजरीदासजी का असल नाम श्री

गोस्वामी मल्लजी था। इनका जन्म

ज्येष्ठ कृष्ण ८, संवत् १८८४ को कुन्दायन

में हुआ। यह राधारमन गोस्वामी

धोमल्लदासजी के पुत्र थे। इनकी

माता का नाम धोमल्लदेवी था।

गोस्वामी मल्लदासजी अधिकतर

फर्ग्युसोदाद में रहते थे। संवत् १९०१ में

श्री मल्लजी का विवाह फर्ग्युसोदाद में जगन्नाथ पुरोहित

१—श्रीगणेशदास गुरुमंजरी की कवि-कृपा में इनका नाम—

न वैष्णव नामधु [ संवत् १९४० ]

मल्लिक—श्रीगणेशदास गुरुमंजरी





होई कवला में, मासहोई कवला १, सं० १६५३ को दिन  
१२ एते आर सोमोके धाम दधार गये ।

अंगुलीको मलमात्र का मलमात्र बड़ा ही मरन, निरपरा  
नपुर था । अंध को कान में सेकुनाइ भी नहीं था ।  
रहानादिनों में आर की कलम निहा थी । अहमात्रा के  
आर हमने कहा थे कि जिनका कहिए । कानमें रहने  
जाने का बड़ा बड़ा नियम था । एक दिन माहरी साहब  
जिनका कहिए । से दमुर खरने का धारन इस प्रकार  
म—होई कविता में कपान कुरं मनेक करके कविता को  
१, को नमान गन मने । श्रीगुरुनानकदास एर आर को  
ने कविता थी । कानमें जिनका अनेकालेन जिनका, मर  
एर मने में मना दिया । एही में आर कानका नाम कुर-  
नी कानमें थे । कानमें श्रीगुरुनानकदास, एहने एर कान बड़ा-  
न हीन कानका एही को कानका को है । एर कानकी एही-  
मने है । एहने एही में कानका और कानका को कानका  
— है । श्रीगुरुनानकदास एर कोने कानका जिनका को है —

एर

कानका कानकी है । कानका एही कानका कानकी ।  
कानका कानका कानकी कानकी, कानकी कानका कानकी ।  
कानका कानकी कानका कानकी, कानकी कानका कानकी ।  
कानका कानकी कानका कानकी, कानकी कानका कानकी ।

कानका कानकी कानका कानकी, कानकी कानका कानकी ।  
कानका कानकी कानका कानकी, कानकी कानका कानकी ।  
कानका कानकी कानका कानकी, कानकी कानका कानकी ।



## नलार

हमारे धन क्याना इ को नाम ।  
 आका रदन निगन मोहन, नंदनैदन धनस्याम ॥  
 मतिदिन नय नयनदा नाधुरो, धनन आठो आम ।  
 गुननंदरि नय कुंज निवास, धीहृदयन धाम ॥ ३८

## मैथ

वेरो भूवन में रंग दानै, सुर नरनै,  
 धोराधा प्यागी नागरी ।  
 दिने गलवाही मुदिन मन नाहीं,  
 मोहन भूने संग नवन सुहागरी ॥  
 दिहीते कुमायनि गावनि लसिजन,  
 निरखनि हृदि दगलनि कतुरागरी ।  
 गुननंदरि छंदरि कुतुमन को,  
 दारन जुगल ननु जानि सुन लागरी ॥ ४९

## विहान

हूनन दानन आलां आठ कैने होय रो ।  
 पानरद वारो लोहो आठो नग जोय रो ॥  
 पद उरमाय हेनो देखिन नारि रो :  
 सुरमानन निल द्विद कुब दारि रो ॥  
 दानन को दानन में लिख लिख देख रो ।  
 दायन बलैया मेरी देर देर लेय रो ॥

१-दिने=दिवस । दानन=दानने है ।

२-पानो आठो=पानन रोके आठ है । नो=नंदन है । देखने रो । दानन=दान ।





















जन्मार्थ, तुनसों मिलिये को कहा कहा जुगति न कोनी ।  
 विचारों बहुत काम न आई, उनटि मरै विधि दोनी ॥  
 गिरिजुही यह दुनिन को मुख, धाड़ मयनि को जानी ।  
 सब सोचि विचारि निकारी, जुगति अचूक न गौनी ॥  
 सपरिहरि मन है तुव पद में लाक प्रिगुनता लीनी ।  
 गिरिंद निघटक विहरंगी, अधर मुखान्न भीनी ॥ १७ ॥

८९

गियारे, क्यों तुम आवन पाद ?

हम सकल काज प्रग पे, मय निटन भांग के म्याद ॥  
 जानों तुम्हारी पाद नई नहिं, नदलों हम मय लायक ॥  
 तुम्हारी पाद होतरी चित में, चुम्बन मदन के मायक ॥  
 हम सब के सब कामन के अरि, हम यह निहने जानै ।  
 गिरिंद नौ क्यों मय तुम्हारे प्रेमहि जग में मानै ॥ १८ ॥

९०

रहै क्यों एक म्यान अमि दोष ।

विष नैनन में हरि रम लायो, तिहि क्यों भाई दोष ?

१०—विषयो=धन, कार्य, एक मी । प्रिगुनता=पण, रज, धन  
 लीनी=लीनी हुई ।

११—हम के मायक=हम कामन; निघटक को शब्दार्थ । गिरिंद=गिरि  
 नंद । नौ मय=नौ मय में मय लायक, जो मय लायक को  
 मय को क्यों एक मय मान रहे हैं । क्यों एक मय में हो मय  
 न मानें ?

१२—विष=विषय । मय=मय नहिं शब्दार्थ । दोष=

## सचैषा

कोमल ओ मधुफल मिले,  
 हिय बेधि बिधे ! दुख-सार पिरोये ।  
 देस दरिद्र दुखी फिर ॥  
 गुम साहू पै कौन मसा मर्दि मोये ॥  
 विप्र सुदामा को हेरि, इतों  
 अपना जेन जानि दयानिधि, गोये ।  
 भागन भागन हेरि, किन,  
 कल्या तजि के कल्यानिधि मोये ॥७६॥



सुखकारक, दारक दारिद्र के,  
 औ निवारक ओ मय पन्दन के ।  
 एल-झाक, जारक जानन के,  
 पुनि दारक ओ दुख छन्दन के ॥  
 मय हारक, कारक कात्र मरै,  
 सुखसारक प्रेम के वन्दन के ।  
 रहू रे मन, नू पद-पंकज में,  
 श्रीमानु-मुता नैद-मन्दन के ॥७७॥

आशुप्यार्पणमस्तु

७७—पिरोये=गुंथे । बेधे=बुर हूँ । भागन=गड, बरबाद ।

७८—दारक=दिशारकः पीड़ने पाड़ने वाले, हरने वाले । निवारक=रुख कर, काटने वाले । छन्दन=घात या क्षय कर देने वाले । मय पन्दन=मय पान करने । ज्यारक=कै-जाने करने या दिशान कराने वाले ।

# उन पुस्तकों के नाम, जिनकी इस ग्रन्थ के संकलन करने में प्रसंगानुसार चर्चा की गयी है

- १—सूरसागर ( नथल कितोर प्रेस, लाहौर )
- २—सूरसागर—प्रा० राधाकृष्णदास
- ३—सूरसागर—प्रा० देवीप्रसाद शर्मा, ए.
- ४—सूरसागर—प्रा० राधाकृष्णदास
- ५—सूरसागर—प्रा० राधाकृष्णदास
- ६—सूरसागर—प्रा० राधाकृष्णदास
- ७—सूरसागर—प्रा० राधाकृष्णदास
- ८—सूरसागर—प्रा० राधाकृष्णदास
- ९—सूरसागर—प्रा० राधाकृष्णदास
- १०—सूरसागर—प्रा० राधाकृष्णदास
- ११—सूरसागर—प्रा० राधाकृष्णदास
- १२—सूरसागर—प्रा० राधाकृष्णदास
- १३—सूरसागर—प्रा० राधाकृष्णदास
- १४—सूरसागर—प्रा० राधाकृष्णदास
- १५—सूरसागर—प्रा० राधाकृष्णदास
- १६—सूरसागर—प्रा० राधाकृष्णदास
- १७—सूरसागर—प्रा० राधाकृष्णदास
- १८—सूरसागर—प्रा० राधाकृष्णदास
- १९—सूरसागर—प्रा० राधाकृष्णदास
- २०—सूरसागर—प्रा० राधाकृष्णदास



१८—विहारो की मतमरे ( भूमिका और सजीवन भाष्य )  
पं० पद्ममिह

१९—विहारो दोषिनी—बाला भगवान्दोन

२०—देव और विहारी—पं० कृष्ण विहारो मिश्र बी. ए.

२१—भुव ग्रंथायला—( भारत जीवन )

२२—सुज्ञान रसव्यास—( भारत जीवन )

२३—प्रेमपादिका—( रत्नगान कृत )—पं० किशोरीबार्ज  
गोस्वामी

२४—रागरत्नाकर ( पेद्रुदेशर प्रेम, बन्धु )

२५—सुमोच्छेदक—पं० गोपुराप्रसाद शर्मा

२६—निम्पार्क प्रभा—महात्मा हंसदासजी

२७—भगवत रसिक की पानी—महात्मा भगवान्दास जी

२८—मरस मंजावली और ललित प्रकाश ( महचरिशरण कृत )

२९—सुज्ञान सागर ( आनन्दधन कृत )—भा० हरिचन्द्र

३०—विरहलीला ( आनन्दधन कृत )—भा० काशीप्रसाद  
जायसवाल

३१—लघुरस कलिका—ललितकिशोरी

३२—प्रज्ञविहार—नारायण स्वामी

३३—भा० हरिचन्द्र का जीवन चरित—भा० राधाकृष्ण दास

३४—भा० हरिचन्द्र का ग्रंथायली—( ब्रह्मविलास प्रेम,  
बांकीपुर )

३५—हृदयतरंग ( सत्यनारायण कृत ) नामकी प्रचारिणी,  
आगरा

३६—धीराधा तुषा शनक ( इठोहृत )

३७—गदाधर भट्ट की पानी ( हस्तलिखित )

- ३२—स्वामी हरिदत्त हृत विद्वान्ता पद तथा केबिनाला  
( हस्तनिर्णित )
- ३३—द्वि चतुर्गामी और धौनिजी के विद्वान्ता पद  
( हस्तनिर्णित )
- ४०—सुरदास मदन मोहन के कुटुम्बर पद ( हस्तनिर्णित )
- ४१—ज्यासजी का पानी ( हस्तनिर्णित )
- ४२—पुगल शतक धौनिहृ हृत ( हस्तनिर्णित )
- ४३—द्वि लोलादे—द्वि कुन्दाचनदास हृत ( हस्तनिर्णित )
- ४४—धौनिहृदासजी के पद ( हस्तनिर्णित )
- ४५—धौनिहृ मंजरिदास हृत पदावली और पत्र—गो०  
राधाचरण
- ४६—हिन्दी के सुप्रसिद्ध गेजरी के एक-सन्दर्भों कुटुम्बर गेजरी  
समालोचनाएँ आदि ।



---

याचू सूरजप्रसाद खन्ना के प्रबन्ध से हिन्दी  
साहित्य प्रेस, प्रयाग में छपा

---

